के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी

दीवान-ए-मयंक

दीवान-ए-मयंक

शायर– के॰ के॰ सिंह "मयंक" अकबराबादी

संकलन एवम् हिन्दी रूपान्तर

श्रीमती सरोज सिंह

साधना पॉकेट बुक्स

दिल्ली-110007

हमारा गौरवशाली प्रकाशन :

के॰ के॰ सिंह "मयंक" का

गुलदस्ता

मूल्य : 30/-

साधना पॉकेट बुक्स

पुस्तक का नाम	–	दीवान-ए-मयंक
हिन्दी रूपान्तर एवंम् संकलन	–	श्रीमती सरोज सिंह
कापीराइट	–	शायर के आधीन
प्रकाशक	–	साधना पॉकेट बुक्स, ३९, यू॰ ए॰ बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
फोन	–	३९६६७१५, ३९१४१६१
मूल्य	–	४०/-
मूल्य लाइब्रेरी संस्करण	–	२००/-
संस्करण	–	२००२
लेजर	–	अमन कम्प्यूटर्स. फोन : ७४६२६६९
Printed at :	–	SUDHA OFFSET PRESS

अपने बारे में

इस मजमुआ से पहले मेरे १५ महमुए क़लाम मंज़रे आम पर आ चुके हैं जिनमें मैंने हर सिन्फ़े सुख़न पर तबाआ आज़माई की है। मेरी कुल्यात में भजन, नऑत, हम्द, मनक़बत, सलाम, नज़में, गीत, ग़ज़लें, वग़ैरह शामिल हैं। जहाँ तक मेरी शायरी का सवाल है, इस बारे में अर्ज़ करना चाहूँगा कि मैं तालिबइल्मी के दौर से ही हर सिन्फ़े सुख़न की तरफ़ माइल हो गया और मेरा यह शौक़ रफ़ता-रफ़ता जनून की हदों तक आ पहुँचा। रेलवे की नौकरी में आने के बाद मैं एक जगह पर मुक़ीम नहीं रह सका। मैं जहाँ भी गया वहाँ के अदबी हलक़ों से वाबसता हो गया और वहाँ के आला क़दर उस्तादों से मश्वरा लेने लगा क्योंकि मेरा मानना है कि चाहे जो कोई भी फ़न हो वह उस्तादों के मश्वरा के बग़ैर पाये तकमील तक नहीं पहुँच सकता। मेरे इस नज़रिये ने रफ़ता-रफ़ता मेरे कलाम को पोख़तगी, सलासतसय, नग़मगी, फ़साहत और दीगर मौज़ूआत से रूशनास कराया। जिन हज़रात का मुझ पर दस्ते करम रहा उनके इस्माएगरामी हैं जनाब फ़ैज रतलामी, जनाब बिसमिल नक़शबन्दी और जनाब असीर बुरहानपुरी।

गोरखपुर आकर मैं उस्ताद महशर बरेलवी साहब से मशवरअे सुख़न लेने लगा जिसने मेरे कलाम को ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत तर बना दिया। मेरी नज़र में शायरी एक फ़ितरी जज़बा है। 'ख़ुदा जब तक न चाहे आदमी से कुछ नहीं होता'।

मेरे मजमुए ब उनवान 'गुलदस्ता' के शाया होने के बाद भी मेरे पास ग़ज़लों का एक अम्बार मौजूद था जिसको मेरी शरीके हयात श्रीमती सरोज सिंह ने एकजा (संकलित) किया। मोहतरम महशर साहब से सलाह मश्वरह के बाद "दीवान ए मयंक", उर्दू हरफे तहज्जी के एतबार से तरतीब देकर दीवान की शक्ल में शाया करने का फ़ैसला किया।

मेरे मजमुआ "दीवान ए मयंक" हाज़िरे ख़िदमत है मेरी शायरी क्या है यह फ़ैसला कारयीन पर छोड़ता हूँ।

—के॰ के॰ सिंह "मयंक"

मुख्य दावा अधिकारी,

एन॰ इ॰ रेलवे, गोरखपुर

फोन कार्यालय: २००८४५, घर २०४०९१

मयंक और उनकी शायरी के बारे में अदीबों की राय

☞ 'मयंक' साहब की ग़ज़लें आईना साज़ी करती हैं और लोगों की बसीरत को ताबानी अता करती हैं।

—प्रोफ़ेसर महमूद एलाही

☞ के० के० 'मयंक' हमारे उन फ़नकारों में हैं जिन्हें हम बजातौर पर ग़ज़ल की सालेह रवायात के मुहाफ़िज़ और मेमार के नाम से ताबीर कर सकते हैं।

—प्रोफ़ेसर मलिक ज़ादा मंज़ूर अहमद

☞ 'मयंक' ग़ज़ल के फ़न में भी रमूज़ शनास हैं और वह इस से भी वाकिफ़ हैं कि ग़ज़ल की ज़बान रम्ज़ियत-व-इमाइयत की हामिल होती है और इसका हर लफ़्ज गंजीनए मानी का तिलिस्म होता है।

—प्रोफ़ेसर अहमर लारी

☞ 'मयंक' मोहब्बत की ज़ुबान का शायर.....

—बेकल उत्साही

☞ 'मयंक' बेहद ज़ूदगो हैं। अल्फ़ाज के इन्तख़ाब से ख़यालात की गिरिफ़्त तक उनकी सनाई और मश्शाकी उनके कलाम से ज़ाहिर होती है।

—फ़सीह अकमल

☞ 'मयंक' अपने मेयारी-कलाम, और अपने अन्दाज़े फ़िक्र की बदौलत हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में चाहा और सुना जाने वाला मक़बूल शायर है।

— बशीर बद्र (पदम् श्री)

☞ 'मयंक' साहब के शेरों में गहराई और गीराई, सलासत, रवानी और लफ़्ज़ों का सही महले इस्तेमाल बख़ूबी पाया जाता है। शेर तो इतने सलीस और ज़बान और बयान से आरास्ता होते

हैं कि कागज़ पे आने के बाद भी अपनी ख़ूबियां बिखेरते रहते हैं।

–महशर बरेलवी

☞ मुल्क के बिगड़े और बदले हुए हालात में भी कुछ ऐसी शख़सियतें हैं जो क़ौम के लिए फ़िक्र मंद हैं। ऐसे ही लोगों में एक शख़सियत है जो चांद की मनिन्द अपनी चांदनी बिखेर रही है। मेरी मुराद जनाब के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी से है जिनका नाम भी रोशन है और वो उफ़के शायरी पर अपने कलाम के ज़रिऐ चांद की तरह अपनी चांदनी बिखेर रहे हैं।

–आज़ाद इरमी, कोटा

☞ 'मयंक' साहब जो कुछ अपनी खुली आंखों से देखते हैं उसे अपने शयराना ज़ज्बों में समो कर ग़ज़ल की ज़बान दे देते हैं। उनकी ज़बान न तो फारसी आमेज़ उर्दू है, न संस्कृत आमेज़ हिन्दी बल्कि एक सीधी-साधी और आम बोल चाल की ज़बान है जो दिल से निकलती है और दिल में उतरती है।

–वाली आसी

☞ जनाब 'मयंक' अकबराबादी अपनी लाजवाब और बेहतरीन ग़ज़लों के लिए मुल्क के कोने-कोने में जाने जाते हैं। ये हमारी ख़ुशनसीबा है कि हाल में ही उनका खूबसूरत दीवान छपकर मंजरेआम पे आया है जो उनकी बेहतरीन शायरी का सबूत है। जिस तरह ग़ालिब का दीवान आजतक सुरमये अहले नज़र है मुझे यक़ीन है कि "दीवाने मयंक" भी अपने अन्दर वही हुस्नों जमाल और वफ़ा का बेपनाह ख़ज़ाना रखता है जो यक़ीनन मक्बूलें आमों ख़्वास होगा।

–डा० मुजाहिद हुसने हुसैनी

☞ मैंने 'मयंक' साहब के मजमुआ "दीवाने मयंक" का मोतआला किया। ये उर्दू अदब में यक़ीनन अपनी मख़सूस पहचान बनायेगा। मयंक साहब ने शायरी की जो ऊचाई इतने कम वक़्त में हासिल की है वो बहुत कम लोगों को मिलती है। मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा यक़ीन है कि ये दीवान उर्दू अदब में एक अलग पहचान बनायेगा।

–गनेश बिहारी "तर्ज़ लखनवी"

☞ 'मयंक' साहब उर्दू दोस्त और उर्दू गज़ल की शायरी के रसिया हैं। उन्होंने शायरों और अदीबों की सोहबतों से अपनी शायरी में नई बरकतें पैदा की हैं। उनकी शायरी की जुबान वो जुबान है जो हिन्दी भी है और उर्दू भी। शायद हफीज़ जालंधरी ने इसी गंगा जमुनी ज़बान के बारे में कहा था "हफीज़ अपनी बोली मुहब्बत की बोली, न उर्दू न हिन्दी, न हिन्दोस्तानी। **–निदा फ़ाज़ली**

के॰ के॰ सिंह 'मयंक' अकबराबादी की शायरी एक ऐसा पैग़ाम है जो पूरी इन्सानियत के नाम है। ऐसी ही शायरी को आफ़ाक़ी शायर कहा जाता है जो किसी को बहुत मुश्किल से हासिल होती है।

"इनके सीने में धड़कता है हर इंसान का दिल"। सोज़ोगुदाज़, बरजस्तगी, रवानी, असर, फ़िक्र की गहरायी, हक़ीक़त निगारी, मयंक अकबराबादी के कलाम की ख़ुसुस्यित हैं इनको जुबान पर बड़ी कुदरत हासिल है और फन्नी महारत के साथ कलाम में शगुफ़्तगी और ज़ोरे बयान का जादू हर शेर में जागता हुआ नज़र आता है जो खुद मुसलसल एक पैग़ामे मुहब्बत है।

उर्दू जुबान में एक अर्से से तकरीबन आधी सदी से भी ज़्यादा से दीवान के नाम से किसी शायर का मजमुआ मँजरे आम पर नहीं आया है। इस कमी को मयंक अकबराबादी ने पूरा किया और अपना दीवान शअया किया मैं मयंक अकबराबादी की तवीलउम्री, तरक़्क़ी और खुशहाली के लिए दुआगों हूँ ताकि जुबान और अदब बहुत दिनों तक इनसे फ़ैज़ियाब रहे।

–बज़मी अब्बासी, चिरियाकोटी

सैक्टर-८, रेडियो कालोनी,

इन्दिरा नगर, लखनऊ

मयंक की शख़सियत और शायरी

जनाब के० के सिंह बतख़ल्लुस 'मयंक' अकबराबादी की पैदाइश सन् १९४४ ई० में उत्तर प्रदेश के ज़िला मथुरा में हुई लेकिन कुछ अर्से बाद आगरा (अकबराबाद) तशरीफ़ ले आये और वहीं उन्होंने आला तालीम हासिल की। आप एक आला ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते हैं। जिसमें बेशतर अफ़राद आला अफ़सर हुए या हैं। बृज भूमि से तअल्लुक़ होने की वजह से बचपन ही से कवितायें, गीत, ग़ज़ल, वग़ैरह लिखने का शौक़ रहा। एक आला अफ़सर होने की वजह से हिन्दुस्तान के मुख़तलिफ़ सूबों और शहरों में सरकारी मुलाज़मत की वजह से क़्याम रहा। इस दौरान सन् १९८० ई० में रतलाम पहुँचने के बाद उर्दू शायरी से लगाव पैदा हुआ और तब से आज तक अदब की ख़िदमत कर रहें हैं। पिछले बाइस वर्षो में भजन, हम्द, नआत, मनक़बत, सलाम और ग़ज़ल पर आपने तबाअ आज़माई की और अपनी मुसलसल मशक़्क़त की बदौलत मुमताज़ शायरों की सफ़ में नुमाया जगह बना ली। इस दरम्यान इनके एक दर्ज़न से ज़यादा मजमुए कलाम मंज़रे आम तक आये। मयंक साहब का कलाम फ़िल्म, दूरदर्शन, रेडियों, कैसेट और रेकार्डिग के ज़रिये भी अवाम् तक पहुँच रहा है। आप मुशायरे के मुतरन्निम और ख़ुश गुलू शायर भी हैं। आप के कलाम को हिन्दुस्तान के जाने माने गुलूकारों जैसे अहमद हुसेन, मोहम्मद हुसेन, राजेन्द्र, नीना मेहता, राम कुमार शंकर, सुधीर नरायन, राकेश श्रीवास्तव, आजहानी शंकर शम्भू, शमीम-नईम अजमेरी, सईद फ़रीद साबरी, आजहानी अज़ीज़ नाज़ाँ, जनाब पंकज उदास, रूप कुमार राठौर वगैरह ने साज़ और आवाज़ के साथ दुनिया के गोशे-गोशे तक पहुँचाया है। और श्रीमती संगीतिका त्रिपाठी, जसविंदर सिंह, और सुधीर नरायन ने अपनी आवाज़, कैसेट, सी० डी० आदि के जरिये हिन्दुस्तान के बाहर भी दूसरे मुलकों में इनके कलाम को पहुँचाया जिसको सभी ख़वासोआम ने बहुत-बहुत पंसद किया।

'मयंक' साहब को ग़ज़ल के उसलूब और आहंग की बहुत अच्छी वाक़फ़ियत है। इन्हें उरूज़ की अच्छी ख़ासी जानकारी भी है। इनके शेरो में गहराई, गीराई सलासत, रवानी, बन्दिश की चुस्ती, लफ़्जों का सही महले इस्तेमाल बख़ूबी पाया जाता है। शेर तो इतने सलीस ज़बान

व बयान से आरास्ता होते हैं कि काग़ज़ पर आने के बाद भी अपनी ख़ूबिया बिखेरते रहते हैं।

'मयंक' साहब के मजमुए कलाम 'गुलदस्ता' शाया होने के बाद भी ग़ज़लों का एक गैर मतूबा जख़ीरा 'मयंक' साहब की तहवील में था। सख़्त ग़ौरो ख़ास के बाद सोचा गया कि एक मुद्दत से किसी शायर का मजमुआ "दीवान" की शक्ल में शाया होकर मंज़रे आम पर नहीं आया है, तो क्यों न यह मजमुआ "दीवाने मयंक" की शक्ल में शाया किया जाये। दीवान उस मजमुए कलाम को कहते हैं जिसमें हर्फे तहज्जी यानि फ़ारसी वर्णमाला के "अलिफ़" से "ये" तक रदीफ़वार शायर की ग़ज़लें तरतीब दी जाती है। आज तक जितने दीवान शाया हुए हैं, उनमें यही तरतीब देखी गई है। किसी भी शायर ने उर्दू हरूफ़ों जो 'अलीफ़' से 'ये' तक वर्णमाला में शामिल हैं जैसे डाल, ज़ाल, अड़े, हमज़ा वगैरह पर अपनी ग़ज़लें दीवान में शामिल नहीं की है। मयंक साहब ने उन उर्दू हरूफ़ों पे भी दीवान में सिलसिलेवार रदीफ़ के साथ गज़लें कहीं हैं जो शमिलें दीवान है।

दीवान, वही शायर शाया कराने की जुर्रत करता है जिसको फ़ने अरूज़ की अच्छी ख़ासी वाक़फ़ियत हो और उसको बहुत सी बहरों के इस्तेमाल पर अच्छी पकड़ हो यह ख़ूबी मयंक साहब में है और उन्होंने हर उस बहर में जो उर्दू शायरी के लिए वक़्फ़ है गज़लें कहीं है। कहाँ तक वे क़ामयाब हैं यह फ़ैसला आप पर है।

इसको अम्ली जामा पहनाने के लिए मयंक साहब की शरीके हयात श्रीमती सरोज सिंह ने बड़ी मेहनत और मशक़्क़त से इस दीवान को तरतीब दी और बाक़ी काम जनाब सलाम फैज़ी साहब ने बखूबी अन्जाम दिया, जिससे "दीवाने मयंक" मन्ज़रे आम पर आ सका।

मैं उम्मीद करता हूँ कि दीवाने मयंक मक़बूले ख़ास व आम होगा।

इस दुआ के साथ मैं अपनी बात ख़त्म करता हूँ कि "अल्लाह करे, ज़ोरे क़लम और ज़ियादा"।

—बी॰ ए॰ बहादुर महशर बरेलवी
नाजिमें आला दायर-ए-अदब
गोरखपुर (यू॰ पी॰)

मयंक और उनकी शायरी मेरी नज़र में

जनाब के॰ के॰ सिंह "मयंक" हमारे उन फ़नकारों में है जिन्होंने बजा तौर पर ग़ज़ल की रिवायत और फ़न को बरता है। हुस्न-व-इश्क़, नाज़ो-नियाज़, हिज्रो-विसाल, शौक़ो-इन्तज़ार के रिवायती मौज़ूआत के साथ-साथ उन्होंने अपनी ग़ज़लों में "रूए-अस्र" को भी उरियां किया है और उनका तख़लीक़ी सफ़र इरतिक़ा पज़ीर होकर हमारे दौर तक पहुंचा है।

जनाब के॰ के॰ सिंह 'मयंक' ने अपने इस दीवान में एक पुरानी रिवायत की बाज़याफ़्त भी की है जिसे हमारे मआसरीन अपने सहल पसंदी के बाइस रफ़ता-रफ़ता छोड़ते चले जा रहे हैं। आज हज़ारों की तादाद में हमारे शोअरा के मजमूआ-ए-कलाम और कुल्लियात शाया हो रहे हैं मगर शाज़ो नादिर ही कोई शायर ऐसा होगा जिसने मुत्तक़दीन की तरह अपने मजमूए-क़लाम को तरतीब दिया हो। इसका एक सबब तो वो सहल पसंदी हो सकती है जो मुश्क़िल रदीफ़ों में हमसे शेर नहीं कहलवा सकती है और दूसरा सबब हमारा इ़जज़ो बयान भी हो सकता है जो पुराने असातज़ा की क़ादिर उस कलामी के बाद हमारे दरमियान बच गया है। के॰ के॰ सिंह मयंक ने मुख़तलिफ़ रदीफ़ों में शेर कह कर ये साबित किया है कि वो एक क़ादिर-उल-कलाम शायर हैं जो हर बहर और रदीफ़ में अपने जज़बात और एहसासात को आईना दिखला सकते हैं और मुश्क़िल ज़मीनों में भी अपनी कोहना- मश्क़ी और रियाज़ के बाइस शगुफ़ता और शादाब अशआर की तख़लीक़ कर सकते हैं।

उनके बारे में बजा तौर पर ये कहा जा सकता है कि कुछ लोग मैख़ाने में जाकर पीते हैं मगर के॰ के॰ सिंह 'मयंक' उनमें से हैं कि वो जहां पी लें वहीं मैख़ाना-ए-अदब बन जाया करता है।

–मलिक ज़ादा मंज़ूर अहमद
साबिक़ सद्र, शोबए उर्दू,
लखनऊ यूनिवर्सिटी–लखनऊ

मयंक अकबराबादी : शख़्स और शायर

"मयंक अकबराबादी" के ग़ज़ल गोई पर इज़हारे ख़्याल से क़ब्ल मैंने यह मुनासिब समझा कि ग़ज़ल के बुनियादी नुक़ात पर एक इजमाली नज़र डाल ली जाये। मयंक के अब तक चौदह मजमुआए कलाम शाये हो चुक हैं। उन्होंने तक़रीबन हर सिन्फ़े सुख़न में मसलन भजन, हम्द, नाअत, मनक़बत, सलाम, नज़्म और ग़ज़ल वगैरह में तबा आज़मायी की है। उनका चौदहवां मजमुआ "गुलदस्ता" जिसे उनकी अहलिया मोहरतमा "सरोज सिंह" ने मोरत्तब किया है उनकी ग़ज़लों का एक मख़्सूस इन्ख़ाब है। इस मजमुए की दूसरी अशाअत जो इसी साल मन्ज़रे आम पर आयी है, मेरे पेश नज़र है, इस में एक हम्द, और २१२ गज़लें शामिल हैं।

अब यह हिन्दी रस्मुलख़त में अपना "दीवान" शाअया कर रहे हैं जो तक़रीबन २१२ ग़ज़लों पर मुश्तमिल है। क़दीम शोअरा अपनी ग़ज़लों का मजमुआ दीवान की सूरत में (यानी हरूफ़े तहिज्जी की तरतीब से रदीफ़वार) मोरत्तब करते थे। जदीद शोअरा ने यह रविश तर्क कर दी और वह अपना कलाम तारिख़ी से या किसी तरतीब के बग़ैर शाए करने लगे। मयंक ने ये दीवान शाया करके दीवान की रवायत को फिर ज़िन्दा करने की क़ामयाब कोशिश की है।

मयंक के मिजाज़ में तकब्बुर नहीं, बल्कि इन्कसार और आला ज़रफ़ी उनकी फ़ितरते शानिया है। वह जहां भी रहे वहां के बुर्जुग शोअरा से मशविरा-ए-सोख़न करते रहे, उन्होंने "गुलदस्ता" के पेशे लफ़्ज़ में इन शोअरा-ए-कराम के नाम दिये हैं, वह हैं—जनाब फ़ैज़ रतलामी, जनाब बिस्मिल नक़्शबन्दी, जनाब असीर बुरहानपुरी और जनाब गौहर अकबराबादी। गोरखपुर आने पर जनाब महशर बरेलवी से मशविरा-ए-सोख़न करने लगे। इसका ज़िक्र भी उन्होंने गुलदस्ता में पेशे लफ़्ज़ में किया है।

इन्होंने अपने कलाम को खूब से खूबतर बनाने के लिए बिना तकल्लुफ़ बुजुर्ग शोअरा से इस्तफ़ादा किया है। यही वजह है कि इनकी शायरी का मयार रोज़ ब रोज़ बुलन्द से बुलन्द तर होता गया।

मयंक के मजमुआ कलाम "गुलदस्ता" और "दीवान-ए-मयंक" के मोतअले के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वह ग़ज़ल की क्लासकी रवायत के अमीन और एक खुशगो और खुशफ़िक्र शायर हैं।

मयंक ग़ज़ल के फ़न के भी रम्ज़ शनास है, उन्हें उरूज़ पर ओबूर हासिल है और उनके अश्आर ओरूज़ी इसकाम से पाक हैं। वह सादा सलीस और शगुफ़ता अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं और मीर की तरह गो उनके अश्आर भी "ख़्वास पसंद" हैं मगर उनके अस्ल मख़ातिब अवाम हैं। उनकी शख्सियत में मौसिक़ी रची बसी है। इसलिए उनके अश्आर में तरन्नुम और नग़मगी की फ़रावानी है।

मयंक की शायरी के इस अजमाली जाएज़े के बाद मुझे यह कहने में कोई ताअ़मुल नहीं कि वह एक मोअतबर ग़ज़लगो हैं लेकिन उनकी मंज़िल उस से आगे है। मुझे तवक़्क़ो है कि वह उस मंज़िल तक पहुंचने में कामयाब होंगे जिसकी तरफ़ उन्होंने ज़ैल के शेर में इशारा किया है।

ऐ "मयंक" अब तो हमारी हमसफ़र है आगही।
जिस जगह मंज़िल है अपनी यह वहां ले जायेगी।।

–अहमर लारी
पूर्व विभागाध्यक्ष (उर्दू)
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

हम्दे पाक

निराली शान है तेरी हरिक शै में बसा तू है।
सभी कुछ तुझसे वाबस्ता मगर सबसे जुदा तू है।।

तू ही अव्वल, तू ही आख़िर, तू ही ज़ाहिर, तू ही बातिन[१]।
हर इक ज़र्रे में ऐ मेरे ख़ुदा जलवा नुमा तू है।।

तू ही मक़सद, तू ही मंज़िल, तू ही किश्ती, तू ही साहिल।
हक़ीक़त में जहाने आरज़ू का मुद्दआ[२] तू है।।

बयां क्या हो तेरी हम्दो-सना[३] ऐ ख़ालिक़े[४] दुनिया।
सभी कमतर हैं तुझ से, दो जहां में, और बड़ा तू है।।

गुनहगारों को यारब नाज़ है तेरी करीमी पर।
करम की इब्तिदा[५] तू है, करम की इन्तिहा[६] तू है।।

जो तू चाहे तो मंज़िल खुद मुसाफ़िर के क़दम चूमे।
जहां में रहनुमाओं का भी यारब रहनुमा तू है।।

'मयंक' अब इस जहां में और किससे आसरा मांगे।
ग़मों की भीड़ में बेआसरों का आसरा तू है।।

---

१. छुपा हुआ, २. ख़्वाहिश, ३. ख़ुदा की तारीफ़
४. बनाने वाला, ५. शुरूआत, ६. चरम सीमा

(अलिफ़)

हर इक रस्मे कुहन[१] बदली, मिज़ाजे आसमां बदला।
न उनकी गुफ़्तगू बदली न अंदाज़े बयां बदला।।

बहर सूरत बहर आलम रहे हम दूर मंज़िल से।
हज़ारों बार गरचे[२] हमने मीरे-कारवां बदला।।

जहां पर ठान ली हमने वहीं चुनते रहे तिनके।
न शारवे़ आशियां बदली, न हमने गुलसितां बदला।।

ग़लत राहों पे कैसे साथ चलते सोचिये ख़ुद ही।
न लीजे बेसबब हमसे ख़ुदारा मेहरबां बदला।।

नतीजा हक़् बयानी का हमें मालूम था लेकिन।
तहे[३] तेग़े[४] सितम भी हमने कब अपना बयां बदल।।

इसे बर्बाद करने पर तुले हैं जो ज़बां वाले।
रहेगी लेके उनसे एक दिन उर्दू ज़बां बदला।।

कहें किस दिल से गुलशन में 'मयंक' अपने बहार आई।
न चहकीं बुलबुलें हर सू, न रंगे गुलसितां बदला।।

---

१. पुरानी, २. हालाँकि, ३. नीचे, ४. तलवार

पत्थर को गुहर[१], दश्त[२] को घर हमने बनाया।
हर ऐब को हमरंगे हुनर हमने बनाया।।

जब आतशे[३] गुल से न बनी बात चमन में।
हर क़तरा-ए-शबनम को शरर[४] हमने बनाया।।

ऐ हुस्ने सरापाये[५] अज़ल[६] हमको दुआ दे।
जलवा तेरा मंज़ूरे नज़र हमने बनाया।।

आराइशे[७] गुलशन में लहू अपना मिलाकर।
हर फूल को फ़िरदौसे[८] नज़र हमने बनाया।।

जिस दिल को सताती थीं ज़माने की बलायें।
उस दिल को बला नोश[९] मगर हमने बनाया।।

मालूम था जल जायेगा अपना ही नशेमन।
कांधों पे मगर बर्क़[१०] के घर हमने बनाया।।

देखे कोइ यह हुस्ने मसावात[११] हमारा।
ज़र्रे को 'मयंक' आज क़मर[१२] बनाया।।

---

१. मोती, २. जंगल, ३. आग, ४. चिन्गारी
५. सर से पांव तक, ६. सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला हंसी (ईश्वर) ७. श्रृंगार, ८. जन्नत
९. पीने वाला (मयकश), १०. बिजली,
११. एकता, १२. चाँद

उल्फ़त में बहुत मजबूर थे हम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।
तुम जिसकी भी चाहे ले लो क़सम, जो दिल ने कहा वह हमने किया।।

हम आ ही गए बहकावे में कमबख़्त के राहे उल्फ़त में।
इलज़ाम न दो मासूम हैं हम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

दुनियाये मुहब्बत में माना, कुछ और न कर पाए लेकिन।
इतना तो किया है कम से कम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

क्या ज़ोह्द[१] है और क्या तक़्वा[२] है, जब अपनी समझ के है बाहर।
फिर करते भी क्या हम शेख़े हरम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

हो वक़्ते सहर या शामे अलम क्यों हमको सताता है पैहम[३]।
जब तुझको ख़बर है दी-दए-नम[४], जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

उस बुत की भी पूजा की हमने, जिस बुत की अदायें काफ़िर थीं।
नाराज़ कि खुश हों अहले[५] हरम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

हम शहरे मुहब्बत में आकर ख़ातिर में न लाये दुनिया को।
गो लाख रही दुनिया बरहम[६], जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

कमबख़्त के कहने में आकर इज़हारे मुहब्बत कर बैठे।
अपनाओ कि ढाओ हम पे सितम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

चलने से ख़िरद[७] की राहों पर कुछ अपना भला होग न 'मयंक'।
यह सोच के हमने ऐ हमदम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

१. परहेजगारी, २. पारसाई, ३. लगातार
४. भीगी आँखे, ५. मस्जिद वाले, ६. ख़फ़ा,
७. होशियारी

हम अगर मिट जायेंगे तो यह जहां मिट जायेगा।
यह ज़मीं मिट जायेगी यह आसमां मिट जायेगा।।

दो क़दम तुम भी बढ़ो और दो क़दम हम भी बढ़ें।
ख़ुद ब ख़ुद जो फ़ासला-है-दरमियां मिट जायेगा।।

जीते जी मिटने न देगा कारवां वालो तुम्हें।
कारवां से पहले मीरे कारवां मिट जायेगा।।

गर यही आलम रहा तफ़रीक़े[१] ख़ासो आम का।
तो वजूदे मयकदा पीरे[२] मुग़ां मिट जायेगा।।

गर हुई ख़ातिर तवाज़ो आदमी पहचान कर।
मेज़बानी का चलन फिर मेज़बां मिट जायेगा।।

नफ़रतों का फिर उठेगा एक तूफ़ां चार सू।
दिल से गर नक़्शे मुहब्बत मेहरबां मिट जायेगा।।

ज़ुल्म सहने वाले तो ज़िन्दा रहेंगे ऐ 'मयंक'।
ज़ुल्म ढाने वालों का नामों निशां मिट जायेगा।।

---

१. फ़र्क़, २. मयकदे का मुखिया

नाशाद[1] था मैं और भी नाशाद हो गया।
जब से ग़मों की क़ैद से आज़ाद हो गया।।

कोई दुआ न हक़ में मेरे काम आ सकी।
बर्बाद मुझको होना था बर्बाद हो गया।।

आसान किस क़दर है मुहब्बत का यह सबक़।
बस एक बार मैंने पढ़ा याद हो गया।।

मैं मांगने गया था वहां ज़िन्दगी मगर।
फ़रमान मेरी मौत का इरशाद[2] हो गया।।

दिल तोड़ने पे मेरा ज़माना लगा रहा।
दिल टूटता भी कैसे जो फ़ौलाद हो गया।।

हम तो तमाम उम्र रहे मुब्तदी[3] मगर।
वह चन्द शेर कहके ही उस्ताद हो गया।।

जब से वो मेरे दिल में मकीं हो गए 'मयंक'।
उजड़ा हुआ मकान था, आबाद हो गया।।

---

१. दु:खी, २. धोषित, ३. शुरूआत करने वाला

प्यार सबसे हुज़ूर हमने किया।
सिर्फ़ इतना क़सूर हमने किया।।

उनके दानिस्ता[1] पास जा बैठे।
ख़ुद को ख़ुद से ही दूर हमने किया।।

दिल को टकरा दिया था पत्थर से।
आइना चूर-चूर हमने किया।।

प्यार करना गुनाह है फिर भी।
यह गुनाह भी हुज़ूर हमने किया।।

चार दिन की थी ज़िन्दगी, मालूम।
फिर भी इस पर ग़ुरूर हमने किया।।

हम ही मक़तूल[2] भी हैं क़ातिल भी।
क़त्ल ख़ुद को हुज़ूर हमने किया।।

दें सज़ा शौक़ से वो हमको 'मयंक'।
आदमी हैं क़सूर हमने किया।।

१. जानबूझकर, २. जिसका क़त्ल हुआ

थीं हवायें तुन्द[1] कितनी मुझको अन्दाज़ा न था।
क्योंकि जिस कमरे था मैं उसमें दरवाज़ा न था।।

वक़्त बदला तो सभी ने अपनी नज़रें फेर लीं।
तुम भी नज़रें फेर लोगे इसका अन्दाज़ा न था।।

ख़ून दामन पर न था गो दर्द था बेइन्तिहा।
क्योंकि दिल का ज़ख़्म गहरा था मगर ताज़ा न था।।

दौरे हाज़िर की ये दुल्हन किस तरह लगती हसीं।
जबकि चेहरे पर हया और शर्म का ग़ाज़ा[2] न था।।

हर कोई बनता है 'ग़ालिब', 'मीर', 'मोमिन' और 'फ़िराक़'।
जब सुना हमने तो कोई शेर भी ताज़ा न था।।

वह वफ़ाओं का जफ़ाओं से सिला देते रहे।
क्या 'मयंक' उनकी मुहब्बत का ये ख़मियाज़ा[3] न था।।

---

१. तेज़, २. पाउडर, ३. नतीजा

मेरे बच्चों के लिए दो वक़्त का आटा न था।
हां मगर घर में मताए[१] ज़र्फ़ का घाटा न था।।

उसके मरने पर किसी की आंख में आंसू न थे।
ज़िन्दगी का जिसने मिल जुल कर सफ़र काटा न था।।

दोस्तों की दोस्ती ने दिल के टुकड़े कर दिये।
दुश्मनों ने तो कभी मेरा गला काटा न था।।

जीत में तो जीत थी ही, हार में भी जीत थी।
था मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा प्यार में घाटा न था।।

नफ़रतों की चोटियों पर बैठकर रोता रहा।
जिसने दिल की खाइयों को प्यार से पाटा न था।।

अब वही समझा रहा है इश्क़ के मुझको चलन।
जिसने इक लम्हा भी तेरे हिज्र[२] का काटा न था।।

दिल धड़कने की सदा[३] आती रही थी ऐ 'मयंक'।
मेरी तन्हाई थी तन्हा, फिर भी सन्नाटा न था।।

---

१. दौलत, २. जुदाई, ३. आवाज़

ज़र्फ़[1] की मीज़ान[2] पर हर दोस्त पहचाना गया।
हम ज़रा सी बात पर रुठे तो याराना गया।।

हम जो उनकी बज़्म से दामन झटक कर चल दिये।
ख़ुश हुए, कहने लगे अच्छा है दीवाना गया।।

मैं तो तौबा पर था क़ायम अपनी ऐ शेख़े हरम।
ले के मुझको मयकदे में शौक़े रिन्दाना[3] गया।।

देखता किस दिल से उसको इश्क़ में जलते हुए।
शम्‌ए[4] सोज़ां की तरफ़ ख़ुद बढ़के परवाना गया।।

हर तरफ़ महफ़िल में उसकी क़हकहों की गूंज थी।
मैं सुनाने उसको नाहक़ ग़म का अफ़साना गया।।

यक बयक रुख़ पर सभी के इक उदासी छा गई।
उठके तेरी बज़्म से जब तेरा दीवाना गया।।

क्यों न करता वह सितमगर ऐ 'मयंक' उसको क़बूल।
जिसकी ख़िदमत में मैं लेकर दिल का नज़राना गया।।

---

१. क्षमता, २. तराज़ू, ३. पीने का शौक़
४. जलती हुई शमा

गर दिल में मुहब्बत का अरमान नहीं होता।
मैं ज़ुहरा[1] जबीनों[2] पर कुर्बान नहीं होता।।

दिल दे के तुम्हें अपना हम भूल गए कब के।
अपनों पे जो करते हैं एहसान नहीं होता।।

जीना तो मुहब्बत में मुश्किल है बहुत मुश्किल।
मरना भी मुहब्बत में आसान नहीं होता।।

क्या ऐसी जगह भी है दुनिया में जहां यारो।
अल्लाह नहीं होता भगवान नहीं होता।।

देते हैं वही तल्क़ीं[3] ईमां की ज़माने को।
जिन कुफ़्र के मारों का ईमान नहीं होता।।

नादां है बहुत फिर भी यह शम्अ का परवाना।
अंजामे मुहब्बत से अंजान नहीं होता।।

जब तक न करे दामन तर अपना गुनाहों से।
तब तक तो 'मयंक' इंसां इन्सान नहीं होता।।

---

१. एक सितारे का नाम, २. पेशानी, ३. शिक्षा

यूं भी रुतबा बढ़ाया गया।
आसमां पर बुलाया गया।।

बेख़ता जो भी पाया गया।
उसको सूली चढ़ाया गया।।

चन्द लम्हों की देकर ख़ुशी।
ज़िन्दगी भर रूलाया गया।।

ज़िक्र औरों का चलता रहा।
तज़किरा मेरा आया गया।।

पहले मेरे क़सीदे पढ़े।
फिर नज़र से गिराया गया।।

जुर्मे उलफ़त की इतनी सज़ा।
आसमां से गिराया गया।।

इम्तिहां, इम्तिहां, इम्तिहां।
उम्र भर आज़माया गया।।

तब कहीं जाके टूटा भरम।
आइना जब दिखाया गया।।

फिर भी कांटों से उलझा किया।
लाख दामन बचाया गया।।

कब किसी ख़ूबरू[१] से 'मयंक'।
अपना वादा निभाया गया।।

---

१. खूबसूरत चेहरे वाला

आप से नाता न तोड़ा जायेगा।
आह से रिश्ता न जोड़ा जायेगा।।

जल उठेंगे लोग तेरे नाम से।
जब हमारा नाम जोड़ा जायेगा।।

पहले बालो पर कतर डालेंगे वह।
फिर हमें आज़ाद छोड़ा जायेगा।।

जो करे तक़सीम उलफ़त की शराब।
हमसे वह साग़र न तोड़ा जायेगा।।

दिल वो जिसमें हो मुहब्बत का क़याम।
हम से वह हर्गिज़ न तोड़ा जायेगा।।

अहले[१] ज़र[२] के ऐशो इशरत के लिए।
मुफ़लिसों का ख़ूं निचोड़ा जायेगा।।

प्यार के पंछी जिधर होंगे 'मयंक'।
बस उधर ही तीर छोड़ा जायेगा।।

---

१. वाला, 2. दौलत

ठोकरें खायेगा तो संभल जायेगा।
आदमी आदमी है बदल जायेगा।।

ख़ौफ़ दिल से जो रब का निकल जायेगा।
आदमी आदमी को निगल जायेगा।।

दूर इससे रहो तुम ज़रा बिजलियो।
ख़ारो ख़स का नशेमन है जल जायेगा।।

खेलने के लिए जिसको दिल चाहिए।
वह खिलौनों से कैसे बहल जायेगा।।

फिर न आयेगा वापस कभी लौटकर।
तीर जो भी कमां से निकल जायेगा।।

राह में ज़िन्दगी की है फिसलन बहुत।
तेज़ दौड़ेगा जो भी फिसल जायेगा।।

है अक़ीदत जिसे उसके दर से 'मयंक'।
जब उधर जायेगा सर के बल जायेगा।।

मेरी मय्यत पर आ जाना पहन के जोड़ा शादी का।
दुनिया वाले भी तो देखें जश्न मेरी बर्बादी का।।

हुस्न और इश्क़ के बीच में हरदम चांदी की दीवारें हैं।
रास कहां मुफ़लिस को आता प्यार किसी शहज़ादी का।।

देख के मेरी हालत मौसम की भी आंखें नम हैं आज।
तुम भी तड़प उठोगे सुनकर ज़िक्र मेरी बरबादी का।।

दूर क़फ़स[१] से हूं मैं लेकिन यादे माज़ी[२] में हूं क़ैद।
मतलब ग़लत लगा बैठे हैं लोग मेरी आज़ादी का।।

किसकी अदालत में वह जाए किससे मांगे अब इंसाफ़।
कोई भी पुरसा[३] हाल नहीं है आज यहां फ़रियादी का।।

जो भी चाहो शौक़ से पहनो तन पर लेकिन दीवानो।
तार तार तुम मत कर देना पैराहन आज़ादी का।।

मुद्दत से मैं भटक रहा हूं नफ़रत के सहरा में 'मयंक'।
काश कोई रस्ता दिखला दे चाहत की आबादी का।।

---

१. पिंजरा, जेल, २. अतीत, ३. पूछने वाला

रघुकुल की रवायत का गर पास[1] नहीं होता।
तो राम, लखन, सिय को बनवास नहीं होता।।

है मौत के आने का तय वक़्त मगर फिर भी।
किस वक़्त कहां आए आभास नहीं होता।।

ऐ उम्रे रवां जब वह आयेंगे अयादत[2] को।
तू साथ मेरा देगी विश्वास नहीं होता।।

रो लेता हूं जी भरकर जब अपनी तबाही पर।
फिर मुझको तबाही का एहसास नहीं होता।।

यारो ये कहावत भी इक ज़िन्दा हक़ीक़त है।
क़िस्मत में कनीज़ो की रनिवास नहीं होता।।

अख़बार बिछा कर वह फुटपाथ पे सोते हैं।
वह जिनके मुक़द्दर में आवास नहीं होता।।

कांधों पे लिए घर को जो घूमते रहते हैं।
उन ख़ानाबदोशों का इतिहास नहीं होता।।

दिन रात मुहब्बत में हम उसकी तड़पते हैं।
बेहिस[3] को 'मयंक' इसका एहसास नहीं होता।।

---

१. ख़्याल, २. हालचाल लेने को,
३. जिसमें कोई एहसास न हो

पीने को मुझे साक़ी, खाने को ख़ुदा देगा।
यह मेरा भरम मुझको क्या क्या न दग़ा देगा।।

ऐ दोस्त ज़मीर अपना इक ऐसा नजूमी[1] है।
आग़ाज़ से पहले ही अंजाम बता देगा।।

ख़ुद जिसने मुझे डाला रस्ते पे गुनाहों के।
वह मेरे गुनाहों की क्या मुझको सज़ा देगा।।

दामन पे जो टपकेंगे पलकों से मेरी क़तरे।
उनमें से कोई क़तरा तूफ़ान उठा देगा।।

आयेगा ज़रूर इक दिन वह दौरे[2] तग़ैयुर भी।
रोतों को हंसा देगा, हंसतों को रुला देगा।।

काग़ज़ पे क़रीने से तरतीब कोई देकर।
इक हर्फ़े[3] मुहब्बत का अफ़साना बना देगा।।

तोड़ेगा 'मयंक' आकर जो कुहना[4] रवायत को।
जीने का वही मुझको अंदाज़ नया देगा।।

---

१. ज्योतिषी, २. बदलता रहने वाला काल
३. अक्षर, ४. पुरानी

आपको नज़रें मिलाये इक ज़माना हो गया।
ज़र्फ़ मेरा आज़माये इक ज़माना हो गया।।

रोज़ खिलते हैं तेरे लब पर तबस्सुम[१] के गुलाब।
और हमको मुस्कुराये इक ज़माना हो गया।।

जा रहा हूं इसलिए फिर जलवा गाहे नाज़ में।
हाले दिल उनको सुनाये इक ज़माना हो गया।।

छोड़िये अब यह तक़ल्लुफ़ और यह शर्मो हया।
आपको इस घर में आये इक ज़माना हो गया।।

आइये आ जाइये अब तो क़रीब आ जाइये।
प्यास नज़रों की बुझाये इक ज़माना हो गया।।

छोड़ दे पीछा मेरा लिल्लाह[२] अब तो ज़िन्दगी।
तुझको सीने से लगाये इक ज़माना हो गया।।

कर न पाया आज तक दीदार मैं उसका 'मयंक'।
ज़हनों दिल पर जिसको छाये इक ज़माना हो गया।।

---
१. मुस्कराहट, २. ख़ुदा के वास्ते

रफ़्ता रफ़्ता आशिक़ी में वह मुक़ाम आ ही गया।
उनके लब पर बे इरादा मेरा नाम आ ही गया।।

आख़िरश[१] पहलू में अपने उसने दी मुझको जगह।
मेरा इख़लाके़ मुहब्बत मेरे काम आ ही गया।।

इस तरह तड़पाया मेरी याद ने उसको कि बस।
भूलने वाले का मुझको फिर पयाम आ ही गया।।

थी कशिश इस दर्जा उनके गेसुओं के जाल में।
ताइरे[२] दिल ख़ुद ही खिंच के ज़ेरे दाम आ ही गया।।

गो नज़र अन्दाज़ साक़ी ने किया मुझको मगर।
मेरे हिस्से का मेरे हाथों में जाम आ ही गया।।

मुस्कुराने पर मेरे, यारो! ग़मों का इक हुजूम।
मेरे घर लेने को मुझसे इन्तिक़ाम आ ही गया।।

मैं न कहता था कि इक दिन वह बुलालेंगे ज़रूर।
वक़्ते रुख़्सत ही सही, उनका पयाम आ ही गया।।

वह जिन्होंने खुल के लूटी दौलते हुस्ने चमन।
उनके हाथों में चमन का फिर निज़ाम आ ही गया।

किस लिए अब तू रुका है बज़्मे दुनिया में 'मयंक'
जिनका आना था सलाम उनका सलाम आ ही गया।।

---

१. आखिरकार, २. परिन्दा रूपी, ३. नीचे
४. जाल

सुब्ह न आया शाम न आया।
दिल को कभी आराम न आया।।

मौत को सबने कोसा लेकिन।
क़ातिल पर इल्ज़ाम न आया।।

सब थे संगी साथी लेकिन।
वक़्त पे कोई काम न आया।।

बज़्म में इज़्ने[1] आम था फिर भी।
मेरे लबों तक जाम न आया।।

भूखा था हर एक परिन्दा।
फिर भी ज़ेरे दाम[2] न आया।।

जिन से रस्मोराह[3] थी मेरी।
उनका भी पैग़ाम न आया।।

फूट फूट कर मयकश रोये।
गार्दिश[4] में जब जाम न आया।।

तू भी 'मयंक' अपना था लेकिन।
काम पड़ा तो काम न आया।।

---

१. पीने की इजाजत, २. जाल, ३. जानपहचान
४. घूमना

(बे)

जो भी तेरे क़रीब है यारब।
वह बड़ा ख़ुशनसीब है यारब।।

कोई ग़मगीन है कोई ख़ुश है।
अपना अपना नसीब है यारब।।

तू ही ज़ाहिर भी तू ही बातिन[1] भी।
तेरी हस्ती अजीब है यारब।।

जिस पे तेरी नज़र न हो ऐसा।
अहले[2] ज़र भी ग़रीब है यारब।।

तूने क़ातिल बना दिया जिसको।
वह ही मेरा तबीब[3] है यारब।।

आज हर शख़्स के गले में क्यों।
इक निशाने सलीब है यारब।।

सिर्फ़ तू ही नहीं हबीब 'मयंक'।
तेरा ग़म भी हबीब है यारब।।

---

१. छुपा हुआ, २. धनवान, ३. हक़ीम

आपकी जो भी चाल है साहब।
वाक़ई बेमिसाल है साहब।।

रोज़ आते हैं वह तसव्वुर में।
उनको मेरा ख़्याल है साहब।।

चांद सूरज से भी सिवा यारो।
उनका हुस्नो जमाल[१] है साहब।।

जिसने अंजाम पर नज़र की है।
वह परेशान हाल है साहब।।

रिफ़अतें[२] अब कहां है क़िस्मत में।
अब तो दिल पायमाल[३] है साहब।।

अपनी हद से गुज़र गया था मैं।
मुझको इसका मलाल है साहब।।

क्यों 'मयंक' आदमी है छोटा बड़ा।
ख़ून जब सबका लाल है साहब।।

---

१. सुन्दरता, २. उँचाईयां,
३. पाँव से कुचला हुआ

(पे)

बावफ़ा मुझसा ज़माने में कहां पायेंगे आप।
मेरी हस्ती को मिटाकर ख़ुद ही पछतायेंगे आप।।

रंग पर मेरी मुहब्बत को ज़रा आने तो दें।
खिंच के पहलू में मेरे ख़ुद ही चले आयेंगे आप।।

बाद मेरे हुस्ने रंगीं को जिला[१] बख़्शेगा कौन।
आइना देखेंगे जब भी तो तड़प जायेंगे आप।।

ज़िन्दगी की राह में चलिये न आंखें मूंदकर।
वरना अंधों की तरह ही ठोकरें खायेंगे आप।।

इसलिए करता नहीं हूं पेश दिल का मुद्दआ।
मुझको यह मालूम है क्या मुझसे फ़रमायेंगे आप।।

किस तरह ज़िन्दा रहें इस दौरे पुरआशोब[२] में।
शहर में मुर्दा दिलों के किसको समझायेंगे आप।।

ज़िन्दगी की राह में सीना सिपर[३] रहिए 'मयंक'।
मौत से डरियेगा तो बेमौत मर जायेंगे आप।।

---

१. रोशनी, २. दुखों से भरा, ३. सीना ताने हुए

यूं न हमें पुकारें आप।
तंज़ के तीर न मारे आप।।

वक़्त पड़े तो देश के ख़ातिर।
तन मन धन सब वारे आप।।

छोड़ें मुझको हाल पै मरे।
अपनी जुल्फ़ सवारें आप।।

राहे[१] तलब में महरो वफ़ा के।
मिटते नक़्श उभारें आप।।

राह कठिन है दूर है मंज़िल।
फिर भी न हिम्मत हारें आप।।

दुनिया से जाने से पहले।
इसका क़र्ज़ उतारें आप।।

मेरे मुक़द्दर में आँसूं हैं।
हंस के 'मयंक' गुज़ारे आप।।

---

१. इच्छाओं का रास्ता

(ते)

आपकी महफ़िल में यूं तो हुस्न वाले हैं बहुत।
तन के तो उजले हैं लेकिन मन के काले हैं बहुत।।

वह ही कांटे बो रहे हैं अब हमारी राह में।
हमने जिनके पांव से कांटे निकाले हैं बहुत।।

उंगलियों पर हम गिना दें, हों अगर दो चार दस।
क़ामयाबी पर हमारी जलने वाले हैं बहुत।।

एक दिन तरसेगा वह भी दाने-दाने के लिए।
आज दस्तरख़्वान पर जिसके निवाले हैं बहुत।।

देख लो दामन हमारा आज भी बेदाग़ है।
मयकदे में यूं तो हमने जाम उछाले हैं बहुत।

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी भर मुंह लगाया ही नहीं।
ज़िन्दगी ने यूं तो हम पर डोरे डाले हैं बहुत।।

दोस्तों की दोस्ती से ख़ूब वाक़िफ़ हैं 'मयंक'।
आस्तीं में बरसों हमने नाग पाले हैं बहुत।।

यूं तो मेरी आंसुओं से है शनासाई[1] बहुत।
हां मगर आते हैं तो होती है रुसवाई बहुत।।

किससे कीजे कैसे कीजे इल्मो फ़न पर गुफ़्तगू।
आजकल अहलेअदब[2] कम हैं तमाशाई बहुत।।

क्या करें उलझन हमारी ख़त्म होती ही नहीं।
उसने सुलझाने को अपनी ज़ुल्फ़ सुलझाई बहुत।।

उसका मेरा साथ वैसे तो रहा है कम से कम।
याद आता है मगर फिर भी वो हरजाई बहुत।।

सिक्क-ए-जाँ देके भी बू-ए-वफ़ा मिलती नहीं।
आज बाज़ारे मुहब्बत में है मंहगाई बहुत।।

हर घड़ी बस एक रट इस घर का बटवारा करो।
जाने क्यों नाराज़ है मुझसे मेरा भाई बहुत।।

हैं वही लम्हे जुदाई के मगर फिर भी 'मयंक'।
जाने क्यों खलने लगी है शामे तन्हाई बहुत।।

---

१. जानपहचान, २. अदब को जानने वाले

(टे)

आप का ये फ़रमाना झूट।
मुझसे है याराना, झूट।।

दुनिया झूठ, जमाना झूट।
जग का ताना बाना झूट।।

सच का साथ न हम छोड़ेंगे।
बोले लाख ज़माना झूट।।

सुन के हकीकत प्यार से बोले।
प्यार का है अफ़साना झूट।।

मुल्क में हरसू खुशहाली है।
ख़ूब है ये शाहाना झूट।।

ये तो काम है फरज़ानों का।
क्या जाने दीवाना झूट।।

मैख़ारों से बोल रहा है।
क्यों मीरे मैख़ाना झूट।।

ऐ "मयंक" मरते मर जाना।
ओठों पर मत लाना झूट।।

इंसा की मैं मैं की रट।
जाने बैठे किस करवट।।

ख़ाली ख़ाली हैं चौपालें।
सूने सूने हैं पनघट।।

घुंघरू की आवाज़ें जैसे।
उनके पैरों की आहट।।

हर चेहरे पर रंगे बग़ावत।
माथे-माथे पर सिलवट।।

सजदों से दोनों हैं इबारत।
मेरी जबीं उनकी चौखट।।

रस्ते अलग अलग हैं लेकिन।
सबकी मंज़िल है मरघट।।

इश्क़ जिसे कहते हैं वह है।
बैठे बिठाये की झंझट।।

बदलेगा इक रोज़ 'मयंक'।
मेरा मुक़द्दर भी करवट।।

शबे फ़ुर्क़त[१] सूकूं पाया न इस करवट न उस करवट।
दिले मुज़्तर[२] को चैन आया न इस करवट न उस करवट।।

मुख़ातिब उनको करने को बदलते रह गए पहलू।
मुहब्बत का सिला पाया न इस करवट न उस करवट।।

हुए रुख़सत वो जिनको देखने की मुझको ख़्वाहिश थी।
वही मुझको नज़र आया न इस करवट न उस करवट।।

बदलने को तो हर लम्हा ही मैंने करवटें बदलीं।
क़रारे ज़िन्दगी पाया न इस करवट न उस करवट।।

ज़माने में मयंक आने को तो सौ इन्क़लाब आए।
ज़माना फिर भी रास आया न इस करवट न उस करवट।।

---

१. विच्छोह, २. बेचैन

(से)

कौन झुकाता है चौखट पर उसकी सर बेलौस।
मैं करता हूं उसको सज्दा फिर भी मगर बेलौस।।

लाख ज़माना पत्थर मारे तोड़े इनके फूल।
पेड़ मगर देते हैं फिर भी मीठे समर बेलौस।।

तेरे मन की सभी मुरादें पूरी करेगा वो।
उसकी जानिब अगर उठेंगी तेरी नज़र बेलौस।

बांट के अमृत सारे जग को, सुन लो ऐ लोगों।
ज़हर का प्याला हंसकर पी गए, शिवशंकर बेलौस।।

कैसे कह दें, उनसे सोचो, ख़िज़्रे राह "मयंक"।
राह दिखाते नहीं किसी को जो रहबर बेलौस।।

कहीं गीता के वारिस हैं कहीं कुरआन के वारिस।
हक़ीक़त में मगर यह सब है हिन्दुस्तान के वारिस।।

हमारी पारसाई[१] पर ख़ुदाई नाज़ करती है।
हमीं हैं हां हमीं हैं दौलते ईमान के वारिस।।

अदब और शायरी का दोस्तो हाफ़िज़ ख़ुदा होगा।
अगर जाहिल रहेंगे मीर के दीवान के वारिस।।

मुझे हर एक मज़हब से ज़ियादा देश प्यारा है।
मेरी यह बात सुन लें धर्म के ईमान के वारिस।।

वो जिसके नाम से लाखों हज़ारों फ़ैज़ पाते थे।
बिलखते भूख से देखे हैं उस सुलतान के वारिस।।

'मयंक' अठखेलियां करते हैं जो मौजे हवादिस[२] से।
हक़ीकत में वही तो होते हैं तूफ़ान के वारिस।।

---

१. पवित्तता, २. तूफ़ान

(जीम)

कभी बहार की रंगत, कभी ख़िज़ां का मिज़ाज।
कब एक जैसा रहा गर्दिशे जहाँ का मिज़ाज।।

गुरूरे वक़्त से कह दो कि होश में आये।
ज़मीन पूछने वाली है आसमां का मिज़ाज।।

हमारे क़द की बुलन्दी को नापने वालो।
हमारा हौसला रखता है आसमां का मिज़ाज।।

नई बहार की ये दोरूखी अरे तौबा।
गुलों से मिलता नहीं सहने गुलसितां का मिज़ाज।।

ये सर्द आह नशेमन की पासबां कब तक।
मेरी निगाह में है बर्क़े-बेअमां[१] का मिज़ाज।।

समझने वाले मेरे दिल का मुद्दआ समझें।
है लफ़्ज़ लफ़्ज़ से ज़ाहिर मेरी ज़बां का मिज़ाज।।

'मयंक' मंजिले मक़सूद का ख़ुदा हाफ़िज।
है कारवां से अलग मीरे कारवां का मिज़ाज।।

---

१. बेचैनी

जिनका दावा, लायेंगे हम रामराज।
कर दिया दूषित उन्हीं ने कुल समाज।।

आपकी रंगी सियासत अल्लमां।
हर तरफ़ से हो रहा है एहतजाज[१]।।

है वही माहौल वो ही ज़िन्दगी।
कल जो होता था वही होता है आज।।

वो जो रक्खेंगे वतन की आबरू।
अबके सौंपेंगे उन्हीं को तख़्तोताज।।

भूल बैठे चाह में उसकी "मयंक"।
क्या रवायत और क्या रस्मों रिवाज।।

(चे)

आज जो ये दीवार खड़ी है तुम दोनों के बीच।
कुछ तो बात ज़रूर हुई है तुम दोनों के बीच।।

बन के शोला भड़क उठेगी इसके हैं इमकान।
जो चिंगारी सुलग रही है तुम दोनों के बीच।।

कहने को तो एक हुए हैं दोनों के दिल आज।
दूरी फिर क्यों बनी हुई है तुम दोनों के बीच।।

कल तक हमने जो देखा था ज़हरीला माहौल।
आज भी क्या माहौल वही है तुम दोनों के बीच।।

मुद्दत से ये सोच रहा है कैसे भरे "मयंक"।
नफ़रत की जो खाई खुदी है तुम दोनों के बीच।।

इश्क़ में क्या खोया क्या पाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।
क्यों ये तसव्वुर ज़हन में आया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

हर चेहरे पर चेहरा हो तो कैसे हम यह पहचानें।
कौन है अपना कौन पराया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

क़ब्र में जाकर मिट्टी में मिल जाने वाली मिट्टी को।
यारों ने फिर क्यों नहलाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

तू भी क़ातिल मैं भी क़ातिल मक़तल[१] हम दोनों के दिल।
किसने किसका ख़ून बहाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

फूल खिलाता था जो कल तक आज वो कांटे बोता है।
फ़र्क़ आख़िर यह कैसे आया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

दुनिया भी इक सरमाया[२] है उक़बा[३] भी इक सरमाया।
कौन सा अच्छा है सरमाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

जब तक सूरज सर पे नहीं था साथ 'मयंक' ये चलता था।
पांव तले अब क्यों है साया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

---

१. कत्लगाह, २. ख़जाना, ३. परलोक

(हे)

खुश अदा की तरह खुश बयां की तरह।
बात कीजे तो उर्दू जुबां की तरह।।

फ़र्श से उठके जो अर्श पर आ गए।
ज़ुल्म ढाने लगे आसमां की तरह।।

आप बीती सुनाता रहा मैं उन्हें।
वह भी सुनते रहे दास्तां की तरह।।

कर रहा था सफ़र मैं तो तन्हा मगर।
फिर भी लूटा गया कारवां की तरह।।

बस उसी शाख़ पर बर्क़े सोज़ा[१] गिरी।
जिस पे डाली गई आशियां की तरह[२]।।

देखकर मुझको नज़रें झुकाना नहीं।
राज़ रखना तो इक राज़दां की तरह।।

बस उसी ने सरे बज़्म रुसवा किया।
जो कि मुझसे मिला राज़दां की तरह।।

मुझको राहें दिखाते रहेंगे 'मयंक'।
उनके नक़्शे क़दम कहकशां की तरह।।

---

१. जलाने वाले, २. बुनियाद

इस क़दर उसने किया मुझको तबाह।
उम्र भर करता रहा मैं आह-आह।।

सांस लेना भी यहां जब है गुनाह।
ज़िन्दगी कैसे करूं तुझसे निबाह।।

कैसे साबित उसको कातिल मैं करूं।
तोड़ लेता है जो मेरा हर गवाह।।

ढेर पर बारूद के हर मुल्क है।
एक दिन हो जाएगी दुनिया तबाह।।

मौत से बद्तर हुई है ज़िन्दगी।
ज़िन्दा रहने की मगर फिर भी है चाह।।

दूर हो जाऐंगीं सारी कुल्फ़तें।
आपकी हो जाए गर मुझ पर निगाह।।

आके बहकावे में उसके ऐ "मयंक"।
तर्क कर बैठा मैं खुद से रस्मों राह।।

(ख़े)

दीन की बातें अपनी ज़बां से फ़रमाने को शैख़।
रोज़ हमारे घर आते हैं समझाने को शैख़।।

मैख़ाना आबाद रहे तुम मांगो दुआएं ख़ैर।
पानी पी-पी कर मत कोसो मैख़ाने को शैख़।।

मंदिर मस्जिद दोनों ही हैं उस मालिक का घर।
नज़रे हिक़ारत से मत देखो बुतख़ाने को शैख़।।

जी भर कर भी करना मज़म्मत[१] बादाख़ारी[२] की।
मुंह से लगा कर पहले देखो पैमाने को शैख़।।

ख़ूब है इनकी बादानोशी का अंदाज़ "मयंक"।
बिन्ते-अनव से आ जाते हैं टकराने को शैख़।।

---

१. बुराई, २. शराब पीना,
३. अंगूर की बेटी (शराब)

फिर गया जब शम्अ की जानिब से परवाने का रुख़।
आइये हम भी बदल लें अपने अफ़साने का रुख़।।

देखना यह है कि क्या क्या गुल खिलाता है जुनूं।
आज गुलशन की तरफ़ है एक दीवाने का रुख़।।

फिर इधर से होके गुज़रा क्या कोई महमिल[१] नशीं।
इतना दीदाज़ेब क्यों है आज वीराने का रुख़।।

यह मेरी नज़रों का धोखा अलहफ़ीजो[२] अलअमां[३]।
अजनबी सा लग रहा है जाने पहचाने का रुख़।।

जब से मयख़ाने से वापस आए हैं शेख़े हरम।
बदला बदला सा नज़र आता है समझाने का रुख़।।

देखकर उस शोख़ की आराइशे[४] हुस्नों जमाल।
फीका फीका सा लगे है आइना ख़ाने का रुख़।।

इस तरह तामीर कीजे दौरे-हाज़िर[५] में 'मयंक'।
दैरो काबा की तरफ़ हो अपने मयख़ाने का रुख़।।

---

१. परदा, २. अल्लाह हिफाजत करे,
३. अल्लाह की पनाह, ४. सजावट,
५. आजकल का जमाना

(दाल)

हम किसे अपना बनायें शाम ढल जाने के बाद।
हाले दिल किसको बतायें शाम ढल जाने के बाद।।

क्या करें जब दिल के अरमानों को सुलगाती हैं ये।
उनके कूचे की हवायें शाम ढल जाने के बाद।।

जब भी मुड़कर देखता हूं कुछ नज़र आता नहीं।
कौन देता है सदायें शाम ढल जाने के बाद।।

उगते सूरज की इबादत की जिन्होंने उम्रभर।
जश्न वह कैसे मनायें शाम ढल जाने के बाद।।

बज़्म में वह माहरू[१] जब बेनक़ाब आने को है।
किसलिए दीपक जलायें शाम ढल जाने के बाद।।

चूमता हूं मैं नये अशआर अपने यूं 'मयंक'।
चूमे ज्यों बच्चों को मायें शाम ढल जाने के बाद।।

---

१. चाँद से चेहरे वाला

अब न कोई ग़म न ग़फ़लत आप से मिलने के बाद।
है मुसर्रत ही मुसर्रत आप से मिलने के बाद।।

लोग कहते हैं कि आप आये क़यामत आ गई।
अब न आयेगी क़यामत आप से मिलने के बाद।।

इस तरफ़ काबा है मेरे उस तरफ़ है बुतकदा।
मैं करूं किसकी इबादत आपसे मिलने के बाद।।

आपसे जो भी मिला वह अहले इज़्ज़त हो गया।
बढ़ गई मेरी भी शोहरत आप से मिलने के बाद।।

पहले मेरी ज़िन्दगी पर छाये थे रस्मों रिवाज।
भूल बैठा हर रवायत आप से मिलने के बाद।।

प्यार में रुसवाइयों के मासिवा[१] कुछ भी नहीं।
हर कोई देता हिदायत आपसे मिलने के बाद।।

बदनसीबी का अंधेरा था 'मयंक' अपना वजूद[२]।
बन गई है मेरी क़िस्मत आप से मिलने के बाद।।

---

१. मेरे सिवा, २. अस्तित्व

तड़प तड़प के ही गुज़रेगी ज़िन्दगी शायद।
मेरे नसीब में लिक्खी नहीं ख़ुशी शायद।।

सलूक देख के लोगों का ऐसा लगता है।
वफ़ा की रस्म ज़माने से उठ गई शायद।।

ज़माना क्या है ये मैंने समझ लिया लेकिन।
समझ न पाया ज़माना मुझे अभी शायद।।

किये हैं मैंने जो एहसान भूल जायेंगे।
मेरी वफ़ा का सिला देंगे वह यही शायद।।

गुलों के रंगे तबस्सुम से ऐसा लगता है।
उड़ा रहे हैं मेरे ग़म की यह हंसी शायद।।

उदास उदास जो चेहरे हैं अहले महफ़िल के।
उन्हें भी खलने लगी है मेरी कमी शायद।।

गुनह का लेके सहारा 'मयंक' दुनिया में।
ज़मीर बेच के आया है आदमी शायद।।

खुशियां हुईं हैं आम तुझे देखने के बाद।
ग़म मिट गये तमाम तुझे देखेन के बाद।।

मैं अपने सुब्हो-शाम तुझे देखने के बाद।
करता हूं तेरे नाम तुझे देखने के बाद।।

कहते हैं जिसको इश्क़ में मेराजे[१] आशिक़ी[१]।
पाया है वह मुक़ाम तुझे देखने के बाद।।

है इस तरफ़ जो दैर तो उस सिम्त है हरम।
किसको करूं सलाम तुझे देखने के बाद।।

बाज़ारे इश्क़ में भी मेरे देख आजकल।
लगने लगे हैं दाम तुझे देखने के बाद।।

देखा है और न देखेंगे तुझसा हंसी कहीं।
यह फ़ैसला है आम तुझे देखने के बाद।।

क्या जाने क्यों 'मयंक' का सबकी ज़बान पर।
आने लगा है नाम तुझे देखने के बाद।।

---

१. मुहब्बत की बुलन्दी

आलम वही है एक ज़माने के बावजूद।
आते हैं अब भी याद भुलाने के बावजूद।।

कहता है वह कि मेरे लिये तुमने क्या किया।
उस पर मता-ए-ज़ीस्त[१] लुटाने के बावजूद।।

उलझे हज़ार बार ग़मे ज़िन्दगी से हम।
दामन को अपने लाख बचाने के बावजूद।।

घर में हमारे जश्ने चराग़ां न हो सका।
हर ताक़ पर चराग़ जलाने के बावजूद।।

यह मश्विरा है मेरा, उसे मत कुरेदिये।
भड़केगी और आग बुझाने के बावजूद।।

बच्चों की तरह ज़िद पे हैं वह भी अड़े हुये।
और मानते नहीं हैं मनाने के बावजूद।।

कहता है 'और और' सरे मयकदा 'मयंक'।
जी भर के अपनी प्यास बुझाने के बावजूद।।

---

१. ज़िन्दगी की दौलत

याद रहते हैं भले इंसान मर जाने के बाद।
फूल देते रहते हैं ख़ुशबू बिखर जाने के बाद।।

इश्क़ की गहराइयों को जानना चाहा बहुत।
डूबने पहुंचा मगर दरिया उतर जाने के बाद।।

आरज़ू जन्नत की लेकर दर बदर भटका किये।
स्वर्ग लेकिन मिल सका बस अपने घर जाने के बाद।।

जाने वालों को भला मैं किस लिए इल्ज़ाम दूं।
कौन वापस लौट पाया है उधर जाने के बाद।।

जो गया शहरे निगारां[१] बस वहीं का हो गया।
लौटकर आया न कोई फिर उधर जाने के बाद।।

नाज़ फ़रमायेंगे वह कुछ और अपने हुस्न पर।
आइना देखेंगे जब गेसू संवर जाने के बाद।।

उम्रभर हंसते रहे जो मेरी वहशत पर 'मयंक'।
रो रहे हैं वह मेरी मय्यत गुज़र जाने के बाद।।

---

१. हसीनों के शहर में

(ज़ाल)

वह मुहब्बत के हों या हों जंग के यारो महाज़।
हमने देखे हैं अनेकों रंग के यारो महाज़।

फ़ितनाकारों के इरादे मिल गए सब ख़ाक़ में।
संग से तोड़े गए जब संग के यारों महाज़।।

भाई की गर्दन पे भाई ही की शमशीरें[१] तनीं।
क्या करोगे जीतकर इस ढंग के यारो महाज़।।

क्यों तसन्नो[२] के जहां में शोहरतों की चाह में।
खोल के बैठे हो नामो-नंग[३] के यारो महाज़।।

देखिये क्या हश्र हो दोनों हरीफ़ों[४] का 'मयंक'।
अम्न की सरहद पे जब हों जंग के यारों महाज़।।

---

१. तलवारें, २. बनावट, ३. शोहरत,
४. प्रतिद्वन्दी

(डाल)

उनकी महफ़िल में क़दमबोसां है मक्कारों का झुंड।
मैं इधर तनहां उधर उनके तरफ़दारों का झुंड।।

कूचा-कूचा, गलियों-गलियों इस क़दर बहुतात[2] है।
बिन बुलाए जम्मा हो जाता है फ़नकारों का झुंड।।

गाहे-गाहे[3] लोग जाते हैं हरम में मोहतरम।
मैकदे में तो लगा रहता है मैख़ारों का झुंड।।

हो रही है इनके दम से सुन्नत-ए-आदम अदा।
दीनदारों से तो अच्छा है गुनहगारों का झुंड।।

इसलिए बदनाम होते जा रहे हैं वो 'मयंक'।
चल रहा है साथ उनके सियहकारों का झुंड।।

---

१. कदम चूमना, २. अधिक संख्या में,
३. कभी-कभी

आ के तोड़ेगी ख़िज़ां रंगीं नज़ारों का घमण्ड।
चार दिन का है चमन में यह बहारों का घमण्ड।।

शोरिशे[1] तूफ़ान थोड़ा और बढ़ने दीजिए।
डूब जायेगा किनारों पर किनारों का घमण्ड।।

यह हक़ीक़त गर्दिशे दौरां को भी मालूम है।
हश्र[2] तक क़ायम रहेगा चांद तारों का घमण्ड।।

पा के शह शैतानियत की सरहदे कश्मीर पर।
और बढ़ता जा रहा है फ़ितनाकारों का घमण्ड।।

हो के गुज़रा है इधर से फिर कोई महमिल[3] नशीं।
आसमां छूने लगा फिर रेगज़ारों[4] का घमण्ड।।

मीरों ग़ालिब तो नहीं हैं, फिर भी ऐ हज़रत 'मयंक'।
रख दिया है तोड़कर हमने हज़ारों का घमण्ड।।

---

१. शोर, २. कयामत का दिन, ३. परदा
४. रेगिस्तान

(रे)

जब ख़ूं में रह सके न रवानी तमाम उम्र।
फिर कैसे रह सकेगी जवानी तमाम उम्र।।

दिल का हर एक राज़ निगाहों ने कह दिया।
कैसे छुपेगी दिल की कहानी तमाम उम्र।।

सुनकर मेरी ग़ज़ल को जला है मेरा रक़ीब।
मैंने तो की है शोला बयानी तमाम उम्र।।

मुफ़लिस दहेज का जो न कर पाया इन्तिज़ाम।
डोली चढ़ी न बेटी सयानी तमाम उम्र।।

बन के तुम्हारी याद महकती रही सदा।
जूही, चमेली, रात की रानी तमाम उम्र।।

जिसके लिये ये जान और ईमान दे दिये।
उसने ही मेरी क़द्र न जानी तमाम उम्र।।

मैंने 'मयंक' जिसकी हर इक बात मान ली।
उसने ही मेरी बात न मानी तमाम उम्र।।

अश्क आंखों से ढलते रहे रात भर।
ग़म के पर्वत पिघलते रहे रात भर।।

करके वादा कोई सो गया चैन से।
करवटें हम बदलते रहे रात भर।।

रोशनी दे न पाये हमें यह चिराग़।
यूं तो कहने को जलते रहे रात भर।।

हमको पीने को इक भी न क़तरा मिला।
दौर पर दौर चलते रहे रात भर।।

आबरू क्या बचायेंगे गुलशन की वह।
ख़ुद जो कलियां मसलते रहे रात भर।।

रात भर चांदनी से वो लिपटे रहे।
और हम हाथ मलते रहे रात भर।।

हसरतें दिल में घुट घुट के मरती रहीं।
और जनाज़े निकलते रहे रात भर।।

हिज्र[१] में नींद उनको भी आई नहीं।
छत पै हम भी टहलते रहे रात भर।।

जाने क्यों तीरगी के 'मयंक' अज़दहे[२]।
रोशनी को निगलते रहे रात भर।।

---

१. विछोह, २. अजगर

(ड़े)

पहले अपने आप से लड़।
फिर दुश्मन पर भारी पड़।।

उतना तनावर होगा पेड़।
जितनी गहरी होगी जड़।।

वही कहेगा अच्छा शेर।
फ़न पर होगी जिसकी पकड़।।

गुलशन गुलशन फूल खिले हैं।
मेरे चमन में क्यों पतझड़।।

दौलत, औरत और ज़मीन।
यह सब हैं झगड़े की जड़।।

छोड़ दे मेरा साथ 'मयंक'।
अब मत मेरे पीछे पड़।।

ख़ुद से पहले नाता तोड़।
फिर तू रब से रिश्ता जोड़।।

इक दिन सबको मरना है।
इस सच से मत मुंह को मोड़।।

जो भी आया मेरे मुक़ाबिल।
उसके पंजे दिए मरोड़।।

अबके बहारों ने तो ख़ूं का।
क़तरा-क़तरा लिया निचोड़।।

हम ही नहीं है तनहा मुफ़लिस।
हम जैसे हैं कई करोड़।।

मुस्तक़बिल की फ़िक्र है लेकिन।
माज़ी से मत हाल[१] को जोड़।।

मुझपे "मयंक" इलज़ाम न रखिए।
वरना दूंगा भांडा फोड़।।

---

१. आज, वर्तमान

(ज़े)

पुरशिसे ग़म को हमारी आयेंगे बन्दा नवाज़।
और जीने की दुआ दे जाएंगे बन्दा नवाज़।।

इस यकीं के साथ मैं जाता हूं उनकी बज़्म में।
अपने बन्दे पर करम फ़रमाऐंगे बन्दा नवाज़।

ये कहां मुमकिन है हमसे फेर लें अपनी निगाह।
अपने बन्दे को ज़रूर अपनाऐंगे बन्दा नवाज़।।

जो भटकते फिर रहे हैं ज़िन्दगी की राह में।
राह पर इक दिन उन्हें भी लाऐंगे बन्दा नवाज़।।

हर्फ़[१] फिर आ जाऐगा बन्दा नवाज़ी पर "मयंक"।
हम ग़रीबों को अगर ठुकराऐंगे बन्दा नवाज़।।

---

१. आंच

गीत बिना सूना है साज़।
बोलो क्या है इसका राज़।।

दुनिया तक क्यों पहुंची बात।
जब तू था मेरा हमराज़।।

जिसका हो अंजाम बुरा।
कौन करे उसका आग़ाज़।।

हर मोमिन का फर्ज़ यही है।
पांच वक़्त की पढ़े नमाज़।।

इश्क ने चलकर राहे वफ़ा में।
हुस्न को बख़्शा है एजाज़।।

उनकी बज़्म में लेकर पहुंची।
मुझको तख़ैयुल[१] की परवाज़।।

अपनी ग़ज़ल में लाओ 'मयंक'।
मीरो ग़लिब के अंदाज़।।

---

१. सोच

(सीन)

हो न जिसे चाहत का पास।
कौन करे उस पर विश्वास।।

दूर बहुत है मुझसे लेकिन।
फिर भी रहता है वह पास।।

बेहतर उसका मुस्तक़बिल।
बेहतर जिसका है इतिहास।।

शहर में तेरे सब प्यासे हैं।
कौन बुझाये मेरी प्यास।।

सबकी आखों में आंसू हैं।
चेहरा चेहरा आज उदास।।

छोड़ दूं कैसे इस दुनिया को।
कैसे ले लूं मैं सन्यास।।

सुनी सुनाई बातों पर।
करो मयंक न तुम विश्वास।।

ऐसे पल का करो क़यास।
जिसमें न हो कोई भी दास।।

इश्क़ो मुहब्बत प्यार वफ़ा।
कब मुफ़लिस को आते रास।।

आओ मुझसे ले लो सीख।
कहता है सबसे इतिहास।।

जिससे देश की हो पहचान।
पहनेंगे हम वही लिबास।।

भीड़ को देख के लगता है।
महलों से बेहतर बनवास।।

खारे जल का दरिया हूं।
कौन बुझाये मेरी प्यास।।

छत पर देखके उनको 'मयंक'।
चांद का होता है आभास।।

(शीन)

ज़ख़्मे दिल को क्यों न हो आख़िर नमकदां[१] की तलाश।
दर्द के पहलू किया करते हैं दरमां[२] की तलाश।।

नाखुदा तुझको मुबारक हो ये माहौले सुकूत[३]।
मेरी किश्ती को रहा करती है तूफ़ां की तलाश।।

फिर बहारों ने परिस्तारे[४] जुनूं[५] से छेड़ की।
दश्ते[६] वहशत[७] को है फिर मेरे गरेबां की तलाश।।

या ख़ुदा फिर कोई पैदा हो सदाक़त[८] का अमीं[९]।
एक मुद्दत से निगाहों को है इंसां की तलाश।।

मेरी नज़रें ढूंढती हैं इक रुख़े ताबां[१०] मगर।
दिल के हर गोशे को है शम ए फ़रोज़ां[११] की तलाश।।

रख सके महफ़ूज़ जो सहने चमन की आबरू।
गुंचा-ओ-गुल को है ऐसे इक निगहबां की तलाश।।

ज़ख़्मे दिल, ज़ख़्मे जिगर से क्या ग़रज़ उनको 'मयंक'।
उनके हर तीरे नज़र को है रगे-जां[१२] की तलाश।।

---

१. नमक रखने वाला, २. दवा, ३. खामोशी
४. पूजने वाले, ५. पागलपन, ६. जंगल
७. पागलपन, ८. सच्चाई, ९. सरक्षंक
१०. चमकने वाला, ११. भड़कने वाला
१२. ज़िन्दगी देने वाली रग

न होती अगर आपकी यह नवाज़िश।
तो ख़ुशियों की होती कहां हम पे बारिश।।

जो हंस हंस के सहते हैं जोरो सितम को।
वो अश्कों की करते नहीं हैं नुमाइश।।

ये मिट्टी के घर टूट जायेंगे इक दिन।
चलो हम बनायें दिलों में रिहाइश।।

अगर पार करनी हैं दुश्वार राहें।
तो पावों में आने न दो अपने लग़ज़िश।।

बिक़ाऊ हो मुन्सिफ़ तो इन्साफ़ मुश्किल।
करें आप कितने भी दावा-ओ-नालिश।।

ज़रा मुस्कुरा कर इधर देख लीजे।
यही इल्तिजा है यही है गुज़ारिश।।

'मयंक' इतना तो मेरे दिल को यक़ीं है।
कि पूरी करेगा कोई मेरी ख़्वाहिश।।

(स्वाद)

भर के जब उसने दिया जामे ख़ुलूस।
और रंगीं हो गई शामे ख़ुलूस।।

हो जहां मतलब परस्तों का हुजूम।
कौन लेता है वहां नामे ख़ुलूस।।

मुझको देखो मैं हूं इक ज़िन्दा मिसाल।
मुझसे वाबस्ता है अंजामे ख़ुलूस।।

ज़िद में आकर कर दिया मुझको तबाह।
और क्या देता वो इनआमे ख़ुलूस।।

आप समझें या न समझें ऐ 'मयंक'।
ज़िन्दगी देती है पैग़ामें ख़ुलूस।।

दिल पे गुज़रा है कोई क्या हादसा कल रात ख़ास।
सुब्हे दम ही आ गए जो मुझसे करने बात ख़ास।।

इसलिए बैठा हूं आकर गोश-ए-तन्हाई में।
भेजने वाला है कोई मुझको पैग़ामात ख़ास।।

छेड़ता हूं इसलिए मैं जलवागाहे नाज़ में।
वक़्फ़ है तेरे लिए ही मेरे ये नग़मात ख़ास।।

मुझ से कोसों दूर रहती है बलाएं-नागहां[१]।
रख दिया जब से किसी ने मेरे सर पर हाथ ख़ास।।

जिसको देखो मुब्तलाए[२] दर्दे दिल है ऐ "मयंक"।
आम होते जा रहे हैं मेरे ये हालात ख़ास।।

---

१. अचानक मुसीबत, २. शमिल

(ज़्वाद)

जिससे भी मिलिए वही है ख़ुदग़रज़।
आजकल हर आदमी है ख़ुदगरज़।।

दूसरों की फ़िक्र किसको है यहां।
मतलबी कोई, कोई है ख़ुदग़रज़।।

ज़िन्दगी का उसने कब बदला चलन।
ख़ुदग़रज़ तो आज भी है ख़ुदग़रज़।।

अपने मतलब के लिए जीते हैं सब।
हर किसी की ज़िन्दगी है ख़ुदग़रज़।।

हम कहें कैसे किसी से ऐ "मयंक"।
जो अदा है आपकी, है ख़ुदग़रज़।।

आशिक़ी बेलौस[1], उलफ़त, बेग़रज़।
कौन करता है मुहब्बत बेग़रज़।।

हम हैं क़ायल उनके ही किरदार के।
वह जो करते हैं इनायत बेग़रज़।।

लब पे आता ही नहीं हर्फ़े[2] सवाल।
आदमी वह है निहायत बेग़रज़।।

क्या कहें जब मुद्दआ कोई नहीं।
कर रहे हैं तेरी ख़िदमत बेग़रज़।।

रहमतें उन पर बरसती हैं 'मयंक'।
जो कि करते हैं इबादत बेग़रज़।।

---

१. बग़ैर मतलब के, २. शब्द

(तो)

कैसे कह दूं मैं बुजुर्गों का है फ़रमाना ग़लत।
जो समझकर भी न समझें उनको समझाना ग़लत।।

उस सितमगर की समझ में यह न आयेगा कभी।
जो हैं ठुकराये हुए उनको है ठुकराना ग़लत।।

भरके अपने आंसुओं को इशरतों के थाल में।
लेके उनके पास हम पहुंचे हैं नज़राना ग़लत।।

देखना जो चाहते हैं हमको रोते ज़ार ज़ार।
ऐसे लोगों से बहर सूरत है याराना ग़लत।।

इस क़दर बेगानगी छाई हुई है ऐ 'मयंक'।
लग रहा है मुझको हर इक जाना पहचाना ग़लत।।

देख ले ऐ आसमां मेरी बिसात[1]।
ले गयी मुझको कहां मेरी बिसात।।

क्या है मक़्सद पहले ये ज़ाहिर करो।
पूछ न फिर तुम मियां मेरी बिसात।।

हो जहां दुश्मन मोहब्बत के वहां।
मैं ज़बां खोलूं, कहां मेरी बिसात।।

ले के मेरा इम्तहाने आशिक़ी।
देखिए ऐ मेहरबां मेरी बिसात।।

जा के मंज़िल पे ही दम लूंगा "मयंक"।
मैं जवां हूं और जवां मेरी बिसात।।

---

१. औकात

(ज़ोय)

जब तक बालों[1] पर महफ़ूज़।
हम हैं सलामत घर महफ़ूज़।।

सर को उठाकर चलने वाले।
कितने दिन तक सर महफ़ूज़।।

बर्फ़ गिरी है ऐवानों[2] पर।
लेकिन है छप्पर महफ़ूज़।।

सूफ़ी हो या शैख़ो बिरहमन।
किसकी है चादर महफ़ूज़।।

घर में 'मयंक' अब जान का ख़तरा।
घर से मगर बाहर महफ़ूज़।।

---

१. पंख, २. महल

शक्ल में गुल की शरारे अलहफ़ीज़।
यह बहारों के नज़ारे अलहफ़ीज़।।

बहरे ग़म की उफ़ रे यह गहराइयां।
और उस पर तेज़ धारे अलहफ़ीज़।।

हम बहुत महफ़ूज़ थे मंझधार में।
आ गए बहकर किनारे अलहफ़ीज़।।

जिनका पेशा रहज़नी था कल तलक।
हैं वो अब रहबर हमारे अलहफ़ीज़।।

वह जो बदख़्वाही[१] में माहिर हैं 'मयंक'।
ख़ैर ख़्वाह हैं अब हमारे अलहफ़ीज़।।

---

१. बुरी इच्छा रखने वाला

(ऐन)

आ गई लेने को मर्गे नागहानी[1] अलविदा।
अलविदा ऐ चार दिन की ज़िन्दगानी अलविदा।।

उनकी उलफ़त ने मुझे फिर मुस्कुराहट बख़्श दी।
अच्छा अब होंटों की मेरे नौहा-ख़्वानी[2] अलविदा।।

हसरतों ने ख़ाना-ए-दिल में मेरे ले ली जगह।
अलविदा उम्मीदे शौक़े शादमानी अलविदा।।

खिल गए होठों पे मेरे फिर तबस्सुम के गुलाब।
अलविदा ऐ मेरे अश्कों की रवानी अलविदा।।

अब कहां हैं पहले जैसे इश्क़ के जलवे 'मयंक'।
अलविदा ऐ शोरिशे[3] दौरे जवानी अलविदा।।

---

१. अचानक मौत, २. मरसिया पढ़ने वाला,
३. शोरगुल

ग़म का यूं करती रही इज़हार परवाने से शम्म।
रात भर रोई लिपटकर अपने दीवाने से शम्म।।

गर मिटानी है तुम्हे सहने हरम की तीरगी।
जाके ऐ शेख़े हरम ले आओ बुतख़ाने से शम्म।।

डर है मुझको जल न जाए ख़ारो ख़स का आशियां।
दूर रखता हूँ इसी बाइस मै काशाने से शम्म।।

अपना चेहरा भी मुझे अब तो नज़र आता नहीं।
ले गया कोई उठा कर आइना ख़ाने से शम्म।।

पूछिए मत आरिज़े तांबां की ताबांनी मयंक।
हो गई बेनूर उसके बज़्म में आने से शम्म।।

(ग़ैन)

जिस घड़ी जल जायेंगे दिल के चिराग़।
ख़ुद ब ख़ुद हो जायेंगे रोशन दिमाग़।।

आयेगा गुलशन में जब जाने बहार।
दिल चमन का हो उठेगा बाग़ बाग़।।

मसलहत[१] उसकी है क्या जाने वही।
दे दिया इंसां को जो रब ने दिमाग़।।

क्या पता उसका बतायें हम तुम्हें।
अपना जब मिलता नहीं हमको सुराग़।।

शामे ग़म मेरी चराग़ां हो गई।
जल रहे हैं मेरी पलकों पर चराग़।।

हंस रहे हैं क्यों गुनाहों पर मेरे।
वह कि जिनका भी है दामन दाग़ दाग़।।

मोतक़िद हम तो सभी के हैं 'मयंक'।
'मीर' हों, 'मोमिन' हों 'ग़ालिब' हों कि 'दाग़'।।

---

१. नीयत-चाहत

तुम बुझा दो नफ़रतों का हर चराग़।
फूंक देंगे वरना सारा घर चराग़।।

पहले घर के ताक़ पर रक्खो दिया।
फ़िर जलाओ तुम मज़ारों पर चराग़।।

गर न उठ्ठे नफ़रतों की आंधियां।
होंगे रौशन प्यार के घर घर चराग़।।

देखने में नूर का पैकर तो है।
ज़हनियत के हैं मगर कमतर चराग़।।

कैसे समझाएं नई तहज़ीब को।
कुमकुमों से लाख हैं बेहतर चराग़।।

मानते हैं वक़्त है शब का "मयंक"।
हम जलाते हैं मगर दिनभर चराग़।।

(फ़े)

है रक़ीबों का जहां मेरे खिलाफ़।
तुम न होना मेहरबां मेरे खिलाफ़।।

रच रहे हैं शाज़िशों पर शाज़िशें।
ये ज़मीनो-आसमां मेरे ख़िलाफ़।।

जिनके मुंह में डाल दी मैंने ज़बां।
वो ही खोलैंगे ज़बां मेरे खिलाफ़।।

अलमदद ऐ मालिके कौनों मकां।
हो गया है इक जहां मेरे ख़िलाफ़।।

रोज़े महशर सच बताओ ऐ "मयंक"।
तुम भी दोगे क्या बयां मेरे ख़िलाफ़।।

देख लेंगे आप अगर मेरी तरफ़।
होगी फिर सबकी नज़र मेरी तरफ़।।

अंजुमन में आपने क्या कह दिया।
देखता है हर बशर मेरी तरफ़।।

अज़मतें क्यों कर न चूमेंगी क़दम।
हैं सभी अहले हुनर मेरी तरफ़।।

उसकी जानिब देखती हैं मंज़िलें।
और यह गर्दे सफ़र मेरी तरफ़।।

हैं मुख़ातिब दूसरों से बज़्म में।
देखते हैं वह मगर मेरी तरफ़।।

मैंने भी सींचा है ख़ूं से गुलसितां।
फेंकिये कुछ तो समर मेरी तरफ़।।

क्यों करूं मैं फ़िक्रे मुस्तक़बिल 'मयंक'।
आप आ जायें अगर मेरी तरफ़।।

(क़ाफ़)

शौक़ में यह शौक़ की हद से गुज़र जाने का शौक़।
दरहक़ीक़त शौक़ है यह एक दीवाने का शौक़।।

हो गई बाज़ार में रुसवाइयों की इन्तिहा।
आप अब तो छोड़ दीजे उनके घर जाने का शौक़।।

नाम पर मेहरो वफ़ा के रात भर जलते रहे।
कितना इबरत ख़ेज़ है यह शम्अ परवाने का शौक़।।

वह कशिश दे दी है तूने ज़िन्दगी को ऐ ख़ुदा।
छोड़ कर दुनिया को तेरी किसको है जाने का शौक़।।

जो बशर चेहरे के दाग़ों से रहा नाआशना।
क्या करेगा पाल कर वह आइना ख़ाने का शौक़।।

कमसिनी में प्यार के चक्कर में मत पड़िये 'मयंक'।
आप तो फ़रमाइये बस खेलने खाने का शौक़।।

जिनसे मिलने का है मुझको इश्तियाक़[1]।
क्यों उड़ाते हैं वही मेरा मज़ाक़।।

आइए और मेरे दिल से पूछिए।
कट रही है किस तरह शामें फ़िराक़।।

जल उठीं यादों की शम्में जल उठीं।
हो गये फिर घर के रौशन ताक़-ताक़।।

वो मिले क़सदन सरे रह या कि फिर।
ये मोहब्बत है कि हुस्ने इत्तफ़ाक़।।

ख़ानों-ख़ानों में बंटी अंगनाइयां।।
मेरे घर वालों का उफ़ रे ये निफ़ाक़[2]।।

मेरे दामन पर गिरा कर अश्के ग़म।
मत उड़ा ए चश्में नम मेरा मज़ाक़।।

मुझको दीवाना समझकर ए "मयंक"।
आप भी मेरा उड़ाते हैं मज़ाक़।।

---

१. शौक़, २. अनबन

(काफ़)

छाई हुई है गर्दे सफ़र दूर दूर तक।
आता नहीं है कुछ भी नज़र दूर दूर तक।।

उनके यहां तो जश्ने चरागां है चार सू।
जलते नहीं चिराग़ इधर दूर दूर तक।।

राही को तपती धूप में राहत जो दे सके।
ऐसा नहीं है कोई शजर दूर दूर तक।।

टपकाता कौन गुज़रा है आंखों से खूने दिल।
बिखरे हुए हैं लाल-ओ-गुहर दूर दूर तक।।

आने को इक मुक़ाम पे आते हैं ज़लज़ले।
होता मगर है इनका असर दूर दूर तक।।

आंगन जो बांटना हो तो चुपचाप बांट लो।
पहुँचेगी वरना इसकी ख़बर दूर दूर तक।।

तामीर का ये दौर है, हम कैसे मान ले।
पेशे नज़र हैं जबकि खंडर दूर दूर तक।।

इस ज़ाविये से उगता है सूरज भी आजकल।
दिखता नहीं है नूरे सहर दूर दूर तक।।

जीने की जिसको कोई भी ख़्वाहिश न हो 'मयंक'।
ऐसा नहीं है कोई बशर दूर दूर तक।।

उठायें जुल्म कब तक और झेलें सख़्तियां कब तक।
लबों पर दोस्तो! मजबूर के ख़ामोशियां कब तक।।

ज़माना पेट भरने के लिए क्या क्या नहीं करता।
इसे नाकों चने चबवाऐंगी यह रोटियां कब तक।।

तेरे बन्दे टके के भाव में नीलाम होते हैं।
बता इंसां के जिस्मों की लगेंगी बोलियां कब तक।।

चलेंगे कब तलक मुफ़लिस के अरमानों पे बुलडोज़र।
कि महलों के लिए कुर्बान होंगी ख़ोलियां कब तक।।

सरे बाज़ार यूं कब तक बिकेंगे यह जवां लड़के।
सुहागन डोलियां बनती रहेंगी अर्थियां कब तक।।

बढ़ो और सीना-ए-दुश्मन में बढ़कर घोंप दो ख़ंजर।
यूं ही पहने हुए बैठे रहोगे चूड़ियां कब तक।।

यहां दैरो हरम के नाम पर नफ़रत के शोलों को।
हवा देती रहेंगी दोस्तो यह कुर्सियां कब तक।।

नहीं जिनको मयस्सर सर छुपाने के लिए छप्पर।
खड़ी करते रहेंगे दूसरों की कोठियां कब तक।।

उठो और उठके बतला दो ज़रा औक़ात तुम अपनी।
'मयंक' इस दौर की सुनते रहोगे घुड़कियां कब तक।।

(गाफ़)

आइना दिखलायें तो हमसे बिगड़ जाते हैं लोग।
हाथ धोकर फिर हमारे पीछे पड़ जाते हैं लोग।।

ज़िन्दगानी का सफ़र भी किस क़दर दिलदोज़[१] है।
राह में मिलते हैं और मिल कर बिछड़ जाते हैं लोग।।

अलअमां[२] शेख़ों बरहमन की नवाज़िश अलअमां।
इक ज़रा सी बात पर आपस में लड़ जाते हैं लोग।।

जो न समझाने से समझें कौन समझाये उन्हें।
आदतन भी अपनी, अपनी ज़िद पर अड़ जाते हैं लोग।।

यह ज़रूरी तो नहीं हों ज़ुल्फ़े जानां के असीर।
ख़ुद लगाई बंदिशों में, भी जकड़ जाते हैं लोग।।

नफ़रतों की आंधियां को हम कहें तो क्या कहें।
ऐ मुहब्बत तेरे चलते भी उजड़ जाते हैं लोग।।

क्या करूं मजबूर हूं मैं अपनी आदत से 'मयंक'।
नुक़ताचीनी पर मेरी अकसर उखड़ जाते हैं लोग।।

---

१. दिल दुखाने वाली, २. अल्लाह की पनाह

हो गया है मुझसे हर इक जाना पहचाना अलग।
देखकर हालत मेरी तुम भी न हो जाना अलग।।

शम्अ से जब रह नहीं सकता है परवाना अलग।
कैसे रह सकता है तुझसे तेरा दीवाना अलग।

इस क़दर वीरानगी है मयकदे में इन दिनों।
जाम से मीना अलग है ख़ुम[१] से पैमाना अलग।।

आप इन महलों को लेकर जायेंगे आख़िर कहां।
हम बना लेंगे चमन में अपना काशाना[२] अलग।।

यूं तो वाबस्ता हैं दोनों जिन्दगानी से मगर।
उनका अफ़साना अलग है मेरा अफ़साना अलग।।

मैं पिया करता हूं अक्सर चश्मे साक़ी से शराब।
और रिन्दों से है मेरा ज़ौक़े रिन्दाना अलग।।

एक रब्ते ख़ास है पीरे-मुग़ा[३] से ऐ 'मयंक'।
हम बना सकते हैं वरना अपना मयख़ाना अलग।।

---

१. मटका, २. घर, ३. शराब बांटने वाला बुजुर्ग

तारीकियों से ख़ौफ़ सा खाने लगे हैं लोग।
दिन में भी अब चिराग़ जलाने लगे हैं लोग।।

यह दौरे इरतिक़ा[१] भी तन्ज़्ज़ुल[२] से कम नहीं।
तहज़ीब का मज़ाक़ उड़ाने लगे हैं लोग।।

इन्सानियत का जिन में कोई शाएबा[३] न था।
तुरबत पे उनकी फूल चढ़ाने लगे हैं लोग।।

हर सम्त ख़लफ़्शार[४] है, हर सम्त है फ़साद।
अपने लहू में ख़ुद ही नहाने लगे हैं लोग।।

गुज़री हुई रुतों की सुनाकर कहानियां।
कुछ और दिल का दर्द बढ़ाने लगे हैं लोग।।

औरों के घर जला के सियासत के नाम पर।
तारीकियों[५] को, घर की, मिटाने लगे हैं लोग।।

इज़हारे शौक़ उनसे करूं किस तरह 'मयंक'।
अंजामे आशिक़ी से डराने लगे हैं लोग।।

---

१. तरक्की, २. बरबादी, ३. अक्स,
४. बेइन्तजामी, ५. अंधेरों

शहरों-शहरों ख़ौफ़ का आलम-घबराये घबराये लोग।
अम्न के लम्हे ढूंढ रहे हैं सदियों के ठुकराये लोग।।

लौटे हैं एहसास की किरचें लेकर अपने दामन में।
जब जब शीशे का दिल लेकर पत्थर से टकराये लोग।।

सबको पता है बाढ़ आयेगी घर भी यक़ीनन डूबेंगे।
फिर भी साहिल पर बैठे हैं बस्ती नई बसाये लोग।।

जाने क्यों है ऐसा आलम, ज़िन्दा दिलों की बस्ती में।
अपने कांधों पर फिरते हैं अपनी लाश उठाये लोग।।

रोज़े-अज़ल[१] से रोज़े-अबद[२] तक जिसका सानी कोई नहीं।
ढूंढ रहे हैं उस हस्ती का साया कुछ पगलाये लोग।।

आग की लपटों में तो पहले जश्न मनाया होली का।
घर आंगन जब ख़ाक हुआ तो पानी लेकर, आये लोग।।

ज़िन्दा लोगों को नहीं हासिल, चाहत की इक किरन 'मयंक'।
लेकिन क़ब्रों पर बैठे हैं प्यार के दीप जलाये लोग।।

---

१. दुनिया की शुरूआत का दिन
२. दुनिया की समाप्ति का दिन

(लाम)

तर्जुमाने ज़िन्दगानी है ग़ज़ल।
आपकी मेरी कहानी है ग़ज़ल।।

जिसकी ख़ुश्बू से मुअत्तर है अदब।
वह महकती रात रानी है ग़ज़ल।।

ग़म की चादर ओढ़कर बैठे हैं जो।
उनको ख़ुशियों की सुनानी है ग़ज़ल।।

जो न रख पायें ग़ज़ल की आबरू।
ऐसे लोगों से बचानी है ग़ज़ल।।

यूं तो दिलकश है हर इक सिनफ़े सुख़न।
फ़िक्रोफ़न की राजरानी है ग़ज़ल।।

'मीर', 'मोमिन', 'ग़ालिब'-ओ-'फ़ैज़'-ओ 'फ़िराक़'।
इन के फ़न से जावदानी है ग़ज़ल।।

जो 'मयंक' अब साहबे दीवान है।
उसकी शोहरत की निशानी है ग़ज़ल।।

मेरे हमनशीं मेरे हमनवा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।
तुझे दोस्ती का है वास्ता मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

कहीं फ़ितनाकारों की धूम है कहीं रहज़नों का हुजूम है।
ये नया नया सा है रास्ता मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

रहे आशिक़ी से हूं बेख़बर कहां ज़ेर है कहां है ज़बर।
है मेरे सफ़र की ये इब्तिदा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

न तो राह रौ कोई राह में न तो मंज़िलें हैं निगाह में।
न तो राह में कोई नक़्शे पा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

मैं क़दम न पीछे हटाऊंगा, मुझे ज़िद है बढ़ता ही जाऊंगा।
मुझे छोड़ दे सरे राह या मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

न किसी को चलने का शौक़ है न वो जोश है न वो ज़ौक़ है।
मैं करूं तो किससे ये इल्तिजा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

कोई ख़िज़्र[१] रह नहीं राह में मैं चलूं तो किसकी पनाह में।
तू ही बन के अब मेरा रहनुमा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

तुझे लेके पहुंचूंगा मैं वहां, जहां अम्न है जहां है अमां।
कोई कह रहा है ये बारहा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

हो ख़ुशी का जादा[२] कि राहे ग़म मेरा साथ दे तू बहर क़दम।
मुझे छोड़कर न 'मयंक' जा, मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

---

१. रास्ता दिखाने वाला, २. रास्ता

(मीम)

राह के पत्थर को ठोकर से हटा देते हैं हम।
जब कोई हद से गुज़रता है सज़ा देते हैं हम।।

तंग आकर मौत को भी ख़ुदकुशी करनी पड़े।
लीजिये हालात ही ऐसे बना देते हैं हम।।

ऐ बुते काफ़िर इसी में है अगर तेरी ख़ुशी।
ले तेरे क़दमों पे सर अपना झुका देते हैं हम।।

आंख में आंसू हैं फिर भी ऐ अनीसे[१] ज़िन्दगी।
दिल तेरा रखने की ख़ातिर मुस्कुरा देते हैं हम।।

शम्अ रोती है जलाकर जिनको अपनी बज़्म में।
उन पतंगों को मगर दादे-वफ़ा[२] देते हैं हम।।

शायरी क्या चीज़ है जो यह समझते ही नहीं।
ऐसे ना-अहलों[३] को महफ़िल से उठा देते हैं हम।।

देखते हैं रश्क से हमको फ़रिश्ते भी 'मयंक'।
जब ख़ुलूसे दिल से दुश्मन को दुआ देते हैं हम।।

---

१. दोस्त, २. तारीफ, ३. नाक़ाबिल

शम्अ ने जांबाज़ रक्खा अपने परवाने का नाम।
आप भी रख दीजिये कुछ अपने दीवाने का नाम।।

बस अभी आये अभी लेने लगे जाने का नाम।
तुमको जाना था तो क्यों तुमने लिया आने का नाम।।

हम गदाओं[१] को भी अपनी ग़ैरतों[२] का पास[३] है।
क्यों किसी के सामने लें हाथ फैलाने का नाम।।

बाद मरने के रसाई[४] है जमाले-यार[५] तक।
ज़िन्दगी है इश्क़ में हद से गुज़र जाने का नाम।।

रहती दुनिया तक ज़माना जिसको दुहराता रहे।
इस क़दर दिलचस्प रख दो मेरे अफ़साने का नाम।।

मस्त आंखों से वो अपनी जाम छलकाते रहे।
किस तरह लेता कोई फिर होश में आने का नाम।।

पी के नज़रों से अगर सरशार[६] हो जाते 'मयंक'।
फिर न लेते हम कभी भूले से पयमाने का नाम।।

---

१. भीख मांगने वाला, २. आत्मसम्मान, ३. ख़्याल
४. पहुंच, ५. यार की खूबसूरती, ६. भरा हुआ

पत्थर को अगर कहिये भगवान बना दें हम।
हैवां को मगर कैसे इंसान बना दें हम।।

जम्हूर की ताक़त का अंदाज़ा नहीं तुमको।
जब चाहें गदाओं[1] को सुलतान बना दें हम।।

खूं दे के शहीदों ने सींचा है चमन अपना।
किस दिल से इसे यारो वीरान बना दें हम।।

तरकीब कोई ऐसी ऐ काश निकल आए।
जिससे कि मुहब्बत को ईमान बना दें हम।।

हल करके हर इक मुश्किल, मुश्किल के असीरों की।
आसानी से जीने का सामान बना दें हम।।

इस दौरे कशाकश का इतना ही तक़ाज़ा है।
मिल जुल के हर इक मुश्किल आसान बना दें हम।।

तौफ़ीक़ ख़ुदा दे तो दीवां[2] को 'मयंक' अपने।
अशआर के फूलों का गुलदान बना दें हम।।

---

१. मांगने वाली, २. दीवान

छोड़कर ऐसा अपना असर जायें हम।
रोये दुनिया हमें जब गुज़र जायें हम।।

काम ऐसा कोई भी न कर जायें हम।
लोग उंगली उठायें जिधर जायें हम।।

हम ही हम आयें तुमको नज़र हर तरफ़।
टूटकर इस तरह कुछ बिखर जायें हम।।

कोशिशें कर रहे हैं यही रात दिन।
खाइयां बुग़्ज़ो[१] नफ़रत की भर जायें हम।।

तज़किरा हर ज़बां पर हमारा रहे।
अपनी कोशिश है वह काम कर जायें हम।।

यह मुहब्बत में बिल्कुल मुनासिब नहीं।
उठके महफ़िल से तश्ना-नज़र[२] जायें हम।।

कोई मुश्किल नहीं है संवरना 'मयंक'।
वह संवारे अगर तो संवर जायें हम।।

---

१. जलन, २. प्यासी नज़र

(नून)

ढूंढ के लाओ वह इंसान।
मुर्दे में जो डाले जान।।

आओ चलें उस रस्ते से।
जिससे गुज़रे लोग महान।।

हिन्दू मुस्लिम हों या सिक्ख।
सबका लहू है एक समान।।

अपनों पर जो करते हैं।
मत कहिये उसको एहसान।।

अगले पल की नहीं ख़बर।
लेकिन बरसों का सामान।।

देता है पैग़ामे मुहब्बत।
मेरा धर्म तिरा ईमान।।

ढूंढो चाहे जितना 'मयंक'।
मिलना मुश्किल है इंसान।।

दोस्त कहके हमने जिसको भी पुकारा है मियां।
बस उसी ने पीठ में ख़ंजर उतारा है मियां।।

वह वतन पर मिट गये और यह मिटा देंगे वतन।
जानते हो किस तरफ़ मेरा इशारा है मियां।

दूर तक पानी ही पानी है मगर प्यासे हैं लोग।
ज़िन्दगी खारे समुन्दर का नज़ारा है मियां।।

वह फ़क़त दो गज़ ज़मीं में क़ैद होकर रह गया।
जो ये कहता था कि ये सब कुछ हमारा है मियां।।

लालची मां बाप से वह कब बग़ावत कर सका।
बस इसी ख़ातिर तो वह अब तक कुंआरा है मियां।।

जो मनाये खुल के ख़ुशियां दुश्मनों की जीत पर।
वह हमारा हो के भी दुश्मन हमारा है मियां।।

दूर कितनी भी हो मंज़िल तुम को जाना है 'मयंक'।
फिर किसी ने प्यार से तुमको पुकार है मियां।।

सितम तोड़े हैं क्या-क्या यह सितमगर भूल जाते हैं।
रगे जां के क़रीं[1] रख कर वो नश्तर भूल जाते हैं।।

किये थे अहदो-पैमां[2] जो शुरू ए इश्क़ में हम से।
दिलायें याद क्या उनको जो अकसर भूल जाते हैं।।

शिकायत मैं करूं तो क्या करूं इस ख़ुश्क मौसम से।
बरसने वाले बादल भी मेरा घर भूल जाते हैं।।

ये उनका ज़हन है कैसा ये उनकी याद है कैसी।
बनाया उनको रहबर किसने रहबर भूल जाते हैं।।

निगाहों में मेरी ताज़ीम[3] के क़ाबिल वही हैं जो।
चलाये उन पे किसने कितने पत्थर भूल जाते हैं।।

मुख़ातिब मुस्कुरा कर जब कोई होता है महफ़िल में।
कसे हैं कितने ताने उसने हम पर भूल जाते हैं।।

दिले-मुज़्तर[4] को तेरी याद आने ही नहीं देते।
हमेशा पी के हम दो चार साग़र भूल जाते हैं।।

शिकायत मत करो उनसे कोई वादा ख़िलाफ़ी की।
अरे यह भूलने वाले हैं अकसर भूल जाते हैं।

खनक सिक्के की पड़ती है 'मयंक' उनके जो कानों में।
सुख़न का क्या तक़ाज़ा है सुख़नवर भूल जाते हैं।

१. पास, २. वादा, ३. इज्जत, ४. बेचैन दिल

मैंने कहा कि आइयें, कहने लगे अभी नहीं।
आकर गले लगाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि कीजिये, जो भी हुआ वो दरगुज़र।
शिकवे गिले मिटाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा उदासियां चारों तरफ़ हैं ख़ेमा ज़न।
थोड़ा सा मुस्कुराइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि चार सू छाई हुई है तीरगी।
रुख़ से नक़ाब उठाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि तोड़िये शर्मो हया की बंदिशें।
मुझसे नज़र मिलाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि हूं अगर हर्फ़े ग़लत की तरह मैं।
मेरा निशां मिटाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा पड़ा हूं मैं मुद्दत से दर पे आपके।
बिगड़ी मेरी बनाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा बुझा सके जिसको न तेज़ तर हवा।
ऐसा दिया जलाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा 'मयंक' को देंगे सिला वफ़ाओं का।
इसका यक़ीं दिलाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

छोड़ के मन्दिर मस्जिद आओ वापस दुनियादारी में।
घर बैठे ही चैन मिलेगा बच्चों की क़िलकारी में।।

कैसे करें इज़हारे मुहब्बत दोनों हैं दुश्वारी में।
हम अपनी हुशियारी में हैं वह अपनी हुशियारी में।।

अच्छे दिनों में सब थे साथी, सबसे था याराना भी।
लेकिन मेरे काम न आया कोई भी दुश्वारी में।।

शहर में अपने प्रदूषण का यह आलम तौबा-तौबा।
बिक गया घर का सारा असासा[१] बच्चों की बीमारी में।।

पीने वालों की बातों को पीने वाला समझेगा।
तुमको क्या बतलायें ज़ाहिद[२] लुत्फ़ है क्या मयख़्वारी[३] में।।

आपकी चाहत के मैं सदक़े ऐसी बहारें आई हैं।
रंग बिरंगे फूल खिले हैं जीवन की फुलवारी में।।

हिर्सो हवस[४] की इस दुनिया में यह भी कम तो नहीं 'मयंक'।
उम्र हमारी जो गुज़री है गुज़री है ख़ुद्दारी में।।

---

१. दौलत, २. परहेजगार, ३. शराब पीना
४. लालच

बावफ़ा सिर्फ़ दो चार हैं।
वरना मतलब के सब यार हैं।।

वह फ़रिश्ते हों या आदमी।
आपके सब तलबगार हैं।।

इब्ने आदम हैं इस वास्ते।
फ़ितरतन हम गुनहगार हैं।।

शहरे ख़ूबां[१] के बाज़ार में।
हम तो बिकने को तैयार हैं।।

उन पे पत्थर चलाते हैं लोग।
वफ़्स के जो परस्तार हैं।।

बख़्श दें या सज़ा दें हमें।
आप मुंसिफ़ हैं मुख़्तार हैं।।

भूख से लड़खड़ाते हैं हम।
लोग कहते हैं मयख़्वार हैं।।

यह जहां एक स्टेज है।
और हम सब अदाकार है।।

ज़िन्दगी के चमन में 'मयंक'।
हर तरफ़ ख़ार ही ख़ार है।।

---

१. खूबसूरत

चलन से इनकिसारी के न कोसों दूर हो जाऊं।
करो तारीफ़ मत इतनी कि मै, मग़रूर हो जाऊं।।

मेरी राहों में दुनिया इसलिए पत्थर बिछाती है।
कि खाऊँ ठोकरें इतनी कि मै, माज़ूर हो जाऊं।।

कशिश वह चाहिए मुझको किसी के हुस्ने रंगीं की।
कि बज़्में नाज़ में जाने को मैं मजबूर हो जाऊं।।

ख़ुदारा बख़्श दीजे वह तिलिस्में[१] आशिक़ी मुझको।
कभी गुमनाम हो जाऊं कभी मशहूर हो जाऊं।।

शुआयें[२] घेर लें मुझको जो तेरे रू ए ताबा[३] की।
तेरे जलवों में ज़म[४] होकर सरापा नूर हो जाऊं।।

कहे इससे ज़ियादा और क्या आईना हस्ती का।
न ठुकरा इस क़दर मुझको कि चकनाचूर हो जाऊं।।

यही तो चाहते हैं ऐ 'मयंक' इस दौर के रहबर।
कि अपनी मंज़िले मक़सूद से मैं दूर हो जाऊं।।

---

१. जादूई, २. किरणें, ३. चमक,
४. घुल मिल कर

ये लाज़िम तो नहीं है साहिबें ईमान हो जायें।
मगर इतना ज़रूरी है कि हम इंसान हो जायें।।

गुनाहों के उभर आये हैं इतने दाग़ चेहरे पर।
अगर अब आइना देखें तो हम हैरान हो जायें।।

खड़े हैं इसलिए दर पर तेरे सफ़[१] में गदाओं[२] की।
हमारे हाल पर भी कुछ तेरे एहसान हो जायें।।

यक़ीनन बेमज़ा हो जायेगी फिर ज़िन्दगी उसकी।
अगर इंसान के पूरे सभी अरमान हो जायें।।

सुलझ जायें किसी सूरत जो उसके गेसुए पेचां।
तो सारे ज़िन्दगी के मरहले[३] आसान हो जायें।।

दिलों में जो उतर जाए वही इक शेर काफ़ी है।
जरूरी तो नहीं हम साहिबे-दीवान हो जायें।।

बताये क्या कोई जाकर उन्हें फिर मुद्दआ दिल का।
जो सब कुछ जान कर भी ऐ 'मयंक' अंजान हो जायें।।

---

१. क़तार, २. मांगने वाले, ३. मुश्किले

पहले जो बात थी वो आज नहीं।
क़ाबिले ज़िक्र यह समाज नहीं।।

सोच अपनी है फ़िक्र अपनी है।
ज़हनोंदिल पर किसी का राज नहीं।।

हाथ किससे मिलाये अब कोई।
दोस्ती का यहां रिवाज नहीं।।

तख़्त अपना है ताज अपना है।
हमको हासिल मगर स्वराज नहीं।।

यह मरज़ जान लेके जायेगा।
मौत का कोई भी इलाज नहीं।।

वो उगाते हैं फ़स्ल पर फ़स्लें।
उनके घर में मगर अनाज नहीं।।

पहले जैसे नहीं है अब तेवर।
हुस्न वालों का वह मिज़ाज नहीं।

ज़िन्दगी है तो जी रहे हैं 'मयंक'।
जीने लायक मगर समाज नहीं।।

कहती हैं कारगिल की शिलायें।
धन्य हैं यह शहीदों की मायें।।

चल के फिर बर्फ़ की वादियों में।
ख़ूं से दुश्मन के शोले बुझायें।।

जंग में कौन जीतेगा हम से।
ले के आये हैं मां की दुआयें।।

फिर हमें मात देने की सोचें।
वह वज़ीर अपना पहले बचायें।।

जो कि कुर्बां हुए सरहदों पर।
क़र्ज़ कैसे हम उनका चुकायें।।

दे रही हैं पयामे शहादत।
यह हिमाला से आती हवायें।।

पाक के रहनुमाओं से कह दो।
फ़ितनाकारी से अब बाज़ आयें।।

जिसकी कश्मीर पर हों निगाहें।
दोस्ती उससे कैसे निभायें।।

है 'मयंक' अपनी बस यह तमन्ना।
वक़्त पर देश के काम आयें।।

बारे ग़म हंसकर उठाना चाहता हूं।
ज़िन्दगी को मुंह दिखाना चाहता हूं।।

जिस्म पत्थर का मगर दिल मोम का हो।
एक बुत ऐसा बनाना चाहता हूं।।

इसलिए आया हूं बज़्में नाज़ में मैं।
आप को सुनना-सुनाना चाहता हूं।।

दिन गुज़रता है कहीं मेरा, कहीं शब।
मुस्तक़िल कोई ठिकाना चाहता हूं।।

ज़ायक़ा ग़म का बदलने के लिये मैं।
दो घड़ी अब मुस्कुराना चाहता हूं।।

अपनी नज़रों से गिराया जिसने मुझको।
उसको पलकों पर बिठाना चाहता हूं।।

जो मुक़द्दर में नहीं लिक्खा है उसने।
मैं 'मयंक' उसको ही पाना चाहता हूं।।

मुफ़लिसों से सवाल करते हैं।
पैसे वाले कमाल करते हैं।।

ज़िन्दगी दी हुई खुदा की है।
इसलिए देखभाल करते हैं।।

मरने वाले तो मर गये लेकिन।
जीने वाले कमाल करते हैं।।

गौहरे अश्क भर के दामन में।
ख़ुद को हम मालामाल करते हैं।।

दिल था जिसका वो ले गया उसको।
बेसबब हम मलाल करते हैं।।

उनके तेवर अरे मआज़-अल्लाह[१]।
जब भी हम अर्ज़े हाल करते हैं।।

मस्त रहते हैं अपनी धुन में 'मयंक'।
फ़िक्रे माज़ी न हाल[२] करते हैं।।

---

१. अल्लाह की पनाह, २. वर्तमान

दिल में मिरे अरमान बहुत हैं।
घर छोटा मेहमान बहुत हैं।।

सोच समझकर खेलिये दिल से।
आप अभी नादान बहुत हैं।।

हाल पे मेरे ऐ ग़मे-दौरां[1]।
तेरे भी एहसान बहुत हैं।।

कैसे हजूमे[2] ग़म से बचे दिल।
किश्ती इक तूफ़ान बहुत हैं।।

सूदो-ज़ियां[3] की इस दुनिया में।
सूद है कम नुक़सान बहुत हैं।।

हिज्र में मेरे तड़पे वह भी।
इसके भी इमकान[4] बहुत हैं।।

इनसे 'मयंक' अब बचकर रहिये।
हज़रते दिल शैतान बहुत हैं।।

---

१. सांसारिक दुःख, २. गमों की भीड़
३. नफा-नुकसान, ४. आसार

जो थोड़ी सी भी उर्दू जानते हैं।
बहरसूरत मुझे पहचानते हैं।।

वो अपने मासिवा बज़्में अदब में।
कहां औरों को शायर मानते हैं।।

वो ख़ुद को भी तो फटके और छानें।
हर इक को जो फटकते छानते हैं।।

वो कब बैठेंगे मिलकर दोस्तों में।
अलग जो अपनी चादर तानते हैं।।

कराओ मत वहां मेरा तआरुफ़।
जहां सब लोग मुझको जानते हैं।।

वो गिर जाते हैं हर इक की नज़र से।
जो सबको अपने से कम मानते हैं।।

'मयंक' उन से बड़ा कोई नहीं है।
जो ख़ुद को सबसे छोटा मानते हैं।।

आओ मिल जुलकर तअस्सुब के अंधेरां को मिटायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।
यह तक़ाज़ा प्यार का है ज़िन्दगी रोशन बनायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।

दीप वह रोशन करें जो कालिमायें दूर कर दें।
नफ़रतों के ग़म मिटाकर चाहतों को नूर भर दें।।
हों मुनव्वर जिनकी लौ से धुंधली धुंधली सी फ़िज़ायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।

जिनको आता ही नहीं हो आंधियों से ख़ौफ़ खाना।
कोई भी कोशिश करे आसां न हो जिनको बुझाना।।
ख़ुद करें जिनकी हिफ़ाज़त बढ़के तूफ़ानी हवायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।

जो भटक कर रास्ते गुमराहियों में खो गये हैं।
चलते चलते पांव जिनके और बोझल हो गए हैं।।
आओ उन भटके हुओं को राह मंज़िल की दिखायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।

जब हृदय और आत्मा में रोशनी का हो बसेरा।
कब तलक हमको डरायेगा अभावों का अंधेरा।।
ऐ 'मयंक' आओ कि हम यूं जश्ने दीवाली मनायें।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें।।

इस दौरे सियासत ने वो दिन भी दिखाये हैं।
घर अपने ही हाथों से लोगों ने जलाये हैं।।

उम्मीदे करम जिससे की हमने मुहब्बत में।
उसने ही सितम हम पर दिल खोल के ढाये हैं।।

इस शहर के बाशिन्दे ज़िन्दा हैं मगर फिर भी।
ख़ुद अपने जनाज़े को कांधों पे उठाये हैं।।

मासूमों को बख़्शी है कुछ यूं भी सुबुक-दोशी[१]।
लम्हों के सभी क़र्ज़े सदियों ने चुकाये हैं।।

यह काम रहा अब तक दुनिया के मुसव्विर[२] का।
कुछ नक़्श मिटाये हैं, कुछ नक़्श बनाये हैं।।

उम्मीद कभी अपनी बर-आई[३] न आएगी।
हम हैं कि मगर फिर भी उम्मीद लगाये हैं।।

भड़काये तअस्सुब[४] ने जो शोले अदावत के।
वह हमने 'मयंक' अपने अश्कों से बुझाये हैं।।

---

१. हल्के कांधे, २. तस्वीर खींचने वाला
३. पूरी होना, ४. नफ़रत

हो रहीं हैं फ़िक्रो फ़न की इसलिये रुसवाइयां।
जाहिलों के हाथ में है अंजुमन आराइयां।।

ढूंढने से भी नहीं मिलता हमें अपना वजूद।
हो गई हैं आज तन्हा और भी तन्हाइयां।।

पस्तियों को बस ज़रा अंगड़ाइयां लेने तो दो।
आके क़दमों पर गिरेंगी इनके फिर ऊंचाइयां।।

तू मिटाने को मिटा दे शौक़ से मेरा वजूद।
छोड़कर जाऊंगा फिर भी अपनी मैं परछाइयां।।

काविशें अपनी हैं जैसे एक बरसाती नदी।
अब ख़्यालों में समुन्दर की कहां गहराइयां।।

वह हमारे घर की हों या आपके ऐवान[१] की।
बट रही हैं ख़ाने ख़ाने में सभी अंगनाइयां।।

जिन पे लिक्खे थे क़सीदे 'मीर'-ओ-'ग़लिब' ने 'मयंक'।
अब कहां वह हुस्न और वह हुस्न की रानाइयां[२]।।

---

१. महल, २. जल्वे

जिस दिये में तेल है बाती नहीं।
रोशनी उससे कभी आती नहीं।।

ज़ख़्म भर जाते हैं दिल के एक दिन।
उम्र भर लेकिन कसक जाती नहीं।।

मौत जब देती है दस्तक द्वार पर।
फिर कोई सूरत नज़र आती नहीं।।

तुम जो मिल जाते तो मेरी ज़िन्दगी।
दर ब दर की ठोकरें खाती नहीं।।

मैं तो अपनाता हूं दुनिया को मगर।
फिर भी दुनिया मुझको अपनाती नहीं।।

दीजिये जितना भी चाहे ग़म मुझे।
अब तबीयत ग़म से घबराती नहीं।।

उसको जीने की दुआ मत दीजिये।
रास जिसको ज़िन्दगी आती नहीं।।

उसको होती ही नहीं मंज़िल नसीब।
ज़िन्दगी जो ठोकरें खाती नहीं।।

क़हक़हों की बज़्म में हूं मैं मगर।
फिर भी होंठों पर हंसी आती नहीं।।

आरज़ू जिसकी मुझे है ऐ 'मयंक'।
ज़िन्दगी वह मर्तबा[१] पाती नहीं।।

---

१. स्थान

अक़्ल कहती है कि हम अल्लाह वालों में रहें।
दिल ये कहता है, नहीं, ज़ुहरा-जमालों[१] में रहें।।

यूं तो मरने के लिये मरना है सबको एक दिन।
ऐसा कुछ कर जायें जो ज़िन्दा मिसालों में रहें।।

इसलिये करते हैं रोशन अपनी पलकों पर चिराग़।
तीरगी के दौर में भी हम उजालों में रहें।।

वह हमारा, हम हैं उसके, दोनों ही हैं उसके घर।
चाहे मस्जिद में रहें हम या शिवालों में रहें।।

दुनियादारी के हमें कुछ और भी तो काम हैं।
कब तलक उलझे हुये हम तेरे बालों में रहें।।

बख़्श दे ऐसा हुनर दोनों को ऐ मेरे ख़ुदा।
तज़किरों[२] में वह रहें और हम हवालों में रहें।।

उनकी बज़्मे नाज़ में कुछ मांगने जाते नहीं।
अपना मक़सद है कि बस उनके ख़यालों में रहें।।

मसअले हल होंगे कैसे ज़िन्दगी के ऐ 'मयंक'।
हम अगर उलझे हुये अपने सवालों में रहें।।

---

१. हसीनों, २. चर्चे

हमने आंसू बहुत बहाये हैं।
जब कहीं जाके मुस्कुराये हैं।।

साफ़ कुछ भी नज़र नहीं आता।
यक ब यक रोशनी में आये हैं।।

छोड़ दे ज़िन्दगी मेरा पीछा।
नाज़ तेरे बहुत उठाये हैं।।

इस दिखावे के दौर में हमने।
हर क़दम पर फ़रेब खाये हैं।।

भूल जाऊं मैं किस तरह उनको।
ज़हनो दिल पर जो मेरे छाये हैं।।

तेरी चाहत ने हौसला बख़्शा।
जब क़दम मेरे डगमगाये हैं।।

भूल जाऊं मैं कैसे उनको 'मयंक'।
जो मुसीबत में काम आये हैं।।

इस ज़िन्दगी को ले के बतायें कि क्या करें।
इस का हुज़ूर आप ही ख़ुद फ़ैसला करें।।

इस वास्ते ख़ता पे ख़ता कर रहे हैं हम।
कोशिश में हैं कि सुन्नते आदम अदा करें।।

इस कशमकश में आज भी हैं ऐ ख़याले यार।
तकमीले रस्मो राह कि तर्के वफ़ा करें।।

यह कह के हमने छोड़ दिया ज़िन्दगी का साथ।
कब तक हम अपने दर्द की यारो दवा करें।।

ढाने लगेगा जौरो सितम सुनके और भी।
जौरो सितम का उसके अगर हम गिला करें।।

ताबे हुज़ूर आप के ग़म भी ख़ुशी भी है।
मर्ज़ी में जो भी आये मुझे वह अता करें।।

अब दोस्ती का पहले सा आलम नहीं 'मयंक'।
अब दोस्तों से सोच समझकर मिला करें।।

ख़ुद से रक्खें न दूर दूर हमें।
यूं न रुसवा करें हुज़ूर हमें।।

हम वफ़ाओं में सबसे अव्वल हैं।
खा ही जायेगा यह ग़ुरूर हमें।।

जुर्म क्या है ये पहले बतलायें।
क़त्ल कीजे न बेक़सूर हमें।।

बेअदब हम कभी नहीं होते।
बात करने का है शऊर हमें।।

हम कहेंगे जो ख़ुद को आईना।
कर ही देगा वो चूर चूर हमें।।

जुस्तजू में तुम्हारी निकले हैं।
मिल ही जाओगे तुम ज़रूर हमें।।

बेवफ़ाओं की बेवफ़ाई ने।
कर दिया ग़म से चूर-चूर हमें।।

रोज़े अव्वल जो हमने पी थी 'मयंक'।
आज तक उसका है सुरूर हमें।।

हैं नज़र वाले सभी अहले नज़र कोई नहीं।
कह रहे हैं यह नज़ारे दीदावर कोई नहीं।।

कौन रखता है क़दम अब चाहतों की राह पर।
हूं तने तन्हा सफ़र में हमसफ़र कोई नहीं।।

अब किसी की बात पर आता नहीं हमको यक़ीं।
बात वाले सब हैं लेकिन, मोतबर[१] कोई नहीं।।

कैसे पायेगा कोई फिर आगही[२] की मंज़िलें।
है सफ़र में सारा आलम राह पर कोई नहीं।।

जी रहे हैं ज़िन्दगी ख़ाना बदोशों की तरह।
इन घरों की भीड़ में भी अपना घर कोई नहीं।।

ख़ैर हो यारब हमारे कारवाने ज़ीस्त की।
सबके सब रहज़न यहां हैं राहबर कोई नहीं।।

यूं तो हैं बर्बाद लाखों दौरे हाज़िर में 'मयंक'।
जिस क़दर बर्बाद मै हूं उस क़दर कोई नहीं।।

---

१. एतबार के काबिल, २. दूरअंदेशी

करम से उनके हम महरूम क्यों हैं।
ख़फ़ा हम से नहीं मालूम क्यों हैं।।

वफ़ादारी के सब क़ायल हैं फिर भी।
वफ़ाओं के निशां मादूम[१] क्यों हैं।।

ज़बां पर कोई पाबंदी नहीं है।
यहां फिर बेज़बां मज़लूम[२] क्यों हैं।।

सिला ख़िदमत का जब मिलता नहीं है।
हज़ारों आपके मख़दूम[३] क्यों हैं।।

न देखा आज तक जिसको किसी ने।
उसी के सब के सब महकूम[४] क्यों हैं।।

हमें मालूम है अहले सियासत।
बज़ाहिर इस क़दर मासूम क्यों हैं।।

मुहब्बत है 'मयंक' इक हर्फ़ लेकिन।
फिर इसके सैकड़ों मफ़हूम[५] क्यों हैं।।

---

१. छुये हुए, २. कमजोर, जुल्म सहने वाले
३. खादिम, सेवक, ४. आज्ञाकरी, ५. मानी

दर्द कुछ ऐसा बढ़ा ख़ुशहालियां कम हो गईं।
जब से मेरी आप से नज़दीकियां कम हो गईं।।

मां वही, ममता वही, बच्चा वही, झूला वही।
वक़्त के होंटों पे लेकिन लोरियां कम हो गईं।।

आपने बौने दरख़्तों से समर[१] तो ले लिये।
राहगीरों के लिए परछाइयां कम हो गईं।।

मैं समर वाले दरख़्तों की तरह जब झुक गया।
लोग यह कहने लगे ख़ुद्दारियां कम हो गईं।।

मासिवा[२] मेरे सभी के आशियां महफ़ूज़ हैं।
अब्र[३] के दामन में शायद बिजलियां कम हो गईं।।

चल 'मयंक' उठ चल बुलाती है तेरी मंज़िल तुझे।
आसमां भी साफ़ है और आंधियां कम हो गईं।।

---

१. फल, २. मेरे सिवा, ३. बादल

अंधेरों में कमी देते नहीं हैं।
चिराग़ अब रोशनी देते नहीं हैं।।

नसीमे सुब्ह के भी नर्म झोंके।
चमन को ताज़गी देते नहीं हैं।।

फ़क़त आता है इनको क़त्ल करना।
ये क़ातिल ज़िन्दगी देते नहीं हैं।।

हमें मालूम है उलफ़त के लम्हे।
सुकूने ज़िन्दगी देते नहीं हैं।।

अमीरों के दरे दौलत पे जाकर।
कभी हम हाज़िरी देते नहीं हैं।।

हमारे हौसलों की दाद वह भी।
कभी देते, कभी देते नहीं हैं।।

बदलते मौसमों के बदले तेवर।
ख़बर तूफ़ान की देते नहीं हैं।।

वो क्या बांटेंगे अपनी मुस्कुराहट।
जो औरों को ख़ुशी देते नहीं हैं।।

न जाने क्यों 'मयंक' अब दैरो काबा।
पयामे आशती[१] देते नहीं हैं।।

१. अमन का पैगाम

हम अगर होते नहीं तो यह जहां होता नहीं।
यह ज़मीं होती नहीं यह आसमां होता नहीं।।

आतिशे ग़म दिल में कब भड़के गुमां होता नहीं।
यह इक ऐसी आग है जिसमें धुआं होता नहीं।।

कुछ यहां होता नहीं कुछ भी वहां होता नहीं।
गर वजूदे ख़ालिके़ कौनो मकां होता नहीं।।

बात कुछ तो है जो उनकी मुझ पे है नज़रे करम।
बेसबब कोई किसी पर मेहरबां होता नहीं।।

खिलने से पहले ही उसको तोड़ ले जाता कोई।
दरमियाँ कांटों के गर गुन्चा जवां होता नहीं।।

एक वह दिन, नाम लेना भी था मेरा नागवार।
एक यह दिन है कि ज़िक्रे दीगरां होता नहीं।।

फिर ख़ुदा जाने तड़पकर किस पे गिरतीं बिजलियां।
गर मेरा शाख़े शजर पर आशियां होता नहीं।।

कौन जाने वह मिटा दे या बना दे ऐ 'मयंक'।
क्या है उस ज़ालिम के दिल में कुछ अयां होता नहीं।।

आ गये जब से वह निगाहों में।
फूल बिखरे हुये हैं राहों में।।

दूर रहता था मुझसे जो कल तक।
भर लिया आज उसने बांहो में।।

शहरे ख़ूबां[१] में बस गये वह भी।
जो कि रहते थे ख़ानक़ाहों[२] में।।

यूं तो जीना मुहाल था लेकिन।
ज़िन्दगी कट गई गुनाहों में।।

था वो जाहो-जलाल[३] क़ातिल का।
खलबली मच गई गवाहों में।।

तू सज़ा दे कि बख़्श दे हमको।
आ गये ले तेरी पनाहों में।।

एक मसनद के वास्ते ऐ 'मयंक'।
कितनी चशमक[४] है सरबराहों[५] में।।

---

१. हसीनाए, २. साधू संतों के रहने क जगह (मठ)
३. शानो शौकत, ४. खिचाव, ५. रहबर

ग़रीब ख़ाने को कब से सजाये बैठा हूं।
चले भी आओ कि पलकें बिछाये बैठा हूं।।

जो मेरी जान का दुश्मन है शहरे उलफ़त में।
उसी को ज़ीस्त का हासिल बनाये बैठा हूं।।

जहाने इश्क़ में जिसने भुला दिया मुझको।
उसी की याद में ख़ुद को भुलाये बैठा हूं।।

मुझे ये शर्म, कहीं ज़ब्त पर न आंच आये।
ख़ुशी के पर्दे में ग़म को छुपाये बैठा हूं।।

अंधेरी रात में इक तुरफ़ा[१] रोशनी के लिये।
चिराग़ पलकों पे अपनी सजाये बैठा हूं।।

सभी को देख लिया मैंने वक़्त पड़ने पर।
हर एक शख़्स को मैं आज़माये बैठा हूं।।

अज़ीज़ तर है मुझे इस क़दर मुहब्बत में।
ग़मे हबीब[२] को दिल से लगाये बैठा हूं।।

कहो ये बर्क़[३] से आये इसे जलाने को।
चमन में फिर से नशेमन[४] बनाये बैठा हूं।।

नहीं है जिसके करम का कोई जवाब 'मयंक'।
उसी के दर पे जबीं मैं झुकाये बैठा हूं।।

---

१. अजीब, २. महबूब, ३. बिजली,
४. घर, आशिया

शहर में इतनी जगह भी अब कहीं मिलती नहीं।
दफ़्न होने के लिये दो गज़ ज़मीं मिलती नहीं।।

कैसे कह दें मुश्तइल[१] हर एक के जज़बात हैं।
जब शिकन आलूद कोई भी जबीं मिलती नहीं।।

दश्ते-वहशत[२] की नवाज़िश अलहफ़ीज़ो[३] अल[४] अमां।
जेब साबित है तो साबित आस्तीं मिलती नहीं।।

गर यक़ीं मुझ पर नहीं तो आइनों से पूछ लो।
दिल हंसी मिलता है तो सूरत हसीं मिलती नहीं।

हम किसी के दूर रहने का गिला कैसे करें।
ज़िन्दगी अपनी भी जब अपने क़रीं[५] मिलती नहीं।।

वह जो शायर के ख़यालों को नया अंदाज़ दे।
शेर कहने के लिए ऐसी ज़मीं मिलती नहीं।।

बात क्या है जो मेरी अर्ज़े तमन्ना पर 'मयंक'।
जाने क्यों उनके लबों पर अब 'नहीं' मिलती नहीं।।

---

१. भड़कना, २. जुनून का हाथ,
३. ईश्वर हिफाजत करे,
४. ईश्वर अपनी पनाह में रखे
५. पास

रोज़ पीता हूं छोड़ देता हूं।
तौबा करता हूं तोड़ देता हूं।।

जब भी आती है हाथ में बोतल।
उसकी गर्दन मरोड़ देता हूं।।

जामे उलफ़त में दुख़्तरे-रज़[१] का।
क़तरा क़तरा निचोड़ देता हूं।।

जो मुहब्बत से हो नहीं लबरेज़।
जामो मीना वो फोड़ देता हूं।।

पी के चलता हूं जब भी राहों में।
रुख़ हवाओं का मोड़ देता हूं।।

जब भी होता हूँ मैं नशे में चूर।
ग़म के पंजे मरोड़ देता हूं।।

जाम टकरा के जाम से ऐ 'मयंक'।
टूटे रिश्तों को जोड़ देता हूं।।

१. अंगूर की बेटी

देख लीजे जो देखा नहीं।
ज़िन्दगी का भरोसा नहीं।।

ग़म की शिद्दत उसे क्या पता।
दिल कभी जिसका टूटा नहीं।।

आओगे ख़्वाब में किस तरह।
मुद्दतों से मैं सोया नहीं।।

जिसको फूलों से है उनसियत[१]।
वो कभी ख़ार बोता नहीं।।

देखिये मेरी मजबूरियां।
मैं जो चाहूं वो होता नहीं।।

आ के साहिल पे क्यों डूबते।
नाख़ुदा जो डुबोता नहीं।।

छोड़िये फ़िक्रे सूदो[२] ज़ियां[३]।
इश्क़ है इश्क़, सौदा नहीं।।

प्यार होता है ख़ुद ही 'मयंक'।
प्यार करने से होता नहीं।।

---

१. मुहब्बत, २. लाभ, ३. हानि

जो तिरंगे को करना नमन छोड़ दें।
उनसे कह दो वो मेरा वतन छोड़ दें।।

पंचशील और अंहिसा के हामी हैं हम।
क्यों खुलूसो वफ़ा के चलन छोड़ दें।।

'सूर', 'ग़ालिब', 'कबीरा' के वारिस हैं हम।
क्यों मुहब्बत के लिखना सुख़न छोड़ दें।।

शहरे क़ातिल में रहकर मुनासिब नहीं।
बांधना हम सरों से कफ़न छोड़ दें।।

हिन्द ग़ौरी के शोलों से डर जायेगा।
देखना आप ऐसे सपन छोड़ दें।।

ऐ 'मयंक' अब यही वक़्त की मांग है।
एक दूजे से रखना जलन छोड़ दें।।

वह उधर लड़खड़ाये हुये हैं, हम इधर लड़खड़ाये हुये हैं।
थोड़ी वह भी लगाये हुये हैं, थोड़ी हम भी लगाये हुये हैं।।

हाल पर अपने हम हंस रहे हैं, और ग़म को छुपाये हुये हैं।
हम से ज़िक्रे बहारां न करना, हम खिज़ां के सताये हुये हैं।।

दोनों जानिब खिंची हैं कमानें, कौन बनता है देखो निशाना।
वह भी महफ़िल में आये हुये हैं, हम भी महफ़िल में आये हुये हैं।

मयकदे में तो ताला पड़ा है, आप नज़रों से अपनी पिला दें।
आज मौसम भी भीगा हुआ है, और बादल भी छाये हुऐ हैं।।

साहिले दिल की आबादियों का, दोस्तो अब तो हाफ़िज़ ख़ुदा है।
इक तो तूफ़ान आया हुआ है, इक वो तूफ़ां उठाये हुये हैं।।

हम किसी के ख़ुलूसो वफ़ा का, क्या सिला दें खुलूसो वफ़ा से।
हम तो अपने ख़लूसों वफ़ा का, खुद जनाज़ा उठाये हुये हैं।।

ऐ 'मयंक' आज हर जाम तुझको, बावज़ू होके पीना पड़ेगा।
वाइज़े[१] मुहतरम मयकदे में, आज तशरीफ़ लाये हुये हैं।।

---

१. धर्म की शिक्षा देने वाला

मैंने कहा हो जलवागर, उसने कहा नहीं नहीं।
मैंने कहा मिला नज़र, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा ये श़ाम है, उसने कहा ये जाम है।
मैंने कहा तो जाम भर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा कहां मिलें, उसने कहा जहाँ कहें।
मैंने कहा बाम पर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा दिखा झलक, उसने कहा कब तलक।
मैंने कहा उम्रभर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा कि रुख़ इधर, उसने कहा हैं च्मतर।
मैंने कहा सब्रकर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा कि हो नज़र, उसने कहा कहां किधर।
मैंने कहा 'मयंक' पर, उसने कहा नहीं नहीं।।

(वाव)

शाख़ से करके अब जुदा मुझको।
ले चली है किधर हवा मुझको।।

जब खिज़ां ही मेरा मुक़द्दर है।
क्या बहारों से वास्ता मुझको।।

रहनुमा की मुझे ज़रूरत क्या।
रास्ता देगा रास्ता मुझको।।

देर तक लाश घर नहीं रखते।
यूं न गुलदान में सजा मुझको।।

मैंने अपनों पे एतबार किया।
इस ख़ता की मिली सज़ा मुझको।।

धूप, बरसात, सर्द मौसम की।
अब सताती नहीं अदा मुझको।।

रो रहा हूं सुकूने दिल को 'मयंक'।
यह वफ़ा का सिला मिला मुझको।।

खिला हुआ ये शगुफ़्ता[१] गुलाब रहने दो।
गिराओ रुख़ पे न अपने नक़ाब रहने दो।।

तुम अपने रुख़ पे परेशां करो न ज़ुल्फ़ों को।
ये जगमगाता हुआ आफ़ताब[२] रहने दो।।

नज़र झुका के यूं तुम मुझसे मुलतफ़ित[३] क्यों हो।
नज़र उठाओ ये शर्मो हिजाब रहने दो।।

झुकी झुकी सी निगाहों से मिल गया मुझको।
न दो सवाल का मेरे जवाब, रहने दो।।

कहीं न तोड़ दूं तौबा को अपनी मैं ज़ाहिद।
ख़ुदारा छेड़ो न ज़िक्रे शराब रहने दो।।

करें वो तुमको मुख़ातिब 'मयंक' महफ़िल में।
ये ख़्वाब ख़्वाब है, देखो न ख़्वाब रहने दो।।

---

१. खिला हुआ, २. खूबसूरत, ३. प्यार जाहिर

रोता हूं तो रोने दो।
दामन और भिगोने दो।।

मत आओ ख़्वाबों में मेरे।
मुझको चैन से सोने दो।।

तुमसे रोके नहीं रुकेगा।
जो होता है होने दो।।

तुम राहों में फूल बिछाओ।
उसको कांटे बोने दो।।

कब बहलेगा भूखा बच्चा।
चाहे जितने खिलौने दो।।

अपना बोझ अपने कांधों पर।
मुझको तन्हा ढोने दो।।

ख़ुद भी तो डूबेगा मांझी।
उसको नाव डुबोने दो।।

नींद की मारी इन आंखों को।
कुछ तो स्वप्न सलोने दो।।

पांव के छाले टपक रहे हैं।
सुइयां 'मयंक' चुभोने दो।।

(हे)

अपने गरेबां में झांके फिर मेरी ओर निहारे वह।
जिसने पाप कभी न किया हो पहला पत्थर मारे वह।।

गांधी के बेटे हैं फिर भी मौत हैं दुश्मन की ख़ातिर।।
लेकिन शर्त है पहले आकर मैदां में ललकारे वह।।

मुझको डर है ख़ुद अपनी ही नज़र न उसको लग जाये।
आईने में देख के जब भी अपना रूप संवारे वह।।

पैग़म्बर अवतार जहां में यूं ही जन्म नहीं लेते।
राह दिखाते सारे जग को बनकर चांद सितारे वह।।

हिम्मत की पतवार न छोड़े जो ग़म के तूफ़ानों में।
मंझधारों को चीर के लाता अपनी नाव किनारे वह।।

अपनी रहमत का यह साया सर पर उनके रहने दो।
वरना बंजारों की सूरत भटकेंगे बेचारे वह।।

जिसको पता है सारे जग का एक ही दाता है वो 'मयंक'।
छोड़ के रब, बन्दों के आगे क्योंकर हाथ पसारे वह।।

अरमानों का खंडर है मेरा ग़रीबख़ाना।
मायूसियों का घर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

कर तो लिया है वादा आने का तुमने लेकिन।
मालूम है किधर है, मेरा ग़रीबख़ाना।।

दो चार हो रहा हूं हर लम्हा हादसों से।
इक तुरफ़ा[1] दर्दे सर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

कहने को मिलकियत है मेरी ज़रूर लेकिन।
सौ आफ़तों का घर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

दो गाम पै है काबा दो गाम बुतक़दा है।
इक ऐसे मोड़ पर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

हालाते हाज़िरा का कुछ भी असर नही है।
दुनियां से बेख़बर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

अच्छे बुरे की इसको पहचान कुछ नहीं है।
मासूम इस क़दर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

बरबाद हो गया है फिर भी 'मयंक' सबसे।
मुझको अज़ीज़तर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

---

१. अजीब

(हम्ज़ा)

ले गया आंखों से मेरी ग़म ज़िया।
हो गई यूं रफ़्ता रफ़्ता कम ज़िया।।

ग़म की जिस दम बदलियां छा जायेंगी।
मयकदे को देगा जामे ज़म ज़िया।।

आपके बख़्शे हुये यह दाग़े दिल।
देते रहते हैं हमें पैहम ज़िया।।

इन सियह रातों का सीना चीरकर।
ऐ ज़माने देंगे तुझको हम ज़िया।।

क्यों मुहब्बत के चिराग़ों की 'मयंक'।
हो रही है आजकल मद्धम ज़िया।।

(ईऐ)

जला कर तूने जो शाख़े शजर बर्क़े तपां रख दी।
न जाने क्यों उसी पर हमने बुनियादे मकां रख दी।।

तेरे इन्कार ने तो छीन ली थी ताबे[१] गोयाई।
मगर इक़रार ने तेरे, मेरे मुंह में ज़बां रख दी।।

फ़साना तूने औरों का तो रक्खा रुबरु अपने।
उठाकर ताक़ पर लेकिन हमारी दास्तां रख दी।।

न तुमको दुश्मनी हमसे, न हमको दुश्मनी तुमसे।
ये किसने तेग़ नफ़रत की हमारे दरमियां रख दी।।

इबादत के लिए दैरो हरम का मैं नहीं क़ायल।
जो दर था लायक़े सजदा जबीं मैंने वहां रख दी।।

किये बेलौस सजदे जिसने तेरे आस्ताने पर।
उसी के तूने दामन में मता-ए-दो जहां रख दी।।

वो जिसकी गुफ़्तगू रस घोलती थी सबके कानों में।
उसी शीरीं बयां की काट कर तुमने ज़बां रख दी।।

न लड़ने पायें शेख़ो बर्हमन, इस वास्ते हमने।
बिना-ए-मयकदा[२] दैरो हरम के दरमियां रख दी।।

ये किसकी याद से रोशन 'मयंक' अपना है काशाना।
जलाकर मेरे दिल मे किसने शम्ए ज़ौफ़शां रख दी।।

---

१. बात करने की ताकत, २. मैकदे की बुनियाद

रंजो ग़म दर्दो अलम आहो फ़ुग़ां है ज़िन्दगी।
सैकड़ों उन्वान की इक दास्तां है ज़िन्दगी।।

जल रहे हैं ख़ारो ख़स उनका धुआं है ज़िन्दगी।
शाख़े गुल पर इक सुलगता आशियां है ज़िन्दगी।।

देखिये तो इक हुबाबे मौजे दरिया भी नहीं।
सोचिये तो एक बहरे बेकरां है ज़िन्दगी।।

फ़र्शे गेती पर फ़रिश्तों ने भी हिम्मत हार दी।
वह ग़मे दिल सोज़ वह बारे गिरां है ज़िन्दगी।।

हैं लबों पर सर्द आहें आंखों में आंसू भी है।
फिर भी जाने क्यों मेरी शोला फ़शां है ज़िन्दगी।।

मुफ़लिसी ने छीन ली हम से हमारी हर ख़ुशी।
पहले जो थी वो हमारी अब कहां है ज़िन्दगी।।

दर्दे कुलफ़त[१] से न घबराओ 'मयंक' इस दौर में।
सब्रो[२] इस्तक़लाल[३] का इक इम्तिहां है ज़िन्दगी।।

---

१. दुःख दर्द, २. सब्र, ३. सब्र

दोश[1] पर ज़ुल्फ़े सियह देखी जो लहराई हुई।
रह गई अपना सा मुंह लेकर घटा छाई हुई।।

कर दिया मशहूर उसको दोनों आलम में मगर।
उसकी शोहरत से ज़ियादा मेरी रुसवाई हुई।।

मुस्कुरा कर जब भी उलटी उसने चेहरे से नक़ाब।
दिल पे इक बिजली गिरी नागिन सी लहराई हुई।।

जल उठे पलकों पे जब भी तेरी यादों के चिराग़।
सुब्ह के मानिन्द रौशन शामे तन्हाई हुई।।

क्या सबा आई है होकर जलवा-गाहे-नाज़[2] से।
चल रही है किसलिये गुलशन में इतराई हुई।।

तोड़ दूं मैं अहदे तौबा पारसाई की क़सम।
तेरी आंखों की मिले जो मुझको छलकाई हुई।।

ख़ैरमक़दम[3] के लिये ख़ुद उठके वह आये 'मयंक'।
अंजुमन में इस क़दर मेरी पज़ीराई हुई।।

---

१. काँधे, २. हुस्न की महफिल, ३. स्वागत

यूं किसी ने ज़िन्दगी भर की कमाई छीन ली।
जैसे शायर के क़लम से रोशनाई छील ली।।

ख़्वाब ख़ुशियों के दिखाकर तोड़ डाले इस तरह।
जैसे बच्ची को नई गुड़िया दिलाई, छील ली।।

आपने ख़्वाबों में आकर हर ख़ुशी बख़्शी मगर।
छीनकर नींदें मेरी सारी ख़ुदाई छीन ली।।

आप ही बतलाइये यह भी कोई इंसाफ़ है।
चीज़ मांगे से अगर मिलने न पाई, छीन ली।।

शैख़ जी ने मयकदे में रिन्द की हर इक ख़ुशी।
देखिये ईमान की देकर दुहाई छीन ली।।

हम निभाते ही रहे सारे तकल्लुफ़ बज़्म में।
उस सितमगर ने मगर जो चीज़ भाई, छीन ली।।

क्या कहा यारी निभाना काम मुश्किल है 'मयंक'।
आपने तो बात मेरे लब पे आई छीन ली।।

जानिबे सहरा कि सूये[1] गुलसिंता ले जायेगी।
देखना है यह हवा हमको कहां ले जायेगी।।

अपना कोई बस नहीं आवारगी-ए-शौक़[2] पर।
हम वहीं जायेंगे हमको यह जहां ले जायेगी।।

वह सितम ढायेगी इक दिन यह सियासत आपकी।
छीनकर लोगों के मुंह से रोटियां ले जायेंगी।।

छोड़ दे ऐ नाख़ुदा हमको हमारे हाल पर।
जानिबे साहिल हमें मौजे रवां ले जायेगी।।

दोस्ती रखने की चाहत वह भी इस माहौल में।
देख लेना दुश्मनों के दरमियां ले जायेगी।।

जानता हूं क्या है मेरे चार तिनकों की बिसात।
फिर कोई आंधी उड़ाकर आशियां ले जायेगी।।

ऐ 'मयंक' अब तो हमारी हमसफ़र है आगही[3]।
जिस जगह मंज़िल है अपनी यह वहां ले जायेगी।।

---

१. तरफ, २. अवारापन, ३. दूरअंदेशी

तुमने जिसकी ज़िन्दगी पामाल[1] की।
दो इजाज़त उसको अर्ज़े हाल की।।

भर लिये दामन में अपने अश्के ग़म।
ज़िन्दगी यूं हमने मालामाल की।।

इश्क़ फिर फ़रमाइये क़िबला हुज़ूर।
फ़िक्र कीजे पहले आटे दाल की।।

मैं गुज़ारिश रहम की करता नहीं।
दो सज़ा मुझको मेरे आमाल[2] की।।

तोड़कर उड़ जायेगा इक दिन परिन्द।
बंदिशें जितनी हैं मायाजाल की।।

जंग में मां की दुआयें साथ हैं।
क्या ज़रुरत है मुझे अब ढाल की।।

कम से कम ही बैठ पाती हैं 'मयंक'।
पालकी में बेटियां कंगाल की।।

---

१. पैरों से कुचलना, २. कर्मो

बरसों ही तेरे ग़म की, की हमने पज़ीराई[१]।
तब जाके मुहब्बत में मेराजे-वफ़ा[२] पाई।।

जो प्यार के आंगन में दीवार खड़ी कर दे।
अल्लाह मुझे देना ऐसा न कोई भाई।।

दुनिया-ऐ-मुहब्बत का इंसाफ़ ज़रा देखो।
आंखों ने ख़ता की और इस दिल ने सज़ा पाई।।

ऐ दस्ते जुनूं अपना उलफ़त में ये आलम है।
हम एक तमाशा हैं दुनिया है तमाशाई।।

अब याद तुम्हारी भी पुर्सिश को नहीं आती।
कुछ और हुई तन्हा शामे ग़मे तन्हाई।।

आपस में झगड़ते हैं यह होशो ख़िरद[३] वाले।
तकरार नहीं करता सौदाई[४] से सौदाई।।

जब उसने सरे महफ़िल दीवाना कहा मुझे।
उलफ़त में हुई मेरी कुछ और भी रुसवाई।।

पोशीदा जिसे रक्खा मयख़्वारो से साक़ी ने।
चुपके से मेरी तौबा वह जाम उठा लाई।।

औरों की तरह हम भी परदेस में क्यों जायें।
हमको तो 'मयंक' अपनी रास आती है अंगनाई।।

---

१. आवभगत, २. वफा की बुलन्दी, ३. अक्ल
४. पागल व दीवाना

सिर्फ़ इतनी गुनहगार है ज़िन्दगी।
ज़िन्दगी की परस्तार है ज़िन्दगी।।

मौत की हर नफ़स मांगती है दुआ।
इस क़दर ख़ुद से बेज़ार है ज़िन्दगी।।

रो रही है ख़ुदा जाने किसके लिए।
जाने किसकी तलबगार है ज़िन्दगी।।

दौरे हाज़िर में जीना भी आसां नहीं।
और मरना भी दुश्वार है ज़िन्दगी।।

मत किसी से हिमायत की उम्मीद रख।
कौन किसका तरफ़दार है ज़िन्दगी।।

मैंने देखा है हर ज़ाविये[१] से इसे।
वाक़ई एक आज़ार[२] है ज़िन्दगी।।

हाथ पर हाथ रखकर जो बैठा रहे।
ऐ 'मयंक' उसकी बेकार है ज़िन्दगी।।

---

१. दृष्टिकोण से, २. दुखः

जहां जाओगे अय्यारी[1] मिलेगी।
मुहब्बत में अदाकारी मिलेगी।।

भले इंसांन के भी खूं में यारो।
लहू की शोबदाकारी मिलेगी।।

नई तहज़ीब के शहरों में अक्सर।
मुहब्बत की ही बीमारी मिलेगी।।

अना और ज़र्फ़ की बस्ती में जाओ।
वहीं लोगों में ख़ुद्दारी मिलेगी।।

हमेशा की तरह ऐ दोस्त तुझको।
यूंही मुझसे वफ़ादारी मिलेगी।।

जो चढ़ता है वह गिरता है अकसर।
बड़ों से यह समझदारी मिलेगी।।

'मयंक' इस शहर में रहना संभलकर।
यहां हर चीज़ बाज़ारी मिलेगी।।

---

१. मक्कारी

छोड़ के आई दुनिया सारी।
तुमसे अच्छी याद तुम्हारी।।

दिल में यूं है दर्द किसी का।
राख में जैसे इक चिंगारी।।

तुमको भी तो आती होगी।
गाहे माहे याद हमारी।।

बरसों से बैठा है यह दिल।
लेकर हसरत एक कुंआरी।।

तोड़ दूं तुझसे करके वादा।
ख़ुद से करूं कैसे ग़द्दारी।।

इश्क़ की लज़्ज़त उससे पूछो।
इश्क़ में जिसने उम्र गुज़ारी।।

इक दिन सबको मौत आयेगी।
आज इसकी कल उसकी बारी।।

कोई 'मयंक' है आने वाला।
आज की रात है हम पर भारी।।

आपकी जब से मुझ पर नज़र हो गई।
ज़िन्दगी मुस्तक़िल दर्दे सर हो गई।।

आते आते कोई रूक गया शामे ग़म।
रोते रोते किसी की सहर हो गई।।

कहते कहते शबे ग़म हमीं सो गये।
दास्ताने अलम मुख़्तसर हो गई।।

फेरते ही किसी के निगाहें करम।
दिल की दुनिया ही ज़ेरो-ज़बर[1] हो गई।।

ज़ख़्म खाते रहे अश्क पीते रहे।
ज़िन्दगी अपनी यूं ही बसर हो गई।।

देखकर मुझको साबित क़दम राह में।
सारी दुनिया मेरी हमसफ़र हो गई।।

जब भी देखी तबस्सुम[2] की लब पर लकीर।
इन्तिक़ामन मेरी आंख तर हो गई।।

अब के पूछेंगे वह क्यों ख़फ़ा हैं 'मयंक'।
फिर मुलाक़ात उनसे अगर हो गई।।

---

१. ऊंच-नीच, २. मुस्कान

क्या पीरी क्या दौरे जवानी।
चार दिनों की राम कहानी।।

घाट पे जब भी पापी पहुंचा।
गंगा हो गई पानी पानी।।

लाख इसे समझाया लेकिन।
दिल ने की अपनी मनमानी।।

घूम रहे हैं कासा[१] लेकर।
क्या जनता क्या राजा रानी।।

तेरी यादें ऐसी महकें।
रात में जैसे रात की रानी।।

तर्के मुहब्बत तौबा तौबा।
मत करना ऐसी नादानी।।

डूब गई जब दिल की किश्ती।
थम गई मौजों की तुग़यानी।।

मुझको 'मयंक' ऐसा लगता है।
मर गया सबकी आंख का पानी।।

---

१. भीख का कटोरा

ख़ुश अदा है ख़ुश बयां है ज़िन्दगी।
वाक़ई उर्दू ज़बां है ज़िन्दगी।।

चाहिये इक उम्र कहने के लिये।
दास्तां दर दास्तां है ज़िन्दगी।।

हाथ पर जो हाथ रखकर बैठ जाये।
बस उसी की रायगां[१] है ज़िन्दगी।।

है सुबुक[२] से भी सुबुकतर यह कभी।
और कभी बारे गिरां है ज़िन्दगी।।

पत्थरों से दूर ही रखिये इसे।
एक शीशे का मकां है ज़िन्दगी।।

मेहरबानी इसकी फ़ितरत में नहीं।
फिर भी मुझ पर मेहरबां है ज़िन्दगी।।

रूह का अपना कोई भी घर नहीं।
लामकानी[३] का मकां है ज़िन्दगी।।

मौत क्या समझेगी इसको ऐ 'मयंक'।
ज़िन्दगी की क़द्रदां है ज़िन्दगी।।

---

१. बेकार, २. कमजोर,
३. जिसका कोई मकान न हो

यह दिखावे की सभी हमदर्दियां जल जायेंगी।
पोंछिये मत मेरे आंसू उंगलियां जल जायेंगी।।

वह तपिश है आशियां वालों के सीने में निहां[1]।
आह खींचेंगे अगर ये, बिजलियां जल जायेंगी।।

मत जलाओ नफ़रतों के सर्द मौसम में अलाव।
इक भी चिंगारी उड़ी तो बस्तियां जल जायेंगी।।

इस हक़ीक़त से हैं शायद बेख़बर ऊंचाइयां।
कौन पूछेगा इन्हें गर पस्तियां जल जायेंगी।।

यह सुलगता हुस्न लेकर मत उतरना झील में।
आग पानी में लगेगी मछलियां जल जायेंगी।।

शोला बनकर खिल रहे हैं सहने गुलशन में गुलाब।
लब अगर रक्खेंगी इन पर तितलियां जल जायेंगी।।

उसकी यादों से निकल कर होश में आ बावरी।
वरना चूल्हे में तवे पर रोटियां जल जायेंगी।।

गर यूंही चढ़ती रही परवान यह रस्मे जहेज़।
सेज पर चढ़ने से पहले डोलियां जल जायेंगी।।

अपने तेवर हम बदल दें यह नहीं मुमकिन 'मयंक'।
बल न जायेंगे अगरचे[2] रस्सियां जल जायेंगी।।

---

१. छुपे हुए, २. यद्यपि

जब से उनकी निगाहे करम हो गई।
ज़िन्दगी और भी मुहतरम हो गई।।

जब भी उभरी तबस्सुम की लब पर लकीर।
इन्तिक़ामन मेरी आंख नम हो गई।।

जिस जगह भी मिले तेरे नक़्शे क़दम।
एहतरामन जबीं मेरी ख़म हो गई।।

भर लिये जब भी दामन में अश्कों के फूल।
ज़िन्दगी रश्के बाग़े इरम हो गई।।

क्या रक़ीबों की काम आ गईं साज़िशें।
क्यों इनायत तेरी मुझ पे कम हो गई।।

कोई जुंबिश नहीं कोई हरकत नहीं।
ज़िन्दगी अपनी तस्वीर ग़म हो गई।।

करके वादा न आया कोई जब 'मयंक'।
ज़िन्दगी मेरी अश्कों में ज़म हो गई।।

अगर ख़्वाहिशे ख़ुदनुमाई[१] न होती।
ख़ुदा ने ये दुनिया बनाई न होती।।

जो आहों की उन तक रसाई[२] न होती।
तो क़ैदे क़फ़स[३] से रिहाई न होती।।

न मिटते कभी नफ़रतों के अंधेरे।
अगर शम्ए उलफ़त जलाई न होती।।

उधर से भी होता जो इक़रारे उलफ़त।
तो इतनी मेरी जग हंसाई न होती।।

अगर भांप लेते उदू[४] के इरादे।
वतन पर मुसीबत ये आई न होती।।

भटकते ही रहते रहे ज़िन्दगी में।
मशीयत[५] की गर रहनुमाई न होती।।

ये शेख़े हरम बढ़ के साग़र उठाते।
अगर दरमियां पारसाई न होती।।

हमारे ही दम से है क़ायम ये दुनिया।
अगर हम न होते ख़ुदाई न होती।।

'मयंक' आदमी को फ़रिश्ता समझता।
अगर उसमें कोई बुराई न होती।।

---

१. खुद को दिखाने की इच्छा, २. पहुँच
३. पिंजरा, ४. दुश्मन, ५. ख़ुदा की मर्ज़ी

रोशन तसव्वुरात[1] की जब रात हो गई।
तारीकियों[2] में नूर की बरसात हो गई।।

हम हादसा कहें कि कहें हुस्ने इत्तिफ़ाक़।
उनसे जो रास्ते में मुलाक़ात हो गई।।

हुस्ने तसव्वुरात की यह वुस्अतें[3] तो देख।
जलवों की कायनात मेरे साथ हो गई।।

वादा ख़िलाफ़ियों का यही इक जवाब था।
यह बात हो गई, कभी वह बात हो गई।।

दिल नज़्र कर दिया तो कभी जान नज़्र की।
मेरी हयात हुस्न की सौग़ात हो गई।।

तेरी तलाश और मुसाफ़िर की जुस्तजू।
दिन हो गया कहीं तो कहीं रात हो गई।।

दिल में रहा न कोई तअस्सुब[4] का शायबा[5]।
जब से 'मयंक' इश्क़ मेरी ज़ात हो गई।।

---

१. ख्यालात, २. अँधेरे, ३. फैलाव,
४. साम्प्रायदिक, ५. झलक

(बड़ी इऐ)

मेरी कहानी तेरी दास्तां से मिलती है।
कहीं तो जाके ज़मीं आसमां से मिलती है।।

तड़पना बर्क़े तपां का अरे मआज़-अल्लाह[१]।
सूकूं की खोज में जब आशियां से मिलती है।।

है ज़िक्र जिसका किताबों में दीं[२] की वह मेराज[३]।
मेरी जबीं[४] को तेरे आस्तां से मिलती है।।

ये मेरा अज़्मे-जवां[५] ही तो है कि हर मंज़िल।
जो आ के ख़ुद ही मेरे कारवां से मिलती है।।

ये जानते हैं कि है हातिमों का हातिम कौन।
हमें पता है कि दौलत कहां से मिलती है।।

किसी भी और ज़बां में है वह मिठास कहां।
जो चाशनी हमें उर्दू ज़बां से मिलती है।।

---

१. अल्लाह खैर करे, २. ईमान, ३. ऊँचाई
४. पेशानी, ५. जवां हौसला

सरहदों पर क़त्ल कितने जंगजू[१] हो जाऐंगे।
हां मगर ज़िल्ले इलाही सुर्ख़रू[२] हो जाऐंगे।।

फिर शिकारों से उठेगा कुलकुले मीना[३] का शोर।
फिर वही रंगी नज़ारें चारसू हो जाऐंगे।।

बस उसी दम रूक सकेगी अपनी ये तेग़े रवां।
बेसरोपा[४] सरहदों पे जब उदू हो जाऐंगे।।

फिर बना देंगे उसे हम वादिए जन्नत निशां।
दामने[५] कोहों[६] दमन[७] फिर मुश्क बू हो जाऐंगे।।

फ़ितनागरों का अगर वो साथ देना छोड़ दें।
दोस्ती के चाक दामन ख़ुद रफ़ू हो जाऐंगे।।

क़त्ल जब हो जाऐंगे सब दुश्मनाने मयकदा।
क़ैद से आज़ाद फिर जामों सुबू हो जाऐंगे।।

फ़ितनाकारों की मदद जो भी करेंगे ऐ "मयंक"।
अन्जुमन में अम्न की बेआबरू हो जाऐंगे।।

---

१. सिपाही, २. कामयाब, ३. सुराही
४. बगैर सर और पांव के, ५. दामन,
६. पहाड़, ७. वादी (कश्मीर की वादी)

ऐ इश्क़ मेरी ख़ुद्दारी का मेयार[१] गिरे तो गिर जाये।
उस दर पे झुकाऊंगा सर को दस्तार[२] गिरे तो गिर जाये।

हर हाल में उस हरजाई से रक्खूंगा मरासिम[३] रक्खूंगा।
दुनिया की निगाहों में मेरा किरदार गिरे तो गिर जाये।।

जिस शहर में यूसुफ़ के सानी पैसों से खरीदे जाते हैं।
उस शहर मे जिन्से-उलफ़त[४] का बाज़ार गिरे तो गिर जाये।।

हम इसको बचाने की ख़ातिर सदमात कहां तक झेलेंगे।
तहज़ीबो तमद्दुन[५] की अपनी दीवार गिरे तो गिर जाये।।

दौलत के लिये हर इक शायर जब फ़न की तिजारत करता है।
फिर उसकी बला से ग़ज़लों का मेयार गिरे तो गिर जाये।

अल्लाह की मर्ज़ी होगी तो पहुंचेगा सफ़ीना साहिल तक।
तूफ़ां में हमारे हाथों से पतवार गिरे तो गिर जाये।।

दामाने-सदाक़त[६] जीते जी छोड़ा न कभी छोड़ेंगे 'मयंक'।
क़ातिल की हमारी गर्दन पर तलवार गिरें तो गिर जाये।।

---

१. स्तर, २. पगड़ी, ३. सम्बन्ध, रस्मो राह,
४. प्यार की सामग्री, ५. तहजीब,
६. सच्चाई का दामन

ख़ामोश समुन्दर ठहरी हवा, तूफ़ां की निशानी होती है।
डर और ज़ियादा लगता है जब नाव पुरानी होती है।।

इक ऐसा वक़्त भी आता है, आंखों में उजाले चुभते हैं।
हो रात मिलन की अंधियारी तो और सुहानी होती है।।

अनमोल बुज़ुर्गों की बातें, अनमोल बुज़ुर्गों का साया।
उस चीज़ की क़ीमत मत पूछो जो चीज़ पुरानी होती है।।

वैसे तो मुझे ऐ शेख़े हरम, पीने का नहीं है शौक़ मगर।
इक साग़रे मय पी लेता हूं, जब दिल पे गिरानी होती है।।

इस क़हरे इलाही का यारो, लफ़ज़ों में बयां है नामुमकिन।
जब बाप के कांधों को मय्यत बेटे की उठानी होती है।।

जो औरों के काम आते हैं मर कर भी अमर हो जाते हैं।
दुनिया वालों के होंटों पर उनकी ही कहानी होती है।।

हो जायेगी ठंडी रोने से यह आग तुम्हारे दिल की 'मयंक'।
होती है नवाज़िश अश्कों की तो आग भी पानी होती है।।

समुन्दर को लहर, नदिया को धारा कौन देता है।
भंवर में नाख़ुदाओं को किनारा कौन देता है।।

ये तेरी शाने रहमत है वगरना तेरी दुनिया में।
सहारा देने वालों को सहारा कौन देता है।।

बहुत मासूम हैं अहले चमन भी और निगहबां भी।
पता फिर बर्क़े[1] सोज़ां को हमारा कौन देता है।।

वजूद उसका नहीं है चार सू तो ऐ नज़र वालो।
मेरी आंखों को फिर रंगीं नज़ारा कौन देता है।।

सज़ा मैं काट कर आया हूं अपने जुर्मे अव्वल की।
सज़ा फिर जुर्मे अव्वल की दुबारा कौन देता है।।

कहीं से मिल ही जाती है हमें दो वक़्त की रोटी।
फ़लक से तोड़कर हमको सितारा कौन देता है।।

'मयंक' इस कारोबारे इश्क़ में, मालूम है हमको।
मुनाफ़ा कौन देता है ख़सारा[2] कौन देता है।।

---

१. जलाने वाली बिजली, २. नुकसान

रहने में अब डर लगता है।
जाने कैसा घर लगता है।।

हाथ करो बेटी के पीले।
चौखट से अब सर लगता है।।

जाने क्यों अपना ही चेहरा।
औरों से बेहतर लगता है।।

भीगा भीगा चेहरा चेहरा।
दामन दामन तर लगता है।।

फूल जिसे कहती है दुनिया।
मुझको वह पत्थर लगता है।।

गांव की हालत ज्यों की त्यों है।
रोज़ मगर दफ़्तर लगता है।।

अन्दर से वह मोम की सूरत।
बाहर से पत्थर लगता है।।

वह ग़म जिसको कोई न पूछे।
मेरे गले आकर लगता है।।

हमको 'मयंक' आंसू का क़तरा।
पलकों पर गौहर[१] लगता है।।

१. मोती

रुख़े रोशन की ताबांनी[१] यहां भी है वहां भी है।
किसी की जलवा-अफ़शानी[२] यहां भी है वहां भी है।।

वो तर्के इश्क़ पर नादिम[३], मैं तर्के इश्क़ पर गिरयां[४]।
बहर सूरत पशेमानी यहां भी है वहां भी है।।

किसी की राह वह देखें, और उनकी राह मैं देखूं।
बराबर की परेशानी यहां भी है वहां भी है।।

मैं जाऊं उनके घर कैसे, वो आयें मेरे घर कैसे।
ज़माने की निगहबानी यहां भी है वहां भी है।।

लगी है दोनों ही जानिब दिलों में आग नफ़रत की।
सियासत की ये शैतानी यहां भी है वहां भी है।।

फ़िजाये ज़िन्दगी बदली न बदलेगी कभी अपनी।
मुहब्बत की ग़ज़ल-ख़्वानी[५] यहां भी है वहां भी है।।

किनारे कैसे ले जायें सफ़ीना हम 'मयंक' अपना।
हवाये-तुन्दो[६] तूफ़ानी यहां भी है वहां भी है।।

---

१. रोशनी, २. प्रर्दशन, ३. शर्निदा, ४. रोना
५. ग़ज़ल पढ़ना, ६. तेज हवा

आपके हमराह हर इक ऐश का सामां चले।
मैं चलूं तो साथ मेरे ग़म का इक तूफ़ां चले।।

बस यूंही रहना मेरे ग़म में बराबर के शरीक।
कारोबारे इश्क़ जब तक दीदा-ए-गिरयां[१] चले।।

हर किसी के ज़हन पर छाई हो जब शैतानियत।
कैसे फिर इंसानियत की राह पर इंसां चले।।

ज़िन्दगी भर वह मुझे नश्तर चुभोते ही रहे।
बाद मरने के वो देने दर्द का दरमां[२] चले।।

जो भी पाया हमने दुनिया से उसी को दे दिया।
छोड़कर दुनिया को तेरी वे सरो-सामां[३] चले।।

मैं अगर रूक जाऊं तो रूक जाये दुनिया का निज़ाम।
मैं चलूं तो साथ मेरे गर्दिशे-दौरां[४] चले।।

वक़्ते रुख्सत भी सुबुक-सर[५] हो न पाऐ ऐ 'मयंक'।
ले के दुनिया भर का अपने सर पे हम एहसां चले।।

---

१. रोने वाली आँखे, २. दवा, ३. असबाब
४. दिनों का चक्कर, ५. कमज़ोर

यूं तो हर इक शख़्स का ईमान होना चाहिये।
शर्त यह है वह मगर इंसान होना चाहिये।।

हो जहां शिव के अज़ानें और ख़ुदा की आरती।
वह इबादतगाह हिन्दुस्तान होना चाहिये।।

हो न अब कोई क़लम पाबन्दे मज़हब दोस्तो।
हर कवी शायर, मियां रसखान होना चाहिये।।

इस तरफ़ मुस्लिम पढ़ें गीता-ओ-रामायण, पुराण।
हिन्दुओं का राहबर क़ुरआन होना चाहिये।।

गीत कितने भी लिखे शायर मगर यह ध्यान दें।
एकता हर गीत का उन्वान[१] होना चाहिये।।

मोमिनों[२] के ज़हन में सूरत कन्हैया की रहे।
हिन्दुओं के क़ल्ब[३] में रहमान होना चाहिये।।

ऐ 'मयंक' इस हिन्द से बढ़कर कोई मज़हब नहीं।
हिन्द पर हर शख़्स को क़ुर्बान होना चाहिये।।

---

१. शीर्षक, २. मुस्लिम, ३. दिल

न जाने कैसे परिन्दे उड़ान भूल गये।
ज़मीन याद रही आसमान भूल गये।।

हज़ार बार वो आये ग़रीबख़ाने पर।
मिला जो रुतबा तो मेरा मकान भूल गये।।

है कैसा शहर का माहौल हमको क्या मालूम।
तुम्हारी याद में सारा जहान भूल गये।।

जो अपने घर में लड़कपन से सुनते आये थे।
बड़े हुये तो वो उर्दू ज़बान भूल गये।।

हमारी बात उन्हें याद कैसे रह पाती।
वक़ार पाके जो अपना बयान भूल गये।।

खड़े हैं खेतों में ऊपर नज़र उठाये हुये।
करम की कब हुई बारिश किसान भूल गये।।

तुम इन की बातों पे हर्गिज़ यक़ीन मत करना।
ये लोग वह हैं जो देकर ज़बान भूल गये।।

हमारे गांवों में ऐसे भी लोग रहते थे।
मिली हवेली तो कच्चे मकान भूल गये।।

वो ठाट बाट कहां ज़िन्दगी में है ऐ 'मयंक'।
तलाशे-रिज़्क[१] में सब आन बान भूल गये।।

---

१. रोजी रोटी की तलाश

मोम के पैकरे नाज़ुक में भी ढल सकता है।
आह में दम हो तो पत्थर भी पिघल सकता है।।

मौत का वक़्त मुक़र्रर है ये माना लेकिन।
तुम जो आ जाओ तो यह वक़्त भी टल सकता है।।

सच को क्या झूठ के अज़दाह[१] मिटा पायेंगे।
क्या अंधेरा कभी सूरज को निगल सकता है।।

ख़ुद न बदला जो बदलते हुये हालात के साथ।
उसकी फ़ितरत को भला कौन बदल सकता है।।

हों जहां जिन्से-सियासत[२] की दुकानें हर सू।
खोटा सिक्का उसी बाज़ार में चल सकता है।।

शहरे-ख़ूबां[३] में इसे साथ न लेकर चालिये।
दिल तो नादां है जहां चाहे मचल सकता है।।

जो चुभोया है रक़ीबों ने मेरे दिल में 'मयंक'।
वह जो चाहें तो ये कांटा भी निकल सकता है।।

---

१. अजगर, २. सामग्री, ३. हसीनों का शहर

मैं उनका दिवाना था वह मेरे दिवाने थे।
अपनी भी मुहब्बत के क्या ख़ूब जमाने थे।।

वह दौर भी देखा है ऐ जोशे-जुनूं[1] मैंने।
आंखों में मेरी आंसू होंटों पे तराने थे।।

जीने को तो जीते थे सब शहरे सितमगर में।
कुछ ज़िन्दा हक़ीक़त थे, कुछ मुर्दा फ़साने थे।।

क्यों बैठ गया कोई तलुवों में हिना रचकर।
पास उसके न मिलने के लाखों ही बहाने थे।।

उस शोख़ की यादों ने इस दर्जा उन्हें छेड़ा।
नासूर हुये दिल के जो ज़ख़्म पुराने थे।।

उनको भी न रख पाये पोशीदा किसी सूरत।
दुनिया की निगाहों से जो राज़ छुपाने थे।।

बीते जो 'मयंक' अपने बेफ़िक्री के आलम में।
वह दिन भी लड़कपन के क्या ख़ूब सुहाने थे।।

---

१. पागलपन का जोश

जहां मेराजे ग़म हासिल नहीं है।
वो मेरे प्यार की मंज़िल नहीं है।।

तबाही पर मेरी ऐ हंसने वाले।
तेरे पहलू में शायद दिल नहीं है।।

निगाहें मेरी अपने हाल पर हैं।
नज़र में मेरी मुस्तक़बिल नहीं है।।

हमें ख़ुद है जुनूने सरफ़रोशी।
कमाले बाज़ुए क़ातिल नहीं है।।

वफ़ाओं का सिला क्यों मांगते हो।
वफ़ाओं का कोई हासिल नहीं है।।

ज़माने की रविश पर चल के देखो।
यहां जीना कोई मुश्किल नहीं है।।

हैं नाज़ां[१] हम उसी की दोस्ती पर।
हमारे ग़म में जो शमिल नहीं है।।

'मयंक' अब दिल लगाये भी तो किससे।
कोई भी प्यार के क़ाबिल नहीं है।।

---

१. घमण्ड

करम से जो तुम्हारे दूर होंगे।
बहर सूरत बहुत रंजूर होंगे।।

इलाजे ज़ख्मे दिल करना है लाज़िम।
वगरना एक दिन नासूर होंगे।।

न लिखना हुस्न पर उनके क़सीदे।
वो पढ़कर और भी मग़रूर होंगे।।

बदल जायेगी यह कुहना रिवायत।
मुहब्बत के नये दस्तूर होंगे।।

मिलेगा जब ग़मे महबूब हमको।
निशानाते अलम काफ़ूर होंगे।।

करेंगे लोग फिर मेहनत मशक़्क़त।
हर इक मसनद पे जब मज़दूर होंगे।।

भरम रक्खेंगे सच्चाई का जो भी।
'मयंक' इस दौर के मंसूर होंगे।।

जो पहले था हमें उससे भी कुछ बेहतर बनाना है।
चले आओ कि दिल के इस खंडर को घर बनाना है।।

सभी तामीर करते हैं मकां अपने लिये लेकिन।
हमें तो खाना-ए-दिल को ख़ुदा का घर बनाना है।।

बना लो तुम जिसे चाहो अमीरे कारवां लेकिन।
ख़याले यार को अपना हमें रहबर बनाना है।।

मुक़द्दर में कहां मेहनतकशों के मख़मली गद्दे।
उन्हें ईंटों का तकिया फ़र्श को बिस्तर बनाना है।।

अगर बचना है हमको रहज़नों से राहे हस्ती में।
तो अपनी राह उनकी राह से हटकर बनाना है।।

न जायेंगे किसी दर पर बनाने आक़बत[१] अपनी।
'मयंक' अब जो बनाना है यहीं रहकर बनाना है।।

---

१. औकात

यह मयकदे की शाम है क्या सोच रहा है।
तौबा यहां हराम है क्या सोच रहा है।।

तेरे सिवाय इस पे किसी का भी हक नहीं।
यह जाम तेरे नाम है क्या सोच रहा है।।

ग़म को भुलाने साथ मेरे मयकदे में चल।
चल आज इज़्ने आम है क्या सोच रहा है।।

साग़र, सुराही, जाम सभी हैं भरे हुये।
पीने का एहतमाम है क्या सोच रहा है।।

ज़ाहिद का यह ख़याल कि है मयकशी हराम।
उसका ख़याले ख़ाम है क्या सोच रहा है।।

तलक़ीन वह भी आके सरे मयकदा हनूज़।
वाइज़ का यह भी काम है क्या सोच रहा है।।

यह मयकदा है दैरो ह़रम तो नहीं 'मयंक'।
पीने का यह मुक़ाम है क्या सोच रहा है।।

कुर्बत नसीब होगी न जिसकी कभी मुझे।
महसूस हो रही है उसी की कमी मुझे।।

इस वास्ते कुछ और है जीने की आरज़ू।
आने लगा है रास ग़मे ज़िन्दगी मुझे।।

अपनी ख़ुशी के पीछे मैं दौड़ूं तो किस लिये।
मिलती है जब सभी की ख़ुशी में ख़ुशी मुझे।।

पैकर में आदमी के मिले आदमी बहुत।
फिर भी नज़र न आया कोई आदमी मुझे।।

लिल्लाह मेरी राह न रोको ऐ वाइज़ो[१]।
आवाज़ दे रही है किसी की गली मुझे।।

रख दूं मैं इसके वास्ते ग़ैरत को दांव पर।
इतनी नहीं अज़ीज़ मेरी ज़िन्दगी मुझे।।

जारी रही जो यूंही मेरी मश्क़ ऐ 'मयंक'।
बख़्शेगी इक मुक़ाम मेरी शायरी मुझे।।

---

१. धर्म उपदेशक

शमिल जो उसकी ज़ात मेरी ज़ात में रहे।
आलम तमाम फिर तो मेरे हाथ में रहे।।

यह हौसला तो देखिये मिट्टी का इक दिया।
तूफ़ां से कह रहा है कि औक़ात में रहे।।

तर्के तअल्लुक़ात की हद तक न पहुंचे बात।
इसका ख़याल शिकवा शिकायात में रहे।।

साक़ी का और शराब का भी एहतमाम हो।
बरसात का जो लुत्फ़ है, बरसात में रहे।।

तलक़ीन का ये तौर मुनासिब नहीं जनाब।
हर इक क़दम पे शेख़े हरम साथ में रहे।।

टूटे कभी न दामने आदाबे गुफ़्तगू।
इसका ख़याल अगली मुलाकात में रहे।।

अम्नों अमां की देते है तबलीग़ वो 'मयंक'।
जो लोग पेश पेश फ़सादात में रहे।।

ज़ेरे लब जब भी जाम होता है।
ज़िक्रे तौबा ह्राम होता है।।

रश्क करती है उस पे यह दुनिया।
जिसका दुनिया में नाम होता है।।

मौत की सिर्फ़ एक हिचकी से।
सारा क़िस्सा तमाम होता है।।

उसको मिलती नहीं कभी मंज़िल।
हौसला जिसका ख़ाम[१] होता है।।

जान दे दे जो दूसरों के लिये।
किससे यह नेक काम होता है।।

एहतरामन नज़र नहीं उठती।
उनसे फिर भी सलाम होता है।।

देखने वाला चाहिये ऐ 'मयंक'।
उसका जलवा तो आम होता है।।

---

१. टूटा हुआ

वह जो तिश्नाकाम बहुत है।
उसके लिये इक जाम बहुत है।।

किसको करें और किसको छोड़ें।
उम्र है कम और काम बहुत है।।

माना मैं रुसवाये जहां हूं।
लेकिन मेरा नाम बहुत है।।

अहले ख़ुदी की ख़ुद्दारी पर।
छोटा सा इल्ज़ाम बहुत है।।

महफ़िल महफ़िल किसी के चर्चे।
और कोई गुमनाम बहुत है।।

कम कहता हूं कम लिखता हूं।
फिर भी मेरा नाम बहुत है।।

दर्दे जुदाई देने वाले।
तेरा यह इनआम बहुत है।।

उसकी दीद के सब हैं तालिब।
जिसका जलवा आम बहुत है।।

क़ैद है जुल्फ़ेयार में जब से।
दिल को 'मयंक' आराम बहुत है।।

हिचकियां ले के न रो क़ब्र पे रोने वाले।
जाग जायें न कहीं चैन से सोने वाले।।

नाख़ुदाओं पे यक़ीं सोच समझकर करना।
ला के साहिल पे डुबो देंगे डुबोने वाले।।

फ़स्ले नौ तल्ख़ न होगी तो भला क्या होगी।
ज़हर के बीज अगर बोयेंगे बोने वाले।।

खूं का हर दाग़ मेरे क़त्ल का शहिद होगा।
लाख दामन से लहू धो मेरा धोने वाले।।

क्या मिलेगा तुझे ज़रदार से नफ़रत के सिवा।
पैरहन अपना पसीने में भिगोने वाले।।

महफ़िले ऐश की क्यों देता है दावत हमको।
सर पे तन्हाई का हम बोझ हैं ढोने वाले।।

कृष्ण की राधा से कह दो कि ज़माने में 'मयंक'।
अब तो अंदाज़ कहां श्याम सलोने वाले।।

मत किसी का बुरा कीजिये।
हो सके तो भला कीजिये।।

है मरज़ इश्क का लादवा।
मेरे हक़ में दुआ कीजिये।।

यह रवायत भी क्या ख़ूब है।
बेवफ़ा से वफ़ा कीजिये।।

लोग जिसको मिसाली कहें।
कोई ऐसी ख़ता कीजिये।।

अक़्ल को दख़्ल देने न दें।
दिल कहे वह कहा कीजिये।।

साफ़गोई बजा है मगर।
क्यों किसी को ख़फा कीजिये।।

जो लगाये बुझाये 'मयंक'।
उससे बचकर रहा कीजिये।।

अपने ज़ब्ते ग़म को रुसवा चार सू मत कीजिये।
चार दिन की ज़िन्दगी है हाय हू मत कीजिये।।

बज़्मे रिन्दां में ऐ ज़ाहिद कीजिये रिन्दी की बात।
ज़ुहदो-तक़वा[१] पर ख़ुदारा गुफ़्तगू मत कीजिये।।

हो न जाऊं जिसको सुनकर और भी मग़रूर मैं।
यूं मेरी तारीफ़ मेरे रुबरू मत कीजिये।।

कौन जाने कब बदल जाये बहारों का मिज़ाज।
एतबारे गुलसिताने रंगो बू मत कीजिये।।

यूं ही रहने दीजिये जेबो गरेबां चाक चाक।
दस्ते-वहशत[२] कब बहक जाये रफ़ू मत कीजिये।।

लाख सींचे जायें लेकिन फूल फल सकते नहीं।
ख़ारज़ारों के लिये ज़ाया लहू मत कीजिये।।

रहिये ज़िन्दा ऐ 'मयंक' इस दौरे पुर आशोब में।
चैन से जीने की लेकिन आरज़ू मत कीजिये।।

---

१. परहेजगारी, २. दीवानगी का हाथ

तुम से क्या रस्मो-राह[१] कर बैठे।
अपनी दुनिया तबाह कर बैठे।।

अपना मक़सद था सुन्नते-आदम[२]।
इसलिये हम गुनाह कर बैठे।।

चाहतों के जहान में हम भी।
तुमसे मिलने की चाह कर बैठे।।

देखकर उनके हुस्ने रंगीं को।
लोग सब वाह वाह कर बैठे।।

हाथ आया न कुछ मुहब्बत में।
यह गुनह ख़्वामख़्वाह कर बैठे।।

जब्र वालों की अंजुमन में 'मयंक'।
शिद्दते-ग़म[३] से आह कर बैठे।।

---

१. तालुकात, २. आदम की पैरवी करना
३. बहुत अधिक ग़म

अब दिमाग़ आसमानों में है।
पांव लेकिन ढलानों में है।।

क़ैद अब भी मता-ए-वतन।
सिर्फ़ कुछ ख़ानदानों में है।।

हर नफ़स इक न इक मसअला।
ज़िन्दगी इम्तहानों में है।।

बालो पर जिसके अपने नहीं।
वह भी ऊंची उड़ानों में है।।

जिनके ताबे है माहे[१] मुबीं[२]।
रोशनी उन मकानों में है।।

आजकल अस्मते ज़िन्दगी।
ऊंची ऊंची दुकानों में है।।

सांस लेना भी मुश्किल है अब।
वह घुटन आशियानों में है।।

होशमंदों की सफ़ में था जो।
वह भी शामिल दिवानों में है।।

ढूंढते हो जिसे तुम 'मयंक'।
वह हक़ीकत फ़सानों में है।।

१.-२. पूर्णमासी का चन्द्रमा

पहले मिला के मुझसे नज़र बात कीजिये।
फिर उसके बाद शिकवा शिकायात कीजिये।।

होगी ज़रूर अपनी मुहब्बत भी कामयाब।
लेकर ख़ुदा का नाम शुरूआत कीजिये।।

हर लम्हा यूं न बैठिये हाथों पे धर के हाथ।
बर्बाद यूं न ज़ीस्त के हालात कीजिये।।

सैलाबे ग़म में डूब के मिट जायेगी हयात।
आंखों से यूं न अश्कों की बरसात कीजिये।।

हां मानता हूं मैं हूं गुनहगार आपका।
जो चाहे वह सलूक मेरे साथ कीजिये।।

कब तक वफ़ा की लाश को ढोते रहेंगे आप।
चलिये रविश[१] पे दुनिया की और घात कीजिये।।

हासिल[२] यही है प्यार का ऐ हज़रते 'मयंक'।
करवट बदल बदल के बसर रात कीजिये।।

---

१. रास्ता, २. नतीजा

रंजो ग़म हमारे हैं और ख़ुशी तुम्हारी है।
हम तो यूंही जीते हैं ज़िन्दगी तुम्हारी है।।

दोस्ती ग़ज़ब की थी पहले दैरो काबा में।
वह सदी हमारी थी यह सदी तुम्हारी है।।

कौन काम आया है कौन काम आयेगा।
हर किसी से दुनिया में दुश्मनी तुम्हारी है।।

किस क़दर निराला है खेल यह मुहब्बत का।
चित्त भी तुम्हारी है पट्ट भी तुम्हारी है।।

अपनी ज़िन्दगी पर भी कुछ नहीं है हक़ अपना।
कल भी यह तुम्हारी थी आज भी तुम्हारी है।।

तुमसे ही मुनव्वर[१] है इस जहां का हर ज़र्रा।
चांद और सूरज में रोशनी तुम्हारी है।।

आशिक़ी के बारे में तज्रबा है क्या तुमको।
मौज और मस्ती की उम्र अभी तुम्हारी है।।

लाख रंग भरता हूं रंग पर नहीं आती।
इसलिये कि महफ़िल में इक कमी तुम्हारी है।।

शोहरतों की मंज़िल पर पहुंचोगे 'मयंक' इक दिन।
फ़िक्रो फ़न से वाबस्ता शायरी तुम्हारी है।।

---

१. ज्योर्तिमय, प्रकाशित

मेरे आंसू गरचे मेरी दास्तां कहते रहे।
कहने वाले फिर भी मुझको बेज़बां कहते रहे।।

और कुछ कहने की फुर्सत ज़िन्दगी ने दी कहां।
उम्र भर हम अपने ग़म की दास्तां कहते रहे।।

कर दिया बर्बाद जिस की मेहरबानी ने हमें।
हम उसी नामेहरबां को मेहरबां कहते रहे।।

जिनके दम से थी बहुत महफ़ूज शाख़े आशियां।
हम उन्हीं तिनकों को अपना आशियां कहते रहे।।

जिसने ख़ुद लूटा सरे मंज़िल हमारा कारवां।
हम उसी को अपना मीरे कारवां कहते रहे।।

जिसकी मिट्टी ने हमारे जिस्म को बख़्शी जिला[१]।
उम्र भर हम उस ज़मीं को आसमां कहते रहे।।

ख़ाना-ए-दिल में हमारे जो मकीं है ऐ 'मयंक'।
तौबा तौबा हम उसी को लामकां[२] कहते रहे।।

---

१. चमक, २. बेघर

जिनको डर है दाग़ चेहरे के नज़र आ जायेंगे।
आइनों के शहर में जाते हुये घबरायेंगे।।

हर बुरे आग़ाज़ का अंजाम होता है बुरा।
इक न इक दिन वह किये की ख़ुद सज़ा पा जायेंगे।।

है हरीफ़ अपना ज़माना और मुख़ालिफ़ है फ़िज़ा।
ज़िन्दगी तेरे लिये किस किस से हम टकरायेंगे।।

डाल रक्खे हैं अना[१] ने पर्दे अक़्लो होश पर।
जो समझकर भी न समझे उसको क्या समझायेंगे।।

ज़ुल्म ढाने के लिये कुछ ख़ास दिल मख़्सूस हैं।
जो तड़पना जानते हैं उनको ही तड़पायेंगे।।

तोड़कर जो अहदो पैमां हो गये गोशा-नशीं[२]।
आ के किस मुंह से वो हमको अपना मुंह दिखलाऐंगे।।

ठोकरें खाते हुये हमको ज़माना हो गया।
और कितने दिन तेरी राहों में ठोकर खायेंगे।।

जब हमारी भी नीयत भर जायेगी शेख़े हरम।
आप ही की तरह हम भी पारसा हो जायेंगे।।

मत सुनाओं अपनी रुदादे अलम उनको 'मयंक'।
सुनके वह भी तीर दिल पर तंज़ के बरसायेंगे।।

---

१. खुदी, २. कोने में बैठना

हम जो गुल फ़रोशों को तख़्त पर बिठा देंगे।
यह चमन की अज़मत को ख़ाक में मिला देंगे।।

आँधियों के झोंकों को रोशनी से ज़िद सी है।
शम्अ हम जलायेंगे और वह बुझा देंगे।।

मत करो उजालों की इनसे कोई फ़रमाइश।
रोशनी जो मांगोगे बस्तियां जला देंगे।।

उस तरफ़ के झोंके गर आ गये गुलिस्तां में।
नफ़रतों के शोलों को और भी हवा देंगे।।

क्या कहें अभी से हम आसमां नशीनों से।
क्या हमारे दिल में है एक दिन बता देंगे।।

धो रहे हैं हाथ अपने वह भी बहती गंगा में।
दूध की जो कहते थे नद्दियां बहा देंगे।।

जो 'मयंक' रहते हैं आठ दस क़दम आगे।
हम को आगे जाने का कैसे रास्ता देंगे।।

ग़म में डूबी हुई फ़िज़ा क्यों है।
चेहरा चेहरा बुझा बुझा क्यों है।।

दिन कयामत के दूर हैं फिर भी।
लब पे सबके ख़ुदा ख़ुदा क्यों है।।

हम ग़रीबों के शहर में आख़िर।
नारवा[१] बात भी रवा[२] क्यों है।।

सामने रख के आइना कोई।
ऐब औरों के देखता क्यों है।।

प्यार में दो क़दम अरे तौबा।
इतना मुश्किल ये रास्ता क्यों है।।

जिसकी आदत में है ख़फ़ा रहना।
उससे क्यों पूछिये ख़फ़ा क्यों है।।

तर्के उलफ़त के बाद भी क़ायम।
यह मुहब्बत का सिलसिला क्यों है।।

पास जिसके है नेमते दुनिया।
मेहरबां उस पे ही ख़ुदा क्यों है।।

आज को रख नज़र में अपनी 'मयंक'।
कल के बारे में सोचता क्यों है।।

---

१. जो प्रचलित न हो, २. प्रचलित

दिल की लगी को मेरी मिटाने को आ गये।
आंखों में अश्क आग बुझाने को आ गये।।

चौखट पे कारसाज़े[१] ज़माना की बदनसीब।
बिगड़ा हुआ नसीब बनाने को आ गये।।

वह जो तमाम उम्र रहे मुझ से दूर दूर।
कांधे पे मेरी लाश उठाने को आ गये।।

जो दौर था ख़िज़ां का वही दौर है हनूज़[२]।
कहने को दिन बहार के आने को आ गये।।

जिनके लिये मैं इश्क़ में दीवाना हो गया।
वह भी मेरा मज़ाक़ उड़ाने को आ गये।।

जलते ही शम्अ बज़्म में परवाने ऐ 'मयंक'।
रस्मे तअल्लुक़ात निभाने को आ गये।।

---
१. अल्लाह, २. अब भी

मतलब के सब रिश्ते नाते मतलब का याराना है।
वह जो इतनी बात न समझे पागल है दीवाना है।।

जो लिक्खा है वरक़ वरक़ पर गीता और रामायण में।
मानो तो है एक हक़ीक़त वरना फिर अफ़साना है।।

अच्छे दिनों के सब थे साथी सब से रस्मो राह मगर।
वक़्त पड़े पर किसने किसको जाना है पहचाना है।।

आपका मसकन[१] सहने गुलिस्तां आप नसीबों वाले हैं।
दीवाने की क़िस्मत में तो सहरा है वीराना है।।

अपनी रौ में निकल गये सब अपनी हद से कोसों दूर।
भूल गये यह बात परिन्दे, लौट के घर भी जाना है।।

कौन चलेगा साथ हमारे हम हैं मुफ़लिस हम नादार[२]।
जिसके हाथ में धन दौलत है उसके साथ ज़माना है।।

कल यह जाकर कहां बसेंगे इनको क्या मालूम 'मयंक'।
बंजारों की क़िस्मत में तो दर दर ठोकर खाना है।।

---

१. वेदी, बैठने की जगह, २. गरीब

जिसे कोई शिकवा शिकायत नहीं है।
ये तय है उसे तुमसे उलफ़त नहीं है।।

वो तुम हो कि हम हों या हो और कोई।
किसे ज़िन्दगी से मुहब्बत नहीं है।।

हुआ मैं जो बर्बाद मेरा मुक़द्दर।
मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है।।

ये इसरार दिल का कहूं बात दिल की।
मगर मुझको इसकी इजाज़त नहीं है।।

हमें मिल गई जो तेरे ग़म की दौलत।
किसी चीज़ की अब ज़रूरत नहीं है।।

कहो तो मैं उड़ जाऊं लेकर कफ़स[१] को।
मफ़र[२] की कोई और सूरत नहीं है।।

'मयंक' इतना क्या कम है इस ज़िन्दगी में।
कि मुझसे किसी को अदावत नहीं है।।

---

१. पिंजरा, २. छुटकारा

ऐ निगहबां यह बहारों का ज़माना हम से है।
गुंचा-ओ गुल का चमन में मुस्कुराना हमसे है।।

चार तिनके हमने ही लाकर चुने हैं शाख़ पर।
चार तिनकों से नहीं, यह आशियाना हमसे है।।

है हमारे दम से क़ायम इस ज़मान का वजूद।
हम नहीं है इस ज़माने से, ज़माना हमसे है।।

यूं निभाती जा रही है राहो रस्मे दोस्ती।
गर्दिशे दौरां का जैसे दोस्ताना हमसे है।।

इस तरह कुछ सुन रहे हैं दूसरों का हाले ग़म।
उनके ग़म का जैसे वाबस्ता फ़साना हमसे है।।

हुस्ने सीरत हुस्ने सूरत दोनों के क़ायल हैं हम।
उसकी जिसका इक तआर्रुफ़ ग़ायबाना हमसे है।।

जो निगाहों को भली लगती है सब की ऐ 'मयंक'।
शायरों की वह अदाये शायराना हम से है।।

आ गये हैं अब शरारे गुलसितां तक देखिये।
उड़ के यह पहुंचें न अपने आशियां तक देखिये।।

कोई बतलाओ कि लेकर अपना सर जायें कहां।
क़ातिलों की हुकमरानी है जहां तक देखिये।।

एक मुद्दत से टिकी है एक मरकज़[१] पर निगाह।
आइना उम्मीद का आख़िर कहां तक देखिये।।

मिल नहीं सकता कहीं उसकी बुलन्दी का जवाब।
झुक गया क़दमों में जिसके आसमां तक देखिये।।

रोशनी से जिनकी उरियानी झलकती है वहां।
वह अंधेरे आ गये मेरे मकां तक देखिये।।

जिसको कहने के लिये बेताब था मैं ऐ 'मयंक'।
आ गई वह बात अब उसकी ज़बां तक देखिये।।

---

१. बिन्दु

मुश्किलें पैदा करें बारीक-बीनों[1] के लिये।
यह मुनासिब तो नहीं है नुक्ताचीनों[2] के लिये।।

दूर मंज़िल और राहे शौक़ की दुश्वारियां।
यह सफ़र आसां नहीं है नाज़नीनों[3] के लिये।।

जिसके बाशिन्दे हों एख़लाक़ो मुहब्बत के अमीं।
ऐसी इक दुनिया बने पर्दा नशीनों के लिये।।

कैसे कोई रख सकेगा उनको साबित आजकल।
नामुनासिब जब फ़िज़ा है आबगीनों के लिये।।

जिनके हर पतवार पर लिक्खा ख़ुदा का नाम हो।
नाख़ुदा की क्या ज़रूरत उन सफ़ीनों के लिये।।

गो मशीनी दौर हावी आदमी पर हो गया।
आदमी फिर भी ज़रूरी है मशीनों के लिये।।

मैंने माना हुस्ने सूरत भी है लाज़िम ऐ 'मयंक'।
हुस्ने-सीरत[4] भी ज़रूरी है हसीनों के लिये।।

---

१. सूझबूझ वाले, २. ऐब निकालने वाले
३. नाज वाले, ४. दर्पण

अपने पहलू में जगह उसको ख़ुदा देता है।
नेकियां करके जो इन्सान भुला देता है।।

अपने साये में पनपने नहीं देता कमबख़्त।
नन्हें पौधों को बड़ा पेड़ दबा देता है।।

एक मरकज़[१] पे किसी को नहीं रहने देता।
वक़्त इंसान की औक़ात बता देता है।।

छीन लेता है कभी मुंह का निवाला अल्लाह।
और कभी देता है तो हद से सिवा देता है।।

पहले आंखों पे बिठाता है बड़े प्यार के साथ।
फिर वही शख़्स निगाहों से गिरा देता है।।

यूं तो देता है हर इक शख़्स वफ़ाओं का सिला।
बद्दुआ कोई मुझे, कोई दुआ देता है।।

अपने मुंसिफ़ का भी है सबसे निराला अंदाज़।
जुर्म किसका है मगर किसको सज़ा देता है।।

नाम लेता ही नहीं चैन से जीने वाला।
तुझको हर शख़्स मुसीबत में सदा देता है।।

एक हम हैं कि जो अश्कों से बुझाते हैं 'मयंक'।
एक वह है कि जो शोलों को हवा देते हैं।।

१. बिन्दू

रस्मे मुहब्बत आम बहुत है।
लेकिन यह बदनाम बहुत है।।

तेरी ज़ुल्फ़ों के साये में।
चैन बहुत आराम बहुत है।।

कैसे पूरा कर ले कोई।
उम्र है कम और काम बहुत हैं।।

माना तुम हो शोहरत वाले।
मेरा भी तो नाम बहुत है।।

क्या जाने क्यों ज़ाहिद[१] तुमको।
फिक्रे ग़मे-अय्याम बहुत है।।

तेरी निगाहों के मैं सदक़े।
मुझको एक ही जाम बहुत हैं।।

जाम अभी मत 'मयंक' उठाओ।
दूर अभी तो शाम बहुत है।।

---

१. परहेजगार

दोस्तों की दोस्ती का ज़िक्र चलने दीजिये।
आस्तीं में सांप पलते हैं तो पलने दीजिये।।

आप ज़हमत मत उठायें ख़ुद ब ख़ुद बुझ जायेंगे।
चार दिन के हम दिये हैं हम को जलने दीजिये।।

आप यूं ही लूटिये फ़सले बहारां के मज़े।
हाथ अरबाबे-चमन[१] मलते हैं मलने दीजिये।।

आप के दामन से उलझें, कब गवारा है मुझे।
मुझको इन गुस्ताख़ कांटों को कुचलने दीजिये।।

रफ़्ता रफ़्ता छोड़ देंगे ख़ुद ही वह बैसाखियां।
अपने पैरों पर उन्हें कुछ दूर चलने दीजिये।।

रुख़ किये महलों की जानिब एक मुद्दत हो गई।
ज़ाविया सूरज को अपना अब बदलने दीजिये।।

आपको तन्हा न छोड़ूंगा ग़मों की धूप में।
आपका साया हूं अपने साथ चलने दीजिये।।

कब तलक डाले रहेंगे रुख़ पे ज़ुल्फ़ों की नक़ाब।
बदलियों से चांद को बाहर निकलने दीजिये।।

फिर उठाऊंगा क़दम मैं जानिबे मंज़िल 'मयंक'।
ठोकरें खाकर मुझे पहले संभलने दीजिये।।

---

१. चमन के लोग

मेरे आंसू अपनी पलकों पर सजाता कौन है।
दूसरों के वास्तू ज़हमत उठाता कौन है।।

एक कठपुतली की तरह हैं तमाशाहगाह में।
नाचते हैं हम मगर हमको नचाता कौन है।।

किसके लब पर गुलसितां में है तबस्सुम की लकीर।
सिर्फ़ गुंचों के सिवा अब मुस्कुराता कौन है।।

जिसके दिल में दर्द है उसको सुनाने आये हैं।
दास्तां बेदर्द दुनिया को सुनाता कौन है।।

यूं तो जांबाज़ों की मक़तल[१] में है इक लम्बी क़तार।
देखना है सबसे पहले सर कटाता कौन है।।

वह अगर रुठे हैं तो रुठे रहें अपनी जगह।
बिन बुलाये अंजुमन में उनकी, जाता कौन है।।

चाहे तुम हो, या कि हम, या और कोई हो 'मयंक'।
बेग़रज़ क़दमों पे उसके सर झुकाता कौन है।।

---

१. क़त्लगाह

वरक़ वरक़ पे अदब के निशान छोड़ गये।
जनाबे 'मीर' भी कैसी ज़बान छोड़ गये।।

ज़मीन छोड़ गये आसमान छोड़ गये।
जब आई मौत तो सारा जहान छोड़ गये।।

हमारे गांव में ऐसे भी लोग रहते थे।
मिली हवेली तो कच्चा मकान छोड़ गये।।

अभी भी उनकी सदा गूंजती है कानों में।
सदाक़तों का जो अपने बयान छोड़ गये।।

ब फ़ैज़े आबला[१] पाई रहे मुहब्बत में।
क़दम क़दम पे हम अपने निशान छोड़ गये।।

चमन के वास्ते हम अपनी जान दे देंगे।
वो और होंगे कि जो गुलसितान छोड़ गये।।

गिरानी होगी हमें नफ़रतों की वह दीवार।
उदू[२] जो मेरे तेरे दरमियान छोड़ गये।।

मैं उनके वास्ते कुछ भी तो कर नहीं पाया।
जो मेरे वास्ते दुनिया जहान छोड़ गये।।

उन्हीं के नक़्शे कदम पर चलेंगे हम भी 'मयंक'।
जो चाहतों की यहां दास्तान छोड़ गये।।

१. छाले, २. दुश्मन

होगी नसीब होगी किसी दिन ख़ुशी मुझे।
देती रही फ़रेब यही ज़िन्दगी मुझे।।

यूं अजनबी की तरह गुज़रती है पास से।
जैसे कि जानती ही नहीं है ख़ुशी मुझे।।

जो ख़िज्रे-रह[१] के नाम से मशहूर हो गया।
कल मिल गया था राह में वह आदमी मुझे।।

कहते हैं जिसको प्यार में मेराज[२] इश्क़ की।
लाई है उस मुक़ाम पे दीवानगी मुझे।।

हंसते हैं लोग मुझ पे तो इस में बुरा है क्या।
आती है अपने हाल पे ख़ुद ही हंसी मुझे।।

सहने चमन में एक गुलेतर के वास्ते।
दुनिया से मोल लेनी पड़ी दुश्मनी मुझे।।

किसका हयातो[३] मौत पे है ज़ोर ऐ 'मयंक'।
लाई हयात और क़ज़ा ले चली मुझे।।

---

१. रास्ता दिखाने वाला, २. बुलन्दी, ३. ज़िन्दगी

अलग रहना उसे मंजूर क्यों है।
खुदा मालूम मुझसे दूर क्यों है।।

ये मुख़्तारे जहां से कोई पूछे।
कि इंसा इस क़दर मजबूर क्यों है।।

हज़ारों इन्क़लाब आये हैं लेकिन।
मुहब्बत का वही दस्तूर क्यों है।।

जवानी चांदनी है चार दिन की।
वो अपने हुस्न पर मग़रूर क्यों है।।

उतर जायेगा इक झटके में नश्शा।
वो दौलत के नशे में चूर क्यों है।।

वहां हर रुख़ पे ताबांनी है लेकिन।
हर इक चेहरा यहां बेनूर क्यों है।।

'मयंक' इतना मसीहाओं से पूछो।
हर इक ज़ख़्मे जिगर नासूर क्यों है।।

ये ऊंचाइयां तूने पाईं कहां से।
ज़मीं पूछती है सवाल आसमां से।।

मुहब्बत ने तेरी वो चक्कर चलाया।
वहीं आ गये फिर चले थे जहां से।।

वही इम्तिहां मेरा लेने चले हैं।
जो गुज़रे नहीं हैं किसी इम्तिहां से।।

सुकूं इसमें रहके न पाया कभी भी।
मुहब्बत है फिर भी हमें आशियां से।।

पसे-मर्ग[1] आये हैं पुर्सिश की मेरी।
तुझे ज़िन्दगी अब मैं लाऊं कहां से।।

कहे शौक़ से वेवफ़ा उनको दुनिया।
मगर हम कहें क्यों ये अपनी ज़बां से।।

'मयंक' आप ही इसके आशिक़ नहीं हैं।
मुहब्बत है हमको भी उर्दू ज़बां से।।

---

१. मौत के बाद

आ गये फिर दिल दुखाने के लिये।
तोहमतें झूठी लगाने के लिये।

है सलामत उनका ग़म ऐ ख़िज़्रं-रह
रास्ता हमको दिखाने के लिये।

चुन रहे हैं चार तिनके आज भी।
आशियां अपना बनाने के लिये।।

जिसने छीनी मुस्कुराहट अब वही।
कह रहा है मुस्कुराने के लिये।।

एक पत्थर का कलेजा चाहिये।
दोस्ती उससे निभाने के लिये।।

जा रहे हो जिसने तुम को ग़म दिया।
हाले दिल अपना सुनाने के लिये।।

कर लिया सब कुछ तो अपने वास्ते।
कीजिये कुछ तो ज़माने के लिये।।

ग़म अगर अपना छुपाना है तो फिर।
मुस्कुराओ मुस्कुराने के लिये।।

दीप अश्कों के जलाओ ऐ 'मयंक'।
जश्ने दीवाली मनाने के लिये।।

---

१. रास्ता दिखाने वाला

जिसे तेरी निगाहों का मयस्सर जाम हो जाये।
मुझे पूरा यकीं है वह उमर ख़य्याम हो जाये।।

हमें मालूम है आंखों में अपनी डाल कर काजल।
जिधर से भी निकल जायें वो क़त्ले आम हो जाये।।

तुम्हारे साथ फिर पीने पिलाने का मज़ा लूंगा।
ज़रा यह धूप ढल जाये सुनहरी शाम हो जाये।।

हसीं फूलों के तन वाले हसीं फूलों के मन वाले।
नज़र जिस पर पड़े तेरी वही बदनाम हो जाये।।

मुहब्बत को छुपाना है तो ख़्वाबों में चले आओ।
तुम्हारी बात रह जाये हमारा काम हो जाये।।

यही मेरी तमन्ना है यही कोशिश है अब मेरी।
मुहब्बत का चलन सारे जहां में आम हो जाये।।

'मयंक' इन पर यक़ीं करने से पहले ध्यान यह रखना।
कहीं हावी न तुम पर गर्दिशे ऐयाम हो जाये।।

मेरी नज़रों को ऐसी रसाई[१] न दे।
सामने तू रहे और दिखाई न दे।।

मेरे घर तक रहें मेरी रुसवाइयां।
ऐ मुहब्बत मुझे जग हंसाई न दे।।

ऐसे बेटे के होने से क्या फ़ायदा।
अपनी मां को जो लाकर कमाई न दे।।

चैन से हूं मैं तर्के मुहब्बत के बाद।
फिर मुहब्बत की मुझको दुहाई न दे।।

पेश करना सबूत उसके इजलास में।
हर जगह जाके अपनी सफ़ाई न दे।।

मय गुसारी को आये हैं शेख़िहरम।
जाम उठाने मगर पारसाई न दे।।

हर बला से क़फ़स में, मैं महफ़ूज़ हूं।
मेरे सय्याद मुझको रिहाई न दे।।

आजकल ऐसे नक्क़ारख़ाने में हूं।
ख़ुद सदा मुझको अपनी सुनाई न दे।।

ऐ 'मयंक' ऐसी आंखों से क्या फ़ायदा।
देखना जिसको चाहूं दिखाई न दे।।

---
१. पहुँच

मिटेंगे फ़ासले कब दरमियां से।
ये धरती पूछती है आसमां से।।

कोई पूछे तो मीरे कारवां से।
कि मंज़िल दूर है कितनी यहां से।।

मिले अम्नो अमां मुझको कहां से।
अदावत बर्क़ को है आशियां से।।

हमारा इम्तिहां लेकर तो देखें।
डराते हैं जो हमको इम्तिहां से।।

तुम्हीं यह फ़ैसला करके बता दो।
सुनायें दास्तां तुमको कहां से।।

किसी ने कान उन के भर दिये हैं।
नज़र आते हैं वह भी बदगुमां से।।

वही मुजरिम है जो है आज मुंसिफ़।
ये बिल्कुल साफ़ है मेरे बयां से।।

समर वाले शजर घर में नहीं हैं।
तो पत्थर सहने में आये कहां से।।

'मयंक' उनको ज़माना जानता है।
वो क्या हैं क्यो कहूं अपनी ज़बां से।।

अश्क बहते हैं तो बहने दीजिये।
हाले ग़म इनको भी कहने दीजिये।।

मत बिठायें अपनी पलकों पर मुझे।
अपने क़दमों ही में रहने दीजिये।।

छीनिये मत मेरे होंटो की हंसी।
हर सितम हंस हंस के सहने दीजिये।।

काटकर रख दें ज़बां, पहले मगर।
कहने जो आया हूं कहने दीजिये।।

इश्क़ में जो हैं बराबर के शरीक।
कुछ सितम उनको भी सहने दीजिये।।

मैं चलूं बैसाखियों पर आपकी।
यह इनायत मुझ पे रहने दीजिये।।

रुख़ हवाओं का बदलिये मत 'मयंक'।
रेत की दीवार ढहने दीजिये।।

दर्द दिल से जुदा न हो जाये।
ज़िन्दगी बे मज़ा न हो जाये।।

आदमी के सुलूके बेजा से।
आदमीयत फ़ना न हो जाये।।

मरने देगी न ज़िन्दगी जब तक।
कर्ज़ इसका अदा न हो जाये।।

मुझको डर है शुरु-ए-उलफ़त में।
इब्तिदा[१] इन्तिहा[२] न हो जाये।।

देखकर मेरी मुस्कुराहट को।
कोई मुझसे ख़फ़ा न हो जाये।।

ख़ुदग़रज को ये फ़िक्र रहती है।
दूसरों का भला न हो जाये।।

दूसरों का भला बजा लेकिन।
मेरे हक़ में बुरा न हो जाये।।

रंग दुनिया का देख के ऐ 'मयंक'।
बावफ़ा बेवफ़ा न हो जाये।।

---

१. शुरूआत, २. अति

सारी दुनिया को जो तीरगी दे गये।
वह अंधेरे मुझे रोशनी दे गये।।

उनका अंदाज़े चारागरी देखिये।
मेरा ग़म ले गये और ख़ुशी दे गये।।

जानते थे हमें कुछ मिलेगा नहीं।
फिर भी दर पर तेरे हाज़िरी दे गये।।

यूं तो शबनम ने आंसू बहाये मगर।
गुंचा-ओ-गुल को इक ताज़गी दे गये।।

ले गये छीनकर मेरा सब्रो सुकूं।
मुस्तक़िल मुझको दर्दे-सरी[१] दे गये।।

और क्या नज़्र करते वो तुझको वतन।
देने वाले तुझे ज़िन्दगी दे गये।।

उन ख़यालों का मशकूर हूं मैं 'मयंक'।
जो ज़बां को मेरी चाशनी दे गये।।

---

१. सर का दर्द

कौन जीता है यहां अपनी ख़ुशी के वास्ते।
जी रहे हैं ज़िन्दगी हम ज़िन्दगी के वास्ते।।

दिल्लगी ही दिल्लगी में तोड़ मत देना इसे।
दिल तुम्हें हमने दिया है दिल्लगी के वास्ते।।

ख़ुद ब ख़ुद उगते नहीं हैं ज़िन्दगी की राह में।
आदमी बोता है कांटे आदमी के वास्ते।।

दूर रहकर दोस्ती परवान चढ़ती है कहां।
क़ुरबतें भी हैं ज़रूरी दोस्ती के वास्ते।।

क़ैद कोई भी नहीं है धर्म की ईमान की।
मयकदे का दर खुला है हर किसी के वास्ते।।

प्यार में बख़्शा है जिसने मुझको जीने का शऊर।
ज़िन्दगी में वक़्फ़[1] कर दूंगा उसी के वास्ते।।

गर हमें तौफ़ीक़ देता देने वाला ऐ 'मयंक'।
हम भी इक सूरज उगाते रोशनी के वास्ते।।

---

१. सौंपना

न अपनों के क़रीं रहिये न ग़ैरों के क़रीं रहिये।
मयस्सर हो जहां दिल को सुकूं जाकर वहीं रहिये।।

तक़ाज़ा वक़्त का है छोड़ दें अब कूचाए जानां।
मगर दिल है कि कहता है बहरसूरत यहीं रहिये।।

न होगी अंजुमन सूनी किसी की रोज़े महशर तक।
उसे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि रहिये या नहीं रहिये।।

पता खुद देगी बढ़कर आपका जलवों की ताबानी।
निगाहें ढूंढ लेंगी आपको चाहे कहीं रहिये।।

यही सिखला रहा है आपको दौरे सियासत क्या।
हमारी आस्तीं में बन के मारे-आस्तीं[१] रहिये।।

ज़माना वह नहीं है आजकल जो था कभी पहले।
मुनासिब है कि अपने घर में ही गोशा[२] नशीं रहिये।।

'मयंक' उनकी निगाहे लुत्फ़ होगी आप पर इक दिन।
झुकाये उनकी चौखट पर यूं ही अपनी जबीं रहिये।।

---

१. आस्तीन का सांप, २. कोने में बैठने वाला

वह जो बनने संवरने लगे।
आइने रक़्स करने लगे।।

पानी पानी हुई कहकशां।
जब भी वह मांग भरने लगे।।

दहशतों का वो आलम कि हम।
अपने साये से डरने लगे।।

फिर मुहब्बत ने अंगड़ाई ली।
हादसे फिर गुज़रने लगे।।

उसने की फिर नमक-पाशियां[१]।
ज़ख़्म जब दिल के भरने लगे।।

वह तअस्सुब का तूफ़ां उठा।
लोग बेमौत मरने लगे।।

मेरे क़ातिल मेरे क़त्ल का।
मुझ पे इल्ज़ाम धरने लगे।।

आईना तो नहीं थे मगर।
टूट कर हम बिखरने लगे।

बात वाले थे जो भी 'मयंक'।
बात कह कर मुकरने लगे।।

१. नमक छिड़कने वाला

मुख़ालिफ़ दौरे हाज़िर की हवा है।
चिरागे़ ज़ीस्त फिर भी जल रहा है।।

जिन्हें औक़ात का मतलब सिखाया।
वो कहते हैं तेरी औक़ात क्या है।।

न हल होगा कभी तुमसे ये वाइज़।
निगाहो दिल का हज़रत मसअला है।।

करम फ़रमाइय हम पर भी एक दिन।
जहां वालो! हमारा भी ख़ुदा है।।

है लहजा तो बहुत ही सख़्त उसका।
मगर वह आदमी दिल का भला है।।

मुझे कहती है क्यों दीवाना दुनिया।
कोई बतलाओ मुझको क्या हुआ है।।

उसूलों की न कीजे बात हम से।
मुहब्बत जंग में सब कुछ रवा है।।

कहां ले आई है मुझको मुहब्बत।
कोई हमदम न कोई हमनवा है।।

वो दिल लेकर करेगा बेवफ़ाई।
'मयंक' इतना तो हमको भी पता है।।

चाहत की तराज़ू पर हर लफ्ज़ को तोलेंगे।
अंदाज़े तग़ज़्ज़ुल[1] में फिर आप से बोलेंगे।।

दुनिया पे मुहब्बत का हम राज़ न खोलेंगे।
तन्हाई में हंस लेंगे तन्हाई में रो लेंगे।।

हम सुख के नहीं तेरे, दूख दर्द के साथी हैं।
अश्कों को तेरे, अपने दामन में समो लेंगे।।

मज़दूर हैं हम, हमको जब नींद सतायेगी।
अख़बार बिछा लेंगे फुटपाथ पे सो लेंगे।।

सूली पे चढ़ा दो तुम या ज़हर का प्याला दो।
जो सच के पुजारी हैं वह झूट न बोलेंगे।।

एहसास हमें होगा जब अपने गुनाहों का।
हम अश्के निदामत से दामन को भिगो लेंगे।।

रक्खेंगे क़दम अपने जो राहे तअस्सुब में।
तलवों में 'मयंक' अपने वह ख़ार चुभो लेंगे।।

---

१. ग़ज़ल का रंग

अगर अपने हाथों में कशकोल लेंगे।
तो ख़ैरात हम तुझ से अनमोल लेंगे।।

बदल जायेंगे ग़म के लम्हे ख़ुशी में।
ज़रा देर तुम से जो हंस बोल लेंगे।।

अगर प्यार से दो घड़ी साथ बैठो।
तो दिल में पड़ी हर गिरह खोल लेंगे।।

ज़माने से हम हैं ज़माना है हम से।
ज़माने से क्यों दुश्मनी मोल लेंगे।।

ख़ुलूसों वफ़ा कैसे सीखेंगे बच्चे।
अगर अपने हाथों में पिस्तोल लेंगे।।

नज़र आयेगी जब रिहाई की सूरत।
परिन्द अपने पंजों से पर खोल लेंगे।।

'मयंक' उनके आंसू गिरे जो ज़मीं पर।
तो मोती समझकर उन्हें रोल लेंगे।।

जब से उनका साथ नहीं है।
जीने में वह बात नहीं है।।

मत बांटो ख़ानो में उसको।
उसकी कोई ज़ात नहीं है।।

उसकी बज़्मे नाज़ में जाऊं।
मेरी यह औक़ात नहीं है।।

सूरज पर छाया है कुहरा।
दिन है दिन यह रात नहीं है।।

सब्र आयेगा आते आते।
घबराने की बात नहीं है।।

पलकों पर है भीड़ ग़मों की।
ख़ुशियों की बारात नहीं है।।

प्यासे खेतों की क़िस्मत में।
सावन है बरसात नहीं है।।

रिज़्क़ जो लिक्खा है क़िस्मत में।
यह कोई ख़ैरात नहीं है।।

तुम भी 'मयंक' अब हुये पराये।
जाओ कोई बात नहीं है।।

नक़ाबे रुख़ उलटकर बज़्म में आया नहीं करते।
शबाबो हुस्न पर इतना भी इतराया नहीं करते।।

समझकर भी न समझे उसको समझाया नहीं करते।
बया बन्दर के अफ़साने को दुहराया नहीं करते।।

नमाज़े आशिक़ी पढ़ते हैं दिल के आस्ताने पर।
जबीने शौक़ हम पत्थर से टकराया नहीं करते।।

लगा लो उनके ग़म को बढ़के यारो अपने सीने से।
कि घर आई हुई दौलत को ठुकराया नहीं करते।।

बहर सूरत जो ले आते हैं किश्ती अपनी साहिल पर।
वो तूफ़ां-आशना[१] तूफ़ां से घबराया नहीं करते।।

लगा लीजे उन्हें बढ़कर ख़ुदारा अपने सीने से।
जो ठुकराये हुये हैं उनको ठुकराया नहीं करते।।

समझ में आ गये जिनकी रमूज़े[२] आशिक़ी वाइज़।
मुहब्बत करने वालों को वो समझाया नहीं करते।।

ये अपने झूटे वादे आप अपने पास ही रखिये।
खिलौनों से हम अपने दिल को बहलाया नहीं करते।।

ख़तायें जो 'मयंक' अकसर किया करते हैं दानिस्ता[३]।
किये पर अपने ऐसे लोग पछताया नहीं करते।।

---

१. तूंफा का जानने वाला, २. भेद,
३. जानबूझ कर

तेरी बस्ती में लगता मन नहीं है।
यहां लोगों में अपनापन नहीं है।।

लगायें हम कहां तुलसी का पौधा।
हमारे घर में अब आंगन नहीं है।।

खिलौने तब कहां थे खेलने को।
खिलौने हैं तो अब बचपन नहीं है।।

किधर से आ रहे हैं घर में पत्थर।
पड़ोसी से मेरी अनबन नहीं है।।

जलाते हैं इसे हर साल हम सब।
मगर मरता कभी रावन नहीं है।।

धड़कने को धड़कते दिल हैं फिर भी।
दिलों में प्यार की धड़कन नहीं है।।

करो मत अपने जिस्मों की नुमाइश।
ये भारत है कोई लन्दन नहीं है।।

क्यों अपने आप से अंजान है वह।
क्या उसके हाथ में दर्पन नहीं है।।

करे तन्क़ीद[१] जो शेरों पे मेरी।
'मयंक' इतना किसी में फ़न नहीं है।।

---

१. आलोचना

नक़ाबे रुख उठाकर जब कोई पहलू बदलता है।
तो यूं लगता है जैसे सुब्हे दम सूरज निकलता है।।

पहुंच जाता है हंसता खेलता वह अपनी मंज़िल पर।
जो राहे ज़ीस्त में लेकर ख़ुदा का नाम चलता है।।

ज़रूरी है यहां पर सुन्नते आदम अदा करना।
तभी जा कर कोई इंसान के पैकर में ढलता है।।

तुम्हीं बतलाओ आख़िर झूमकर बादल किधर बरसे।
कभी यह गांव जलता है कभी वह गांव जलता है।।

बसेरा जिस पे लेते हों परिन्दे आ के रातों में।
शजर वह ही चमन में फूलता है और फलता है।।

लगाये चेहरे पर चेहरा कोई बज़्मे सियासत में।
कहीं चेहरा बदलने से किसी का दिल बदलता है।।

ये कैसा शौक़ है अहले चमन का, ऐ निगहबानो।
कोई कलियां मसलता है कोई गुंचा मसलता है।।

खिलौने दे के वादों के न मेरे दिल को बहलाओ।
कहीं ऐसे खिलौनों से किसी का दिल बहलता है।।

'मयंक' अब तुम बदलते वक़्त में ख़ुद को बदल डालो।
बहारों के दिनों में हर शजर कपड़े बदलता है।।

किसी पैमां शिकन से अहदो पैमां करके पछताये।
दिले मुज़्तर की बर्बादी का सामां करके पछताये।।

मदद मिलते ही जिन लोगों ने आंखें फेर लीं हमसे।
हम उन एहसां फ़रामोशों पे एहसां करके पछताये।।

तड़प देती थी इक तुरफ़ा सुकूं हमको मुहब्बत में।
हम अपने दर्द हाय दिल का दरमां करके पछताये।।

सुनाने को सुना तो दी कहानी जौरे बेजा की।
सरे महफ़िल मगर उनको पशेमां करके पछताये।।

परेशां देखकर उनको हुई हमको परेशानी।
तुम्हारी ज़ुल्फ़े पुरख़म को परेशां करके पछताये।।

न सोचा हमने है यह ख़ारोख़स का आशियां अपना।
बफ़ूरे[१] शौक़ में जश्ने चिराग़ां करके पछताये।।

न रास आई हमारी गुफ़्तगू फ़ितना परस्तों को।
बहारों में भी हम ज़िक्रे बहारां करके पछताये।।

नवाज़िश ऐ 'मयंक' आख़िर हुई फिर दश्ते वहशत[२] की।
जुनूं में हम रफ़ू जेबो गरेबां करके पछताये।।

---

१. जयादती, २. दीवानगी का हाथ

हमारे अश्क हमें रास्ता दिखायेंगे।
अंधेरी शब में ये जुगनू ही काम आयेंगे।

अगर न दैरो हरम हमको रास आयेंगे।
तो अपने दिल को इबादतकदा बनायेंगे।।

किसे ख़बर थी बुरे दिन भी ऐसे आयेंगे।
सफ़ीने आ के किनारे पे डूब जायेंगे।।

ज़मीन बंटने से टुकड़े अगर दिलों के हुये।
तेरा लगान भी ऐ भाई हम चुकायेंगे।।

क़बीले वालो न घबराओ वक़्त आने पर।
गिरा पसीना तुम्हारा तो ख़ूं बहायेंगे।।

ज़हर लपेट के तुम चाशनी में दो तो सही।
बड़ी ख़ुशी से तुम्हारे फ़रेब खायेंगे।।

हर एक शाख़ पे सय्याद की नज़र हो 'मयंक'।
तो फिर परिन्दे कहां आशियां बनायेंगे।।

ज़ख़्म देखे आपने वह जो मेरे तन पर लगे।
वह नहीं देखे जो मेरे जिस्म के अन्दर लगे।।

गो ज़मीं में दफ़्न हो जाना है सबको एक दिन।
काम ऐसा कीजिये जो आसमां से सर लगे।।

जो मिज़ाजे मौजे तूफ़ां से बहुत थे आशना।
वह सफ़ीने[१] ही फ़क़त आकर किनारे पर लगे।।

चाहे गुरुद्वारा हो गिरजा हो कि हों दैरो हरम।
सब के सब उस लामकानी के हमें तो घर लगे।।

सोचता हूं दुश्मनों से दोस्ती कर लूं मगर।
जो पुराने दोस्त हैं उन दोस्तों से डर लगे।।

दूर उड़कर क्या गया ख़ुद से बिछड़ कर रह गया।
जब मेरी घायल तमन्नाओं को यारो! पर लगे।।

जिनकी जानिब हो न पाईं उसकी नज़रें ऐ 'मयंक'।
उन सभी लोगों के अश्के ग़म से चेहरे तर लगे।।

---

१. बेड़ा

आपकी आमद से सारे मसअले हल हो गये।
आपको देखा तो हम ख़ुशियों से पागल हो गये।।

कल तलक जो आपकी चाहत ने बख़्शे थे मुझे।
वह सभी मंज़र मेरी आंखों से ओझल हो गये।।

रूठ कर मैं आपसे चल तो दिया था कल मगर।
दो क़दम भी चल न पाया पांव बोझल हो गये।।

क़त्ल जब भाई को भाई का गवारा हो गया।
घर के आंगन भी हमारे तब से मक़तल[1] हो गये।।

तुमसे मिलते ही मुझे एहसास यह होने लगा।
जज़्ब जैसे आज में, बीते हुये कल हो गये।।

डर गया टूटे हुये छप्पर में बेचारा ग़रीब।
आसमां पर जब कभी घनघोर बादल हो गये।।

कैकटस पर फूल आये बाग़ में जब से 'मयंक'।
रंग बिरंगी तितलियों के पंख घायल हो गये।।

---

१. क़त्लगाह

यह ज़ौक़े तजस्सुस की क्या खूब कहानी है।
तलुवों में मेरे छाले और आंखों में पानी है।।

आंसू को मेरे लेकर दामन पे ज़रा देखो।
जम जाये तो यह ख़ूं है, बह जाये तो पानी है।।

क्या कोई करे शिकवा इन ज़ोहरा जबीनों से।
दिल लेके दग़ा देना यह रीत पुरानी है।।

जिस हाल में जीते हैं उस हाल में जी लेंगे।
क्यों हमको मिटाने की ज़िद आपने ठानी है।।

समझी है न समझेगी यह बात मुहब्बत की।
क्या इससे कोई उलझे यह दुनिया दिवानी है।।

यूं खुल के न मिलिये अब पहले की तरह सबसे।
वह दौरे लड़कपन था यह दौरे जवानी है।।

क्या मैंने बिगाड़ा है दुनिया का 'मयंक' आख़िर।
जिसको भी यहां देखो वह दुश्मने जानी है।।

वो चिट्ठी में तो मुझको प्यार का पैग़ाम लिखता है।
लिफ़ाफ़े पर मगर मेरे अदू का नाम लिखता है।।

उन्हीं को मयकशी के दोस्तो आदाब आते हैं।
कि जिन रिन्दों की क़िस्मत साक़ी-ए-गुलफ़ाम लिखता है।।

उसे मालूम है, है कौन कितने ज़र्फ़ का मालिक।
वो कमज़रफो की क़िस्मत में कहां आराम लिखता है।।

सरापा जब बयां करता है तेरा कोई भी शायर।
तेरे रुख़ को सहर और गेसुओं को शाम लिखता है।।

उसे तो रोशनाई की ज़रूरत ही नहीं, जब से।
फ़साना अपने ख़ूं से आशिक़े नाकाम लिखता है।।

है ताबे इब्तिदा उसके, है ताबे इन्तिहा उसके।
वही आग़ाज़ लिखता है, वही अंजाम लिखता है।।

मज़ाके बादानोशी बढ़ गया है इस क़दर उसका।
'मयंक' अपने को अब यारो उमर ख़य्याम लिखता है।।

हाथ यारी का बढ़ाते हुए डर लगता है।
प्यार हर इक से जताते हुए डर लगता है।।

छीनकर मुझसे कहीं तोड़ न डाले ज़ालिम।
आइना उसको दिखाते हुए डर लगता है।।

मेरे घर में भी कहीं लोग न फेंकें पत्थर।
पेड़ आंगन में लगाते हुए डर लगता है।।

लोग दर पर भी तेरे आते हैं तलवार लिए।
सर को सजदे में झुकाते हुए डर लगता है।।

इश्क़ का अब तो पतंगों ने चलन छोड़ दिया।
शम्अ महफ़िल में जलाते हुए डर लगता है।।

और मग़रूर न हो जाये सितम पर अपने।
हाले ग़म उसको सुनाते हुए डर लगता है।।

कैसे पुर्सिश[१] को 'मयंक' आयेंगे वह रात गए।
जिनको ख़्वाबों में भी आते हुए डर लगता है।।

१. हाल-चाल पूछना